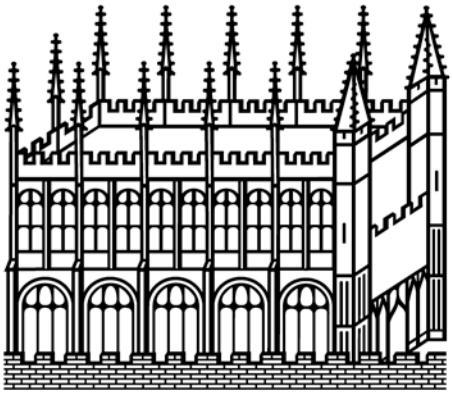

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



13.B.31. Hindi VisA 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

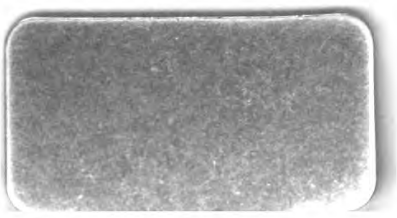



Nārībodha.

Nari Bhodh Nagri

नारीबोध

श्रीयुक्तबाबू अविनाशचन्द्र विश्वास
विरचित

लुधियाना

सं० १९३९

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

लखनऊ

एप्रिल सन् १८८३ ई० ॥

भूमिका ॥

सच्चिदानन्द परंब्रह्म की कृपा से भारतवासियों की फिर विद्या बुद्धि आदि की उन्नति में प्रवृत्ति होने लगी है । पूर्वकाल में भारत वर्ष में बड़े २ पंडित और बुद्धिमान् स्त्री हुई हैं । परंतु जबसे मुसलमानों ने भारतवर्ष में अधिकार किया। तब से यहां की उत्तम संस्कृत विद्या क्रमानुक्रम लोप होती गई। और स्त्रियों को विद्या सिखाने की रीति उठगई । अब जो कोई स्त्रियों को लिखना पढ़ना सिखाता है उसे लोग बुरा भला कहने लगतेहैं। और कहते हैं कि स्त्रियों को लिखा पढ़ाकर क्या नौकरी करानी है । परंतु विद्या सिखाने से स्त्रियों की कौनसी हानि होती है यह कोई नहीं बता सकता । और कोई इस बात का उत्तर नहीं दे सकता कि यदि स्त्रियों को विद्या सिखाना शास्त्र विरुद्ध होता तो पहले समय के ऋषि, देव, राजकन्याओंको क्यों सिखाते। विद्या कदाचित् ऐसी सामग्री नहीं कि उसके अनुशीलन से किसी की हानिहो । वरंच विद्या ऐसा अमूल्य रत्न है कि उसके लाभ करने से क्या मनुष्य क्या स्त्री ज्ञान को प्राप्त होकर अज्ञान रूप समुद्र से पार होकर जीवन मुक्त हो जाते हैं। हमारे बड़े सौभाग्य हैं कि भारत वासियों के मन में ऐसी हितकारी बात फिर उत्पन्न हुई। यह मति उनकी बड़ी उत्तम है और धन्यबाद के योग्य है । स्त्रियों को विद्या सिखाना बहुत आवश्यक है । क्योंकि स्त्री गण विद्या न जानने के कारण संसार के कई कार्य्य उत्तम प्रकार से नहीं कर सकते । और अज्ञानता के कारण बहुत से ऐसे कार्य्य

कर डालते हैं कि जो ज्ञान होने से कदाचित् न करते। परंतु हिंदु कन्याओं को विदेशी भाषाओं में शिक्षा देने की कुछ आवश्यकता नहीं। क्योंकि हमारी स्त्रियां और देश की न्याईं कुछ चाकरी करने के निमित्त नहीं पढ़तीं। केवल ज्ञान और धर्म्म कर्म्म में बोध होने के कारण और सच्चरित्रों के सीखने के लिये पढ़ती हैं। इस कारण उनको अपनी ही भाषा में विद्या सीखनी उचित है। परंतु भाषा में आज कल स्त्रियों के पढ़ने योग्य पुस्तक बहुत कम हैं। जो पुस्तक भाषा में प्राप्त हो सक्ती है अधिक अंश काव्य और शृङ्गार रस में घटित हैं। जैसे बारह मास आदि ऐसे पुस्तकों के पढ़ने से धर्म्म और सच्चरित्र और ज्ञान आदि की प्रवृत्ति नहीं होती केवल प्रेमरस आदि दुर्वृत्तियों में मन निवेश हो कर विद्या अनुशीलन का सारा परिश्रम विफल हो जाता है। और कुछ ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। बरंच स्त्रियोंके चरित्र आदि भी कुछ अच्छे नहीं रहते। इसी कारण बहुत परिश्रम करके नारीबोध नाम पुस्तक का अधिकांश बहुत सी भाषाओं की पुस्तकों से अनुवाद और संगृहीत करके और अधिकांश अपनी बुद्धि से रचना किया॥

प्रथम अध्याय गद्य॥

इस में प्रथम छोटे छोटे शब्द और फिर छोटे छोटे वचन और फिर नीतिबोधक छोटे २ उपाख्यान और फिर बड़े बड़े नीतिबोधक उपाख्यान क्रमानुक्रम कठिन भाषा में लिखे गये। शेष के दोनों पाठ अर्थात् सीताजी और भवानी जी के वृत्तान्त में कठिन २ शब्द प्रयोग कियेगये। और सीताजी के वृत्तांत में सारी रामायण का संक्षेप वृत्तान्त लिखागया। और भवानी रानी के सच्चरित्र दृष्टान्त के लिये लिखे गये। इस अंश के पढ़ने से एक तो नारियों को पढ़ने का अभ्यास होगा। और उसकी नीति सीख-

कर अपने चरित्र सुधारसकेंगी। इस में एक अक्षरभी ऐसा नहीं लिखागया जो शृंगाररस घटित अथवा अश्लीलहो और स्त्रियों के पढ़ने के योग्य न हो ॥

द्वितीय अध्यायपद्य ॥

इसमें कई पुस्तकों से अच्छे २ नीतिबोधक पद्य संगृहीत करके लिखेगये और भागवत और रामायणकाभी कुछ २ अंश लिखागया इस अंशमें प्रेम शृंगार रस घटित बचन आदि बड़ी सावधानता से छोड़ दियेगये ॥

तृतीय अध्यायपत्रलिखनेकी रीति ॥

इसमें पत्र लिखने की रीति लिखीगई और नये२ औरसीधे २ उपाय बताये गये। एक पत्र में स्त्रियों के बहुत से उपदेश लिखेगये। इसमें लिखित रीति के अनुसार जिस को जी चाहे पत्र लिखसकते हैं ॥

चतुर्थ अध्याय वस्तु बिचार ॥

इसमें प्रश्न उत्तर के प्रकार से बहुतसे बस्तुओं का बिचार लिखागया और अब शेषनारीगणके चित्त अनुमोदनकेलिये कुछ बिरचित और कुछ संगृहीत पहेलियां उत्तर समेत लिखीगईं ॥

पंचम अध्याय भूगोल ॥

इसमें सब देशों का संक्षेप बर्णन जो जो जानने के योग्य है प्रश्न उत्तर के प्रकार से लिखागया ॥

षष्टम अध्याय पशुआवली ॥

इसमें कई पशुओं और कीट पक्षि आदिके आश्चर्य्य वर्णन संक्षेपकरके चित्रसहित लिखेगये हैं ॥

सप्तम अध्याय विश्वविद्या ॥

इस में पृथिवी का वृत्तान्त औरउसकी गति और चंद्रसूर्य्य का ग्रहण और भूंचाल और आकर्षण शक्ति आदिके संक्षेप और स्थूल वर्णन चित्रसहित लिखे गये ॥

अष्टम अध्याय गणित विद्या ॥

इस में गणित के चार प्रधान नियम और पहाड़े और गुर आदि जिसके जाननेसे स्त्रीगण अपना कार्य्य चला सकें और साधारण प्रश्नलिखेगये । और अवशेषज्योतिष विद्याके अनुसार यह जाननेकी रीति कि किसीके पुत्रहोगा अथवा कन्या होगी लिखी गई हैं ॥

अवकाशके कम होनेके कारण यह पुस्तक यथोचितशुद्धता से नहीं छपी । क्योंकि बहुतसे स्थान दूसरोंको शुद्ध करने के लिये देने पड़े और फिर उसको देखनेका अवकाश नहींहुआ । जो इस पुस्तक से कुछ उपकार दृष्ट हुआ तो आशा करता हूं कि दूसरीबारके छापामेंअच्छेप्रकारसेशुद्धकरकेछापीजावेगी । अब के पाठक मेरा दोष ग्रहण न करें तो मेरा परिश्रमसुफलहोगा ॥

इस पुस्तक के रचना करने में मेरेमित्र श्रीयुक्त बाबू श्यामसुन्दर और बाबू केवलराम और मुंशी जगनप्रसादने बड़ीसहायताकी उनको मैं धन्यवाद देताहूं ॥

लुधियाना
स०१८८३ ई०

श्रीअविनाशचंद्रबिश्वास ॥

इति ॥

नारीबोध

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यञ्जन

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ

स्वर मात्रा

आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ा	ि	ी	ु	ू	ृ
ऋ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ
ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो
औ	अं	अः			
ौ	ं	ः			

बारा खरी

क का कि की कु कू

के कै को कौ कं कः

ख	खा	खि	खी	खु	खू
खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू
गे	गै	गो	गौ	गं	गाः
घ	घा	घि	घी	घु	घू
घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू
चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू
छे	छै	छो	छौ	छं	छः

ज	जा	जि	जी	जु	जू
जे	जै	जो	जौ	जं	जः
क	का	कि	की	कु	कू
के	कै	को	कौ	कं	कः
ट	टा	टि	टी	टु	टू
टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू
ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू
डे	डै	डो	डौ	डं	डः

ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू
ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू
णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू
ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू
थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू
दे	दै	दो	दौ	दं	दः

ध	धा	धि	धी	धु	धू
धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू
ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू
पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू
फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू
बे	बै	बो	बौ	बं	बः

भ	भा	भि	भी	भु	भू
भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू
मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू
ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू
रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू
ले	लै	लो	लौ	लं	लः

व	वा	वि	वी	वु	वू
वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू
शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू
षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू
से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू
हे	है	हो	हौ	हं	हः

क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू

क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः

त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू

त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः

ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू

ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

दो २ व्यञ्जनोंकीमिलावट

ककक क्क कत क्क कय क्य

कख क्ख कय क्य कर क्र

कच क्च कन क्न कल क्ल

व	वा	वि	वी	वु	वू
वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू
शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू
षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू
से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू
हे	है	हो	हौ	हं	हः

क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू

क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः

त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू

त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः

ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू

ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

दो २ व्यञ्जनोंकीमिलावट

कक क्क कत क्त कय क्य

कव क्व कय क्य कर क्र

कच क्च कन क्न कल क्ल

कछ	क्छ	कम	क्म	कव	क्व
कश	क्श	गभ	ग्भ	घर	घ्र
कष	क्ष	गम	ग्म	घल	घ्ल
खय	ख्य	गर	ग्र	घव	घ्व
खर	ख्र	गल	ग्ल	ङक	ङ्क
गग	ग्ग	गद	ग्द	ङख	ङ्ख
गध	ग्ध	घय	घ्य	ङग	ङ्ग
ङघ	ङ्घ	छल	छ्ल	जज	ज्ज
चय	च्य	जय	ज्य	जझ	ज्झ
चर	च्र	जर	ज्र	टय	ट्य
चव	च्व	झर	झ्	टर	ट्र
छय	छ्य	जच	ज्च	ठव	ठ्व
छर	छ्र	जछ	ज्छ	ठय	ठ्य

ठर ठ्र णट ण्ट तन त्न
डय ड्य णठ ण्ठ तप त्प
डर ड्र णड ण्ड तफ त्फ
ढय ढ्य णढ ण्ढ तम त्म
ढर ढ्र तक त्क तय त्य
तर त्र दध द्ध धव ध्व
तव त्व दय द्य नम न्म
थय थ्य हर ह्र नय न्य
थव थ्व दव द्व नर न्र
दन द्र धम ध्म पम प्म
दम द्म धय ध्य पय प्य
पर प्र बर ब्र मप म्प
पल प्ल वय व्य मव म्व

पव	प्व	बर	ब्र	मम	म्म
पश	प्श	भम	भ्म	मय	म्य
पस	प्स	भय	भ्य	मर	म्र
फन	फ्न	भर	भ्र	मल	म्ल
यय	य्य	रप	र्प	लग	ल्ग
यव	य्व	रय	र्य	लत	ल्त
रक	र्क	रव	र्व	लद	ल्द
रच	र्च	रष	र्ष	लप	ल्प
रट	र्ट	रह	र्ह	लय	ल्य
रत	र्त	लक	ल्क	लर	ल्र
लल	ल्ल	श्च	श्च	षट	ष्ट
लव	ल्व	श्छ	श्छ	षठ	ष्ठ
लह	ल्ह	शन	श्न	षण	ष्ण

वय व्य शय श्य षय ष्य
वर व्र शर श्र सक स्क
वल व्ल शव श्व सत स्त
सय स्य सम स्म सर स्र
सव स्व हम ह्म हय ह्य
हर ह्र हव ह्व क्षण क्ष्ण
क्षम क्ष्म

१ २ ३ ४ ५ ६
७ ८ ९ १०

कज खट गज घट चक
कट खत गाठ घण चख
कफ़ खण गढ़ घन चट
कब खन गण घर चढ

कर	खर	गत	घस	चर
कल	खल	गद		चल
कश	खस	गप		
कस		गम		
कह		गफ		
	छठ	छन		छल
	छड	छत		छब
	छड़	छम		छय
	जक	कक		टण
	जग	कट		टप
	जच	कण		टल
	जट	कप		ठग
	जन	कर		ठण

जद	कल	डग
जप		डट
जब		डम
जम		डर
जल		ढक
जस		ढच
		ढब
		ढल
तक	दब	नट
तज	दम	नथ
तढ	दर	नद
तन	दल	नव
तप	दस	नभ

तब	धक	नर्
तम	धज	नस
तर्	धन	पक
तल	धप	पग
थक	धम	पच
थण	धर्	पट
थम	नख	पठ
थर्	नब	पण्
पत	बड	मच
पथ	बढ	मछ्
पद्	बन	मज
पर्	बद्	मट
पल	बध	मठ

फट	बम	मढ
फण	बर	मत
फल	बल	मथ
फस	बस	मद
बक	भज	मन
बच	भट	मम
बज	भण	मर
बट	भर	मल

यम	रल	शश	सह
रख	रस	सङ	हट
रग	रह	सब	हद
रङ	लख	सज	हम
रज	लग	सढ	हर

रद	लट	सड़	हल
रण	लभ	सन	क्षण
रथ	लस	सत	क्षत
रद्	लक्ष	सद्	क्षम
रन	शक	सध	
रब	शल	सर्	
रम	शब	सल	
काका	कागा	कादा	
काढा	काणा	काला	
खाल	खाम	खात	
खार्	खाट	खान	
गाज	गाड़	गाढ	
गाल	गात	गार्	

घाट	घात	घाम
घाल	घाव	घास
किच	किल	कीट
तीर	तिल	हीन
केला	चेला	केला
खेला	बेला	डेला
थेला	मेला	ढेला
कैसा	तैल	बैर
कोक	खोल	गोल
घोट	चोट	गौन
धौत	नौका	पौत्र
सौचि	सौध	सौत्र
कंथ	पंथ	अंग

कौतक	वृद्ध	कृष्ण
शब्द	सूर्य्य	वृष्टि
मन्त्र	विद्या	चन्द्र
पुत्र	वस्त्र	क्लेश
ग्रीष्म	तीक्ष्ण	मण्डल
लक्ष्मी	क्षत्रिय	जन्म
लक्ष्मण	वञ्चना	पण्डित
बन्धु	विश्वास	भक्ति
कार्य्य	क्रोध	आत्मा
धर्म्म	सन्तुष्ट	रामचन्द्र

१ पहिला पाठ।

हर भज। क्रोध मत कर। झूठ मत बोल। गाली मत दे। बस मत रो। सच कह। दुःख मत दे। सब मत ले। उस को दे। घर में रह। मन में सोच। मा से पूछ॥

---

२ दूसरा पाठ।

बाप मा बड़े गुरू हैं। उन की सेवा कर। बाप की बात मान। लालच मत कर। जो मिले सो खा। बजुत मत मांग। झगड़ा मत कर। चिल्ला कर मत बोल। बक२ मत कर। जो मिले सो पहिन। गहने का लालच मत कर। कपड़े बदल॥

---

३ तीसरा पाठ।

सती की पति ही गति है। पति की आज्ञा मान। जो कहे सो कर। उस से ऊंचा नीचा मत बोल। उस की निन्दा मत कर। जो दे सो ले। हिंसा मत कर। उस की बात का उलटा उत्तर मत दे॥

---

४ चौथा पाठ।

किसी के आगे किसी की निन्दा मत करो। किसी को कठोर बचन मत कहो। राम नाम लो। झूठ बोलना बड़ा पाप है। छल चातुरी मत करो। सब से अच्छा व्यवहार करो। सब

से मीठी बोलो। दया धर्म का मूल है। बीते का दुःख मत करो। कल की सोच कर चलो। अपना दुःख सब से मत कहो। मा बाप और पति का उपदेश मन देकर सुनो॥

---

५ पांचवां पाठ।

चोरी मत कर। पूछकर ले। छिपकर मत खा। मांगकर ले। काम काज कर। आस मत कर। दुःख से व्याकुल मत हो। मन में धीरज रख। बहुत लोभ मत कर। परमेश्वर सब का रखवाल है। उस को सब की चिन्ता है। दुःख सुख सदा नहीं रहते। धन द्रव्य ढलती फिरती छाया है। धन द्रव्य का गुमान मत कर। अपने रूप का अहंकार मत कर॥

---

६ छठा पाठ।

जो बहु बेटियां लोभार्थी और पेटार्थी होती हैं; अपने मा बाप और सास ननद से छिपकर अच्छी२ वस्तु खा लेती हैं, वह बड़ी निर्लज्ज और दुःशील होती हैं। उनकी सब निन्दा करते हैं। मा बाप और सास ननद सब उन्हें बुरा भला कहते हैं। जो नारी अपने मा बाप की और पति की सेवा करती है उसे सब सराहते हैं और सती और सुशील बताते हैं। बुरी चाल चलने से लोग उसे बुरी बताते हैं॥

७ सातवां पाठ।

राजा युधिष्ठिर बड़े धर्म्मात्मा थे, वह किसी को दुःख नहीं देते थे; झूठ नहीं बोलते; सब की भलाई की चेष्टा में रहते थे, इसी कारण उन को स्वर्ग बास मिला॥ श्री रामचन्द्र जी की राणी सीता देवी बड़ी सती थीं और सदा अपने पति की सेवा किया करती थीं और किसी दूसरे पुरुष की ओर दृष्टि पात नहीं करती थीं इसी कारण इस जगत में सब उन का यश गाते हैं। छोटे बड़े का आदर मान करना चाहिये॥

---

८ आठवां पाठ।

कुन्दना और रुक्मिणी नाम दो छोटी २ बालिका आपस में बड़ा प्यार रखती थीं। एक दिन कुन्दना रुक्मिणी के घर खेलने आई और वहां खेलते२ कुन्दना के पांव का कड़ा निकल पड़ा कुन्दना खेलकर घर चली गई। जब रुक्मिणी ने वह कड़ा पड़ा पाया तो झट उठाकर कुन्दना की माता के पास ले गई और कहा चाची कुन्दना यह कड़ा हमारे घर गेर आई थी, कुन्दना की मा बोली बीबी यह कड़ा तुम ही लेलो, मैं तुम्हारे से बड़ी प्रसन्न हुई, जो तुम कड़ा लेकर हमारे घर देने आई हो। रुक्मिणी बोली मैं तो नहीं लेती यह तो तुम्हारी वस्तु है। रुक्मिणी ने कड़ा नहीं लिया और बड़ी आनन्द हो घर आई, जब

रुक्मिणी की दादी ने उस की यह बात सुनी तो उस से बड़ी प्रसन्न हुई और प्यार से बोली कि बीबी तुम ने बहुत अच्छा किया जो उन की वस्तु उन को देदी, तब रुक्मिणी की दादी ने उस की गुड़ियों के लिये एक बड़ा सुन्दर पीतल का पलंग मंगवा दिया रुक्मिणी उसे लेकर बड़ी आनन्द हुई ॥

---

९ नवां पाठ ।

(चित्र संख्याः १)

किसी समय एक कुत्ता एक रोटी मुंह में लिये किसी नदी में तैर कर पार उतर रहा था । नदी के निर्मल जल में जो उस का प्रतिबिम्ब पड़ा तो कुत्ते ने जाना कि एक और कुत्ता रोटी लिये जाता है । उस के मन में यह लोभ हुआ कि उस की रोटी भी छीन लूं तो मेरे पास दो रोटी हो जावेंगी यह मन में ठान ज्यों मुंह फाड़ उस परछावें की ओर दौड़ा तों उस की रोटी भी नदी में गिर कर बह गई । कुत्ता निराश होकर लोट गया और बड़ा पछताया । इसी प्रकार लोभ करने से अपनी पूंजी भी जाती रहती है ॥

---

१० दसवां पाठ ।

एक दिन अकबर बादशाह ने अपने मंत्री बीरबर से पूछा कि "बीरबर तुम बताओ कि इस

चित्र संख्याः १ पृष्ठ २५ पाठ ९

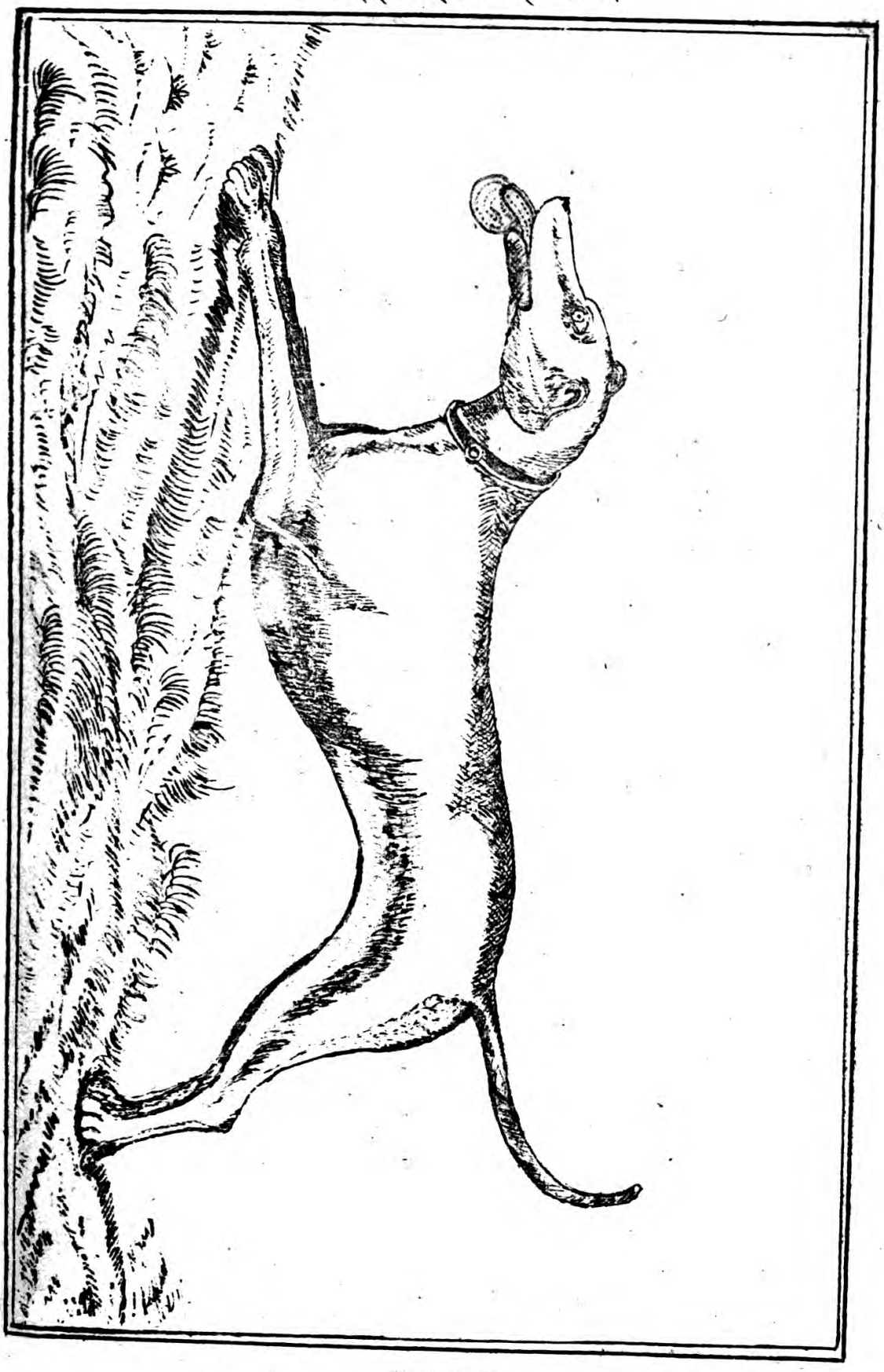

पृथ्वी में अन्धे मनुष्य अधिक हैं कि सुआंखे"? बीरबर के मुख से निकली "धर्म अवतार, अन्धे" बादशाह ने पूछा किस प्रकार? बीरबर ने कहा इस का उत्तर मैं महाराज को कल दूंगा दूसरे दिन बीरबर थोड़ासा सन् ले सभा में जा सिंहासन पर बैठ बटने लगा इतने में क़ाज़ी जी आये उन्होंने बीरबर को रस्सी बटते देखकर पूछा मंत्री जी यह क्या कर रहे हो इस प्रश्न के करते ही बीरबर ने कहा लो महाराज प्रथम तो क़ाज़ी को अन्धों में लिखो। बादशाह ने कहा क्योंकर? कहा देखिये सब को दिखाई देता है कि मैं रस्सी बट रहा हूं जो क़ाज़ी जी सुआंखे होते तो क्यों पूछते कि क्या कर रहे हो। बादशाह मंत्री का उत्तर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और उसे बड़ा पुरस्कार दिया॥

---

११ ग्यारहवां पाठ।

किसी व्याध ने एक फन्दा लगाकर एक पक्षी पकड़ा पक्षी ने अपनी मृत्यु निकट जान व्याध से कहा तू दया करके मुझे छोड़ दे तो मैं बहुत से और पक्षियों को बहका कर तेरे फन्दे में फंसा दूंगा व्याध ने कहा मैं तुझे नहीं छोड़ता क्योंकि जो अपने मंगल के कारण अपनी जाति का अनिष्ट करने को प्रस्तुत होता है उस का मरना ही अच्छा है॥

१२ बारहवां पाठ।

एक क्षत्रान के चार पांच पुत्र थे वह सदा आपस में लड़ाई रक्खा करते और उन की स्त्रियां उन्हें सदा यह समझाया करतीं कि तुम सब अलग हो जाओ। क्षत्रान ने उन्हें बहुत समझाया परंतु उस का समझाना कुछ काम न आया, उन्हों ने उस की न मानी तब क्षत्रान ने सब पुत्रों को अपने पास बुलवा कितनी एक लकड़ियों को मिला एक रस्सी से बांध उन को दी और कहा कि इस को तोड़ो सब ने बल किया पर किसी से वह गट्ठा नहीं टूटा फिर उसमें से एक एक लकड़ी अलग२ कर उनको तोड़ने को दी, सबने अपनी२ लकड़ी कटाख२ तोड़ डाली जब टूट चुकी तब क्षत्रान ने कहा कि देखो बेटों। जो तुम आपस में मिले जुले रहोगे तो कोई तुम पर अत्याचार नहीं कर सकेगा और जो तुम अलग २ होजाओगे तो अकेली लकड़ी की नाईं एक एक टूट जाओगे तब उन्हें सीख आई, सब मिल जुल बड़ी प्रीत से रहने सहने लगे और फिर कभी अपनी स्त्रियों के बहकाये में नहीं आये॥

---

१३ तेरहवां पाठ।

किसी मनुष्य के हरदेवी और शंकरदेवी नाम दो लड़कियां थीं; हरदेवी बड़ी और शंकरदेवी

छोटी बहन थीं। यह दोनों आपस में बड़ी प्रीति रखतीं और कभी झगड़ा बिवाद नहीं करती थीं एक दिन दोनों ने अपना२ पाठ अपने पिता को सुनाया उन का पाठ सुन उन का पिता बड़ा प्रसन्न हुआ उस ने दोनों को एक२ रुपया दिया। हरदेवी ने अपने रुपये के छल्ले बनवा लिये पर शंकरदेवी ने उस रुपये की कई पुस्तक मोल लीं और उन सब को पढ़कर थोड़े दिनों में गुणवती हो गई। हरदेवी अपने बनाव सिंगार में रहने लगी और लिखना पढ़ना सब भूल गई जब दोनों का विवाह हो गया तो हर देवी एक निर्धन के पाले पड़ी और शंकरदेवी गुणवती होने के कारण एक अच्छे घराने में बिवाही गई हरदेवी को अच्छे खाने और अच्छे पहिनने की लतपड़ी थी जो ससुराल में कोई बस्तु अच्छी खाने वा पीने न पाती तो बड़ी दुखी होती और रोती रहती और छोटे बड़े सब उसकी निन्दा करते और कहते यह तो बड़ी लोभी है। उस के मनमें टुक धैर्य नहीं था। शंकरदेवी अपनी विद्या के बल से सब को प्यारी लगती और कपड़े गहने का कुछ लोभ न करती और ससुराल में भी अच्छी प्रकार रात दिन मन लगाकर पढ़ती रहती और अपनी पुस्तक की अच्छी२ बातें अपनी सास ननद को सुनाती और इसी कारण वह सब उसे बड़ा प्यार करतीं और बड़ी

गुणवती सती बनातीं और वह सदा आनन्द से रहती और अपने पति की सेवा करती ॥

---

१४ चौदहवां पाठ ।

(चित्र संख्यः २)

एक सिंह ने एक मोटा सा गधा देखकर चाहा कि उस को मारकर उस का मांस खावे पर दैव की कृपा से एक कूकड़ बोल पड़ा सिंह उस का शब्द सुन विरक्त हो चला गया गधे ने जाना कि मेरे से डरकर भागा होगा इस बात का अभिमान कर सिंह को आक्रमण करने को उस के पीछे भागा सिंह ने पीछे फिरते ही एक दुहत्थड़ मारकर उस का प्राण संहार कर लिया। इसी प्रकार निर्बोध लोग अपने को बड़ा जान कर मारे जाते हैं ॥

---

१५ पंदरहवां पाठ ।

(चित्र संख्यः ३)

एक सेवक अपने स्वामी से विरक्त हो जंगल को भाग गया। जंगल में जाकर देखा कि एक वृक्ष के नीचे एक सिंह पड़ा है। और अपना पंजा ऊपर को उठा रक्खा है जब यह उस के पास गया सिंह उस से कुछ न बोला और पूंछ हिला कर ऊपर को देखने लगा तब सेवक को कुछ भरोसा पड़ा, आगे बढ़ा, देखा कि सिंह के

चित्र संख्याः २ पृष्ठ २८ पाठ १४



चित्र संख्याः ३ पृष्ठ २८ पाद १५



पांव में एक बड़ा भारी खजूर का कांटा चुभा हुआ है सेवक ने जाना कि इसी के कारण यह व्याकुल पड़ा है, उस के पास जा बैठा और धीरे से उस का पंजा अपने घुटने पर उठा लिया और उसका कांटा निकाल दिया सिंह कुछ न बोला और उस के हाथ पांव चाटने लगा। और फिर उठकर चला गया। दैवात वही सिंह एक जाल में फँस गया और भील उस सेवक के स्वामी के पास उसे पकड़ कर ले गया उसने उस सिंह को एक कोठड़ी में बन्द कर दिया और देश प्रदेश में यह प्रचार कर दिया कि सेवक जहां से मिले वहां से ले आओ। अन्त को सेवक पकड़ा गया और उसे उस के स्वामी के सन्मुख लाये। उसके स्वामी ने आज्ञा दिई कि इस को इस सिंह के अगाड़ी डाल दो, यह दो तीन दिन का भूखा है इसे निश्चय खा जायगा यह बात सुन कर नगर बासियों ने आश्चर्य माना और सब सेवक और सिंह का कौतुक देखने आये जब उस सेवक को छत के छेक में से भीतर डाला तो सिंह उस को देखतेही दहाड़ कर उस की ओर दौड़ा परन्तु वह सेवक जब धरती पर जा गिरा तब उसने उसे पहिचाना और झट पूछ हिला २ उस के हाथ पांव चाटने लगा और उसे कुछ न कहा सब लोगों ने इस बात को देख बड़ा आश्चर्य माना और उस

के स्वामी से उस का अपराध क्षमा करवा दिया। देखो! मनुष्य का ऐसा बड़ा शत्रु जो सिंह है वह भी उपकार किये हुये को न भूला इसी प्रकार किसी का उपकार किया हुआ कभी ना कभी निश्चय काम आता है॥

---

१६ सोलहवां पाठ॥

किसी नगरी में एक बड़ा धर्मात्मा राजा था उस के कोई पुत्र वा कन्या न थी। पचास वर्ष की अवस्था में उस के एक परम सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई। राजा ने आनन्द से दरिद्र और दुःखियारियों को धनदिया। और यह प्रचार करवा दिया कि महाराज के पुत्र हुआ है। कन्या का नाम रूपसिंह रक्खा और उसे सदा पुरुष के भेष में रखने लगे परंतु थोड़े दिन पीछे दूसरी रानीसे एकपुत्र भी हुआ। जबवह पांचवर्ष की हुई तो उसे विद्या सिखाई। सब लोग उसे राज पुत्रकर जानते थे। थोड़े दिनों में सब विद्याओं में उस को ऐसा बोध होगया कि सब उसे सराहने लगे। जब वह चौदह वर्ष की हुई और सब विद्या सीख चुकी तब कहीं से शत्रुओं ने आकर उस राज्य पर आक्रमण किया और युद्ध करके राजा को पराजित कर उसे बंदी कर के अपने देश में ले गये। पिता की यह गति देख कन्या बहुत व्याकुलहुई और अपनी माता की आज्ञा ले एक साधू जटाधारी का भेष धर

अपने पिताको मुक्त कराने चली। कई महीने की बाट थी परन्तु साधू ने अपने साथ कुछ न लिया। बड़े २ कष्ट उठा दूसरे महीने में उस नगरी में पहुंचा जहां राजाने उसके पिता को बन्दकर रक्खा था, नगरी में पहुंचकर यह सुना कि राजाकी यह प्रतिज्ञाहै कि जोकोईहमारी कन्या विद्यावती को विद्या के विचार में पराजित करेगा उसको यह कन्याविवाहदूंगा और वह जोमाँगेगा सो दूंगा राजाकी यह प्रतिज्ञा सुन साधू मनमें बड़ा आनन्द हुआ और नगरी के पास एक स्थान पर धूनी लगाकर बैठगया। राजा को उस साधू के आने का संवाद मिला और जो नगरी में उसके ज्ञान और विचारका चर्चा फैला तो राजा ने उसे अपनी सभा में बुलाया और उसका बड़ा आदर सन्मानकिया और पूछा कि महाराज तुम कहां से आये हो और क्या बांछा रखतेहो? मैंने सुनाहै कि आप बड़े गुणी हैं उसने कहा महाराज आप की प्रतिज्ञा सुन आपकी कन्या के पाणिग्रहण की आशाकर उतकल देशसे आयाहूं राजा ने कहा अच्छा जो मेरी कन्या तुमसे विचार में हार जायगी तो मैं उसे तुमसे विवाह दूंगा औरजो सुखसे माँगोगे सो दूंगा। राजाने कन्याको सभा में बुलवा उसका और साधूका शास्त्रार्थ करवाया राज-कन्या हार गई। और राजा को

अपना अंगीकार पूर्ण करना पड़ा। राजाने उस कन्याको उसे बिवाह दिया और फिर उससे पूछा कि अब कोई बरमांगो। साधुने कहा कि मैं उस राजाका पुत्रहूं जिसे तुमने कारारुद्ध कर रक्खाहै, और मैं साधू नहीं। अब जो आपने अंगीकार कियाहै तो मैं यह मांगताहूं कि मेरे पिताको मुक्त करदो और उससे सन्धि करलो। राजा यह बात सुन बड़ा प्रसन्न हुआ और अपनी कन्याको राजपुत्रसे व्याही गई देखकर निश्चिन्तहुआ औरअपने संबन्धीको ततक्षणात मुक्त करा अच्छे २ कपड़े पहिना बहुत सा धन दे अपनी कन्या साथ देकर बिदा कर दिया जब वह कन्या अपने पिता को मुक्त करा अपने घर आई तो राणी उससेबड़ी आनन्दहुई और उस कन्याके पीछे उसराजाके जो एक पुत्रहुआ था उसदुसरे राजा की कन्याको उसके साथ बिवाह दी। देखो विद्या कैसी कामआई औरउस कन्या ने अपने पिताकी भक्ति के कारण कितना कष्ट उठाया और उसकी यह सुशीलता देख उसके माता पिता कैसे प्रसन्न हुए॥

---

१७ सत्रहवां पाठ ॥

किसी नगरी में सूरज भान नाम एक ब्राह्मण रहा करता था । उसकी एक स्त्री परम सुन्दरी और सती थी । उस के एक पुत्र हुआ । जब वह पुत्र दोबर्ष का हुआ तो बिधि की बिड़म्बना से उस की माता काल कर गई । सूरज भान ने अपनी स्त्री का बड़ा शोक किया जब क्रिया कर्म कर चुका तब उसके भाई बान्धवों और परोसियों ने उसे समझाया कि सूरज भान तुम अभी युवा हो तुम्हारा एक यही पुत्र है तुम फिर बिवाह करलो । सूरज भान ने न माना और कहा कि मैं अब बिवाह नहीं करता जो मेरे कोई पुत्र न होता तो मैं बिवाह भी कर लेता अब जोमैं बिवाह करलूं तो मेरायह छोटा बालक दुःखी होगा और उस की बिमाता उसे देख न सकेगी और उसे अनेक प्रकार के दुख: देगी परोसियों ने कहा कि तुम बावले हुये हो क्या सब बिमाता ऐसीही थोड़ी होतो हैं । पांचो अंगुली एक सी नहीं होती हैं सूरज भान ने कहा कि सब ऐसी ही होती हैं मैंने तो किसी बिमाता को अपने सौतेले बेटे से अच्छा ब्योहार करते नहीं देखा । देखो श्री राम चन्द्रजी की माता कैकेई ने उन से क्या ब्योहार किया और उन्हें कैसा दुःख दिया और सैकड़ों ऐसे दृष्टान्त राचि दिन देखने सुनने

में आते हैं। परोसियों ने कहा जो भले घर की बेटी धर्म शील और गुणवती स्त्री होती हैं वह अपने गर्भ जात पुत्र और सौतेले पुत्र में कुछ भेद नहीं समझती अधिकन्तु उसकी अवस्था देख अपने पुत्र से भी अधिक प्यार करती हैं और जो दुष्टा और निर्दया नारी होती हैं वही केवल अपने सौतेले पुत्र को दुःख देती हैं और अपने पुत्र का ही आदर करती हैं॥ बहुत समझाये पीछे सूरज भान ने द्वितीय विवाह करना स्वीकार किया। तब सूरज भान का सम्बन्ध एक भले घर की बेटी विद्यावती नामक से हुआ वह गुणवती और सुशील सती थी जब विवाह हो गया और विद्यावती अपने पतिके घर आई तब से वह सूरज भान के पुत्र चन्द्र भान को ऐसा प्यार करती कि जब कभी उसके थोड़ी सी भी चोट लग जाती तो उसको पुचकारती और आंसू पोंछ कर उसे गोद में उठा लेती और अनेक यत्न कर उस की पीड़ा के स्थान मे हाथ फेरती और जब तक कि चन्द्र भान रोता २ चुप का न हो जाता तब तक और कार्य नहीं करती जब कभी उसको खेद होजाती तो अपना खाना पीना सम्पूर्ण त्याग देती और उसे गोद में लिये रातों बैठी रहती और परमेश्वर से प्रत्येक घड़ी यही प्रार्थना करती कि हे भगवान् मेरे चन्द्र भानको अच्छा कर दे नहीं तो लोग मुझे

यह कहेंगे कि यह सौतेली मा है क्या जाने क्या कर दिया होगा। इसी प्रकार उसे अपने पुत्र की नाईं प्यार करती। परोसी और अन्य २ देखने वालेभी यह नहीं जानते कि यह उसकी सौतेली मा है। और उसका स्वामी उससे ऐसा स्नेह करता कि जैसा प्रथम स्त्री से भी नहीं करता था। उसने एक दिन अपने स्वामीसे कहा कि चन्द्र भान से यह न कहना कि यह तुम्हारी सौतेली मा है। उस ने कहा मैं तो नहीं कहूंगा परंतु तेरे चरित्रों से वह जान जाय तो मैं नहीं जानता। उसने कहा कि मुझसे जिस दिन कोई ऐसा काम हो जायगा कि जिस से मेरा चन्द्र भान मुझे सौतेली मा जाने तौ मैं उसी दिन डूब मरूंगी। जब चन्द्र भान बड़ा हुआ तो अपनी सौतेली मा के प्यार और आदर से यह न जान सका कि यह मेरी सौतेली मा है उस से भी अपनी मा से ऐसा स्नेह हुआ कि जो किसी दिन अपनी माता को व्याकुल देखता तो उस के मन में बड़ा दुःख होता और जब तक अपनी मीठी २ बातों से अपनी माता का दुःख न भुलाता तब तक दूसरा काम नहीं करता थोड़े दिन पीछे विद्यावती के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तब लोगों ने जाना कि अब विद्यावती चन्द्र भानसे पहिला सा प्यार न रक्खेगी। परंतु उस शीलवती का

प्यार वैसाही रहा। और उसने अपने पुत्र और चन्द्र भानसे अनुमात्र भेद न जाना। विद्यावती के पुत्र का नाम वीर भान रक्खा गया और जब वह बड़ा हुआ तो चन्द्र भान और वीर भान में वैसाही प्यार हुआ जैसा सहोदर भाइयों में होता है दोनों मे से कोई नहीं जानता कि यह मेरा सौतेला भाई है और विद्यावती वीर-भानसे चन्द्र भानको अधिक स्नेह करतीइससे वीर भानके मन में कुछ द्वेष न था। एक दिन भगवान की करनी ऐसी हुई कि उस नगरी के राजा का पुत्र पीड़ित हो गया देश देशान्तर से वैद्य आये परंतु किसी से आरोग्य नहीं हुआ। सूरज भान भी वैद्यक जानता था राजा ने उसे भी बुलवा कर दिखाया सूरज भान ने राजा के पुत्र को औषधि दिई परंतु भगवान् की करनी ऐसी हुई कि सूरज भानकी औषधि के पीते ही राजा का पुत्र काल कर गया राजा के मंत्री ने जिससे सूरज भान की ईर्षा थी राजा के मन में यह जमा दिया कि राजकुमारको सूरजभान ने विष देकर मार डाला राजा ने क्रोध कर शोक अग्नि से प्रज्वलित शरीर होआज्ञा दिई कि सूरज भान के एक पुत्र को हमारी सभा में लाकर सब के सन्मुख शूली दो तब हमारे पुत्र के मारे जाने का शोक हमारे हृदय से जायगा इस आज्ञा के पाते ही प्रहरियों ने जाकर

सूरज भान का घर घेर लिया और सूरज भान को राज आज्ञा सुनाई सूरज भान आज्ञा के सुनते ही मूर्छित हो गया जब उसे ज्ञान हुआ तब बिलाप कर शिर कूट २ रोने लगा। निर्दय प्रहरियों ने कहा कि तुरन्त एक पुत्र को ला दो नहीं सब को सूली होगी सूरज भान रोता रोता विद्यावती के पास गया और राज आज्ञा सुनाई, विद्यावती भी बिलाप कर रोने लगी, कुछ बन न पड़ी, जब बहुत बिलम्ब हुआ तो सूरज भान ने दोनों पुत्रों को बुलाया और राज-आज्ञा सुनाई चन्द्र भान सुनकर अनुमान दुःखित नहीं हुआ और आप राज-आज्ञा में अपना प्रान देने को प्रस्तुत हो गया। बीर भान ने कहा कि हे भाई तुम बड़े भाई हो पहिले मुझे मरने दो और राज-आज्ञा मुझे प्रति पालन करने दो। सूरज भान ने यह जाना कि अब निश्चय यह चन्द्र भान को दे देगी। परन्तु विद्यावती गुणवती शीलवती धर्मात्मा सती ने सोच बिचारकर कठिन हृदय कर अपने पुत्र बीर भान का हाथ पकड़ आगे कर दिया परन्तु अपने सौतेले पुत्र चन्द्र भान को न दे सकी। प्रहरी बीर भान को सूली देने ले चले सूरज भान और विद्यावती शिर फोड़ फोड़कर रोने लगे जब उसे सभा में ले गये तो राजा ने उस की शान्त मूर्त्ति देख तर्स खाया और जब प्रहरियों के मुख से यह बात सुनी

कि विद्यावती ने अपने पुत्र को सूली देने को दे दिया परन्तु अपने सौतेले पुत्र को प्यारा जान न आने दिया तो उस की दया और धर्म्म शीलता पर आश्चर्य हो धन्यवाद दिया और आज्ञा दिई कि हम ने तेरी स्त्री की धर्म्म शीलता पर तेरा अपराध मार्जन किया और तेरे पुत्र को सूली दिये जाने से क्षमा किया आज्ञा के पाते ही सूरजभान ऐसा आनन्द हुआ कि उस की आखों में आंसू आ गये और पुत्र को ले घर आया विद्यावती की धर्म्म शीलता और अपने सौतेले पुत्र पर यथार्थ स्नेह का ऐसा चर्चा फैला कि छोटे बड़े सब उस की प्रशंसा करने लगे और सब यही कहने लगे कि धन्य है और भले घर की बेटी है और भली धर्म्म शील है जो अपने सौतेले पुत्र को अपने पुत्र से भी अधिक स्नेह करती है। इसी प्रकार जो अपने सौतेले पुत्र को अपने पुत्र के समान आदर करेगी ऐसा ही आदर और सन्मान और प्रशंसा पायगी और जो अपने और सौतेले पुत्र में प्रभेद जानेगी और अपने सौतेले पुत्र को दुःख देगी वह कैकेई की न्याईं निर्दय और दुशील और पापिन कहलायगी और वही दुःख सहेगी जो कैकेई ने सहे और अन्तकाल नरक में जावेगी ॥

---

१८ अठारहवां पाठ ॥

किसी श्रेष्ठी के नित्यानन्द नामी एक पुत्र था वह बड़ा दुश्चरित्र निकला। कुछ दिन में उस का पिता काल कर गया। उस का धन द्रव्य सब थोड़े दिनों में उड़ा दिया। जब टुकड़े मांगने योग्य हो गया तो उसे अपने पिता का एक बन्धु हेमगुप्त नाम स्मरण हुआ उस के पास पहुंचा। हेम गुप्त ने उस की ऐसी अवस्था देख पूछा बेटा तुम कहां और किस कारण यह तुम्हारी दुर्गती हो रही है तो उस ने कहा कि मैं कुछ जहाजों में द्रव्य भरकर सिंहल द्वीप को वाणिज के कारण जाता था। दैव की प्रतिकूलता से ऐसा झड़ हुआ कि सब जहाज जल मग्न हो गये। मेरे साथी सब बिछुड़ गये अथवा जल में डूब मरे कुछ पता न लगा भाग्य बल से एक पलक माच अवलम्बन कर बड़ कष्ट से प्रान रक्षा कर आप तक आन पहुंचा हूं अब मुझे इस अवस्था में अपने देश को जाते लाज आती है आप कोई उपाय बताइये। इतनी बात सुन उस ने अपने मन में कहा कि मैं अपनी कन्या के कारण उप युक्ति पाच की अन्यासन में था भगवान ने कृपाकर घर बैठे बर ला मिला दिया अब यह अति सद् वंश जात और निश्चय अपने पिता के अतुल अर्थ सम्पती का अधिकारी है अत एव तुरन्त शुभ दिन स्थिर कर अपनी कन्या इसे विवाह दूं निदान

वैसा ही किया। बर कन्या आनन्द से काल व्यतीत करने लगे। कुछ दिन में हेम गुप्त ने अपनी कन्या रत्नावती को उस के साथ कर दिया और बहुत सा धन द्रव्य अलंकार बस्त्र आदमी साथ दे बिदा कर दिया जामाता आनंद से अपने सास ससुर के पांव पूज रत्नावती को साथ ले गाड़ी पर चढ़ अपने देश को चला। नित्यानंद ने एक निबीड़ जंगल में पहुंच अपनी स्त्री श्रेष्ठी कन्या से कहा कि इस जंगल में डाकू बहुत हैं तुम सब अपना अलंकार मुझे दे देा जब जंगल के पार निकल जावो तो फिर ले लेना और गाड़ीवाले को भी लौटा देा हम दोनों दरिद्र भेष में पैदल बिना उपद्रव इस दुर्गम बन से निकल जावेंगे रत्नावती ने तत्क्षण सब अलंकार उतार कर अपने स्वामी के हाथ में समर्पित कर दिया और अपने दास दासियों को बिदा कर दिया और अकेली उस सेठ के साथ हो लिई नित्यानंद सब अलंकार महामूल्य हस्तागत कर अति निबीड़ आगम्य बन में प्रवेश कर ऐसी पति परायना हितैषिनी प्रणयिनी को एक अन्ध कूप में डालकर अपने देश में उपस्थित हुआ। रत्नावती कुएं में पड़ी हा तात हा मात कर रोने लगी दैवात एक पथिक वहां उपस्थित हुआ ऐसे निबीड़ आगम्य बन में रोदन-शब्द सुन अति आश्चर्यित हो कुएं के निकट जा उस में दृष्टि कर देखा कि एक

परमसुंदरी नारी नाना प्रकार बिलाप कर रही है पथिक ने अति व्याकुल हो उस स्त्री रत्न को परम यत्न से कूप से बाहर निकाल कर पूछा कि तुम किस कारण एकाकिनी इस भयंकर कानन में आई थी और किस प्रकार से तुम्हारी ऐसी दुर्दशा हुई रत्नावती सती ने पति निन्दा उचित न जानी और कहा कि मैं चन्द्रपुर निवासी हेम गुप्त श्रेष्ठ की कन्या हूं मेरा नाम रत्नावती है मैं अपने पति के साथ ससुराल को जाती थी इस स्थान पर उपस्थित होते ही कई एक चोरों ने आकर प्रथम तो मेरे अंग से सब अलंकार उतार लिये और फिर मुझे कुएं में डालकर मेरे पति को बांध ले गये अब उन की क्या दशा हुई मैं नहीं जानती। पथिक ने यह बात सुन अति व्याकुल हो भरोसा दे अपने साथ ले उस के पिता के घर पहुंचा दिया। रत्नावती अपने पिता माता को बड़ी प्यारी थी उन्हों ने उस की ऐसी दशा देख पूछा कि बेटी तुम्हारी यह क्या दशा हुई। रत्नावती ने वही बात अपने माता पिता से कही जो पथिक से कही थी परन्तु यह न कहा कि मेरे स्वामी मुझे कुएं में डालकर मेरा अलंकार लेकर चले गये उस के पिता ने कहा कि बेटी तुम उत्कण्ठित मत हो मेरे मन में यह निश्चय होता है कि तुम्हारा पति जीता है ऐसी २ अनेक प्रकार की शान्ता कर उसे नूतन अलंकार बनवा दिये।

उधर नित्यानंद अपने घर पहुंच उन अलंकारों को बेंच बांच थोड़े दिनों में उड़ा पड़ा फिर मांगने योग्य हो गया और अपने जी में बिचारा कि मेरा दुश्चरित्र कदाचित् ससुराल के लोगों को प्रकाशित न हुआ होगा अत एव चलो छल करके फिर वहीं पहुंचें दो चार दिन ठहर कुछ हाथ मार फिर वहां से भाग आऊंगा यह मन में ठान ससुराल में फिर उपस्थित हुआ और वहां पहुंचते ही सब से पहिले अपनी स्त्री रत्नावती के सामने पड़ गया। पति परायणा रत्नावती ने अपने पति को समागत देख अपने मन में बिचारा कि यद्यपि पति अति दुराचारी हो तथापि नारी का परम गुरू है उस को संतुष्ट रखने से ही परलोक में शुभ फल प्राप्ति होता है और जो नारी कुमति परतंत्र हो परम गुरू स्वामी के कादाचनिक कु व्योहार को अपराध जान उस के प्रति किसी प्रकार अश्रद्धा अथवा अनादर प्रदर्शन करे वह अपना यह लोक और परलोक खोती है और उन्हों ने केवल भ्रान्ति से ऐसा व्योहार किया अत एव मे सामान्य दोष को अपराध जान आप अपराधिनी क्यों हुई। यह अनजान यहां आये हैं मुझे देखकर निश्चय भाग जायेंगे अत एव पहिले इन का भय भंजन करना उचित है यह मन में बिचार रत्नावती आगे बढ़ कहने लगी हे नाथ तुम किसी बात की

चिन्ता मत करो मैं ने अपने माता पिता से यह कहा है कि चोरों ने मुझे कुएं में डाल दिया था और तुम को बांधकर ले गये थे मेरे पिता माता तुम्हारे कारण अत्यन्त व्याकुल हुए हैं अब तुम को देखकर बड़े आनन्द होंगे तुम कहीं और मत जाना यहीं रहो मैं सदा तुम्हारी चरण सेवा करूंगी यह उपदेश दे रत्नावती चली गई। उस श्रेष्ट ने अपने ससुर के पास जा उसे प्रणाम किया श्रेष्ट ने आनन्द से उसे आलिङ्गन कर आर्द्र पूर्ण लोचन और गद् गद् बचन से अपने जामाता को आशीर्वाद दे और सब समाचार पूछने लगा। तब उस ने वही कहानी जो रत्नावती ने उसे सिखा दिई थी कह सुनाई और यह बात कह छलकर रोने लगा हेमगुप्त के मन में दया आई और उस का बड़ा आदर मान किया। राचि को पति परायणा रत्नावती ने स्वामी के समागम सौभाग्य के मद से उन्मत्त हो पूर्व कृत निर्दय कर्म को भूलकर पति के दर्शन के सुख की अभिलाषा में सर्व प्रकार अलङ्कार आदि सर्व अङ्ग में परधान कर शयनागार में प्रवेश किया। निश्चानन्द कुछ काल तक हंस बोल छल निद्रा में आंख मींचकर पड़ रहा जब लों वह जागता रहा रत्नावती उस के चरण चापती रही फिर उसे सोता जान आप भी सो गई जब रत्नावती सो गई तो धूर्त्त

निष्ठुर नित्यानन्द कपट निद्रा से जाग अवसर पा एक तीक्ष्ण धार छुरी से उस स्त्री रत्नावती का कण्ठ छेदन कर सब अलङ्कार ले भाग गया। देखो ऐसे निर्दई कपटी पुरुष को भी अपना स्वामी जान गुणवती रत्नावती ने यथोचित आदर सन्मान किया ऐसी स्त्रियां जो अपने पति गुणवान की निन्दा करती हैं वह बड़ी दुश्चरित्रा होती हैं॥

---

१९ उन्नीसवां पाठ॥

(चित्र संख्या ४)

एक बरबर ने पंथ में एक दर्पन पड़ा पाया उठाकर देखा अपनी बुरी आकृती जो उस में दिखाई दिई तो अति क्रोध कर उसे धरती पर पटक दिया और कह उठा— हे भगवान बुरी आकृती दिखाई देती है इसी कारण कोई इसे मार्ग में फेंक गया होगा। इसी प्रकार लोग अपना दोष नहीं देखते परन्तु दूसरों के गुणों को भी दोष जानते हैं॥

---

२० बीसवां पाठ॥

एक समय सिंह पीड़ित हुआ। बन के सब जीव जन्तु उसे देखने आये परन्तु श्रृगाल न आया ब्याघ्र ने उस की निन्दा की श्रृगाल को इस बात का व्योरा पहुंचा। सिंह ने ब्याघ्र से

चित्र संख्या ४ पृष्ठ ४४ पाठ १९



चित्र संख्या ५ पृष्ठ ४५

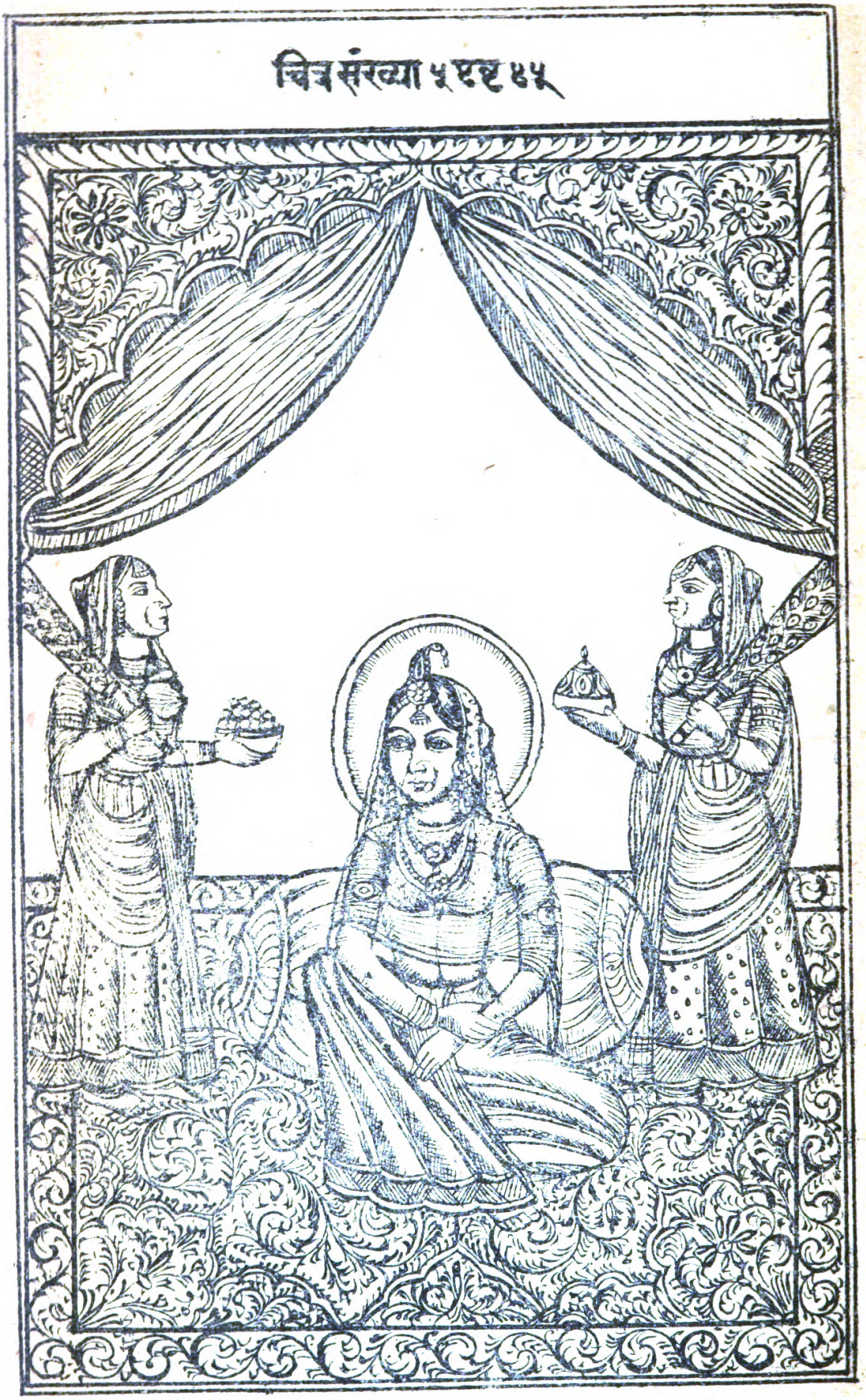

कहा कि जब शृगाल आवे तो मुझे बतलाना। जब शृगाल आया तो व्याघ्र ने संकेत किया। सिंह ने पूंछा तू इतने दिन कहां था? शृगालने कहा धर्म्मावतार आपके कारण औषधि के अन्यासन में था। सिंह ने कहा कुछ पाई? कहा धर्म्मावतार! व्याघ्र की जानूं की अस्थि। सिंह तत्काल पंजामार व्याघ्र की जानूं की अस्थि निकालकर खागया। शृगाल प्रणाम कर विदा हुआ। पश्चात् व्याघभी रुधिर आलुप्त निकला। शृगाल ने कहा सखे! किसी की निन्दा वा किसीपर अभियोग करना उचितनहीं होता॥

(सीता महाराणीका बृत्तान्त)

(चित्र संख्या ५)

सीता मिथिलाधिपति जनक राजर्षि की कुमारीथी। राजा बाल्यावस्था से उसे लालन पालनकर विद्या सिखाने लगे। सीता परमरूपवती औ गुणवती कन्या हुई, जब विवाह के योग्य हुई तो राजा जनकने अपने मन में यह बिचारा कि जो सर्बगुण बिशिष्ठ राजकुमार महादेवजी का धनुष भंग करसकेगा मैं अपनी कन्या उस को सम्प्रदान करूंगा और यह प्रतिज्ञा कर देश देशान्तर में यह सम्बाद भेजा कि जो कोईराज-कुमार सीता से बिवाह करने की इच्छा रखता हो आकर धनुष भंग

करे। यह सम्वाद सुन कन्या रत्न लाभ की बांछाकर अनेक२ राज-कुमार मिथिला नगरी में आये परन्तु धनुष भंग न कर सके और सीता की आशा परित्याग कर लौट जाने लगे इसी समय सूर्यवंशी राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे उनके सातसौ राणी थीं परन्तु किसी के संतान न थी। पश्चात् कौशल्या कैकेयी सुमित्रा तीनों एक समय गर्भवती हुईं। कौशल्या राणी के गर्भसे श्री रामचन्द्र जी, कैकेयी के गर्भ से भरत और सुमित्रा राणी के गर्भ से शत्रुघ्न और लक्ष्मण दो यमज पुत्र जन्मे इन पुत्रों के जन्मतेही यह प्रचार हुआ कि साक्षात् भगवान् चारों अंश में अवतीर्ण हुए हैं॥ जब चारों भाई कुछ बड़े हुए तो विद्या सीखने लगे और थोड़ेही दिनों में शास्त्र और शस्त्र-विद्या में ऐसे पण्डित होगये कि उस समय उनके समान दूसरा पंडित न था और उन चारों * भाइयोंमें बड़ा प्यार हुआ। उस समय राक्षसों ने बड़ा उत्पात मचाया था ब्राह्मण पण्डितों को जब कभी योग यज्ञ अथवा किसी और धर्म कर्म्मका अनुष्ठान करते देखते तो अस्थि रुधिर इत्यादि अपवित्र वस्तुप्रक्षेप

* शत्रु पक्ष के मनुष्यों को और असभ्य जातीयोंको कवियोंने राक्षस लिखाहै॥

कर नष्ट कर देते थे इस कारण सब ब्राह्मण पण्डित गण बड़े दुःखित हो रहे थे और इस उपद्रव के निवारण के कारण विश्वामित्र मुनि ने राजा दशरथ के निकट यह प्रार्थना की कि जो निशाचरों के उत्पात निवारण करने के निमित्त आप श्रीराम चन्द्र जी और लक्ष्मण को दे दें तो हम निर्विघ्न से यज्ञ सम्पूर्ण कर सकें। यद्यपि राजा दशरथ मन में सम्मत न हुए तथापि ब्रह्म शाप की शंका से उन को सम्मत होना पड़ा। तब विश्वामित्र जी राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को अपने साथ ले गये उन्हों ने सुबाहु, ताड़का, आदि बहुत से राक्षस राक्षसीयों को विनाश किया मुनियों ने निर्विघ्न से यज्ञ सम्पूर्ण कर राम चन्द्र औ लक्ष्मण को अनेक प्रकार से आशीर्वाद दिया तदन्तर जब विश्वामित्र मुनि राम लक्ष्मण को घर लौटा ले चले तो उन्हों ने पंथ में जनक राजा के धनुष भंग की प्रतिज्ञा की बात सुनी और उन के राज्य में जाने की बाञ्छा प्रकाश की। तब विश्वामित्र उन्हें दोनों को मिथिला पुरी में राजा जनक के पास ले गये। जनक राजा ने नवदूर्वादल श्याम राम चन्द्र जी को देख और उन के गुणानुवाद सुन अति आनन्द हो छिपकर विश्वामित्र मुनि से कहा कि मेरी तो यह बाञ्छा है कि इन को अपनी कन्या दान कर दूं परन्तु धनुष भंग न करने से प्रतिज्ञा भंग का अपयश होगा यह ही आशंका

है सीता ने भी उन के गुण सुन मोहित हो अन्तःपुर से उन्हें देखा और उसि समय से उन को अपना मन समर्पण कर दिया परंतु इस बात की चिंता करने लगीं कि ऐसे कोमल शरीर से ऐसा विषम धनुष कैसे भंग होगा निदान राम चन्द्र जी ने निराश न हो ऐसा धनुष भंग कर डाला जो कि बहुत से योद्धाओं से उठ भी न सका था जब राम चंद्र जी धनुष भंग कर चुके तो राजा बड़े प्रसन्न हुए और चाहा कि अपनी कन्या भी राम चंद्र जी को बिवाह दें परंतु राम चंद्र बिना अनुमति अपने पिता के बिवाह करने में सम्मत न हुए और यह वृत्तान्त अपने पिता को कहला भेजा और भरत और शत्रुघ्न के बुलाने को दूत भेज दिया। राजा दशरथ यह सम्बाद सुन भरत और शत्रुघ्न को साथ ले बड़ी धूम धाम से मिथिला नगरी में आये। राजा जनक ने यथोचित समादर से उन का सम्मान किया। तदन्तर शुभ लग्न देख उन्हों ने राम चंद्र जी को सीता राणी सम्प्रदान कर दी। उरमिला नामी उन की एक कन्या और थी वह लक्ष्मण जी से बिवाह दी और उन के बड़े भाई कुशध्वज की दो परम सुन्दरी कन्या थीं वह दोनों भरत शत्रुघ्न को बिवाह दी। राजा दशरथ इस प्रकार अपने पुत्रों को बिवाह पुत्र बधुओं को साथ ले बड़ी समारोह से अयोध्या को फिर आये। नगर निवासियों ने बड़ा आनंद

उत्सव किया। राजा ने दरिद्र दुखियारों को बहुतसा धन दिया। तदन्तर भरत शत्रुघ्न दोनों केकय नगर अपने मातुल के चले गये। इस के पीछे कुछ दिनों में ज्ञानी राजा दशरथ वृद्ध अवस्था के कारण अपने को राज कर्म्म के अयोग्य जान राजाओं और पात्र मित्र गण कि परामर्श अनुसार श्री राम चन्द्र जी से कहा कि राम चंद्र! मैं अब वृद्ध हुआ और राज-कर्म्म के अयोग्य हो गया अतएव तुम हमारे ज्येष्ठ पुत्र हो तुम को राज्य दे मैं राज-कार्य्य से अवसर लेने की इच्छा रखता हूं तुम राज्य भार ग्रहण कर यथा नियम से प्रजा पालन करो। जिस की जो अभियोग हो उस को सुन कर विचार करना। राजनीति और धर्म्म शास्त्र सीखकर जिससे अपना मान वृद्धि हो ऐसा काम करना। किसी की सुन्दर स्त्री को देख उस पर कुदृष्टि मत डालना पर हिंसा, पर पीड़न और पर धन का लोभ न करना। बिना अपराध किसी का प्राण दण्ड मत करना परदार परायन और पर पीड़क को शास्त्र अनुसार दण्ड देना तप जप और धर्म्म कर्म्म करना और देवता ब्राह्मणों की भक्ति करना; सब पर दया रखना; अनाथ औ दीन दुखियारों का प्रति-पालन करना; और जिस से कोई दुखी न हो ऐसा काम करना। यह उपदेश दे दूसरे दिन राज्य देना धार्य कर अधिवास करवाया। जब राम चन्द्र जी के राजा होने का सम्बाद सारी अयोध्या में

फैला तो सब अयोध्या वासी आनन्द हुए; परन्तु उन की बिमाता कैकेई राणी के मन में बड़ा दुःख उपजा उस का कारण यह था कि राजा ने उस के गर्भजात पुत्र को राज न दिया उस के सौतेले पुत्र रामचन्द्र को राजा किया। अतएव रात्रि को जब राजा अन्तःपुर में पहुंचे तो राणी ने मौन भाव म्लानवदन हो राजा से बात चीत न की राजा वृद्ध और कैकेई युवती थी। बूढ़ों को युवती स्त्री अपने प्राण से भी प्रिया होती है इसी कारण राजा दशरथ ने कैकेई की बहुत सी साधना की और कहा हे प्रिये तुम ने किस कारण अभिमान किया है। मैं इतना बड़ा राजा हूं मेरे राज्य में जो चाहो मिल सक्ता है बताओ किस वस्तु पर वासना है? कैकेई ने कहा हे नाथ! जो तुम बचन करके कहो कि जो मांगोगी सो देंगे तो मैं अपनी बासना तुम से प्रकाश करूं। राजा ने कहा तुम्हारे कारण प्राण तक दे सक्ता हूं मैं शपथ करता हूं कि जो तुम मांगोगी सो दूंगा यह सुन कैकेई ने चन्द्र सूर्य्य नक्षत्रों को साक्षी कर कहा हे महाराज पहिले जब तुम युद्ध में आहत हुए थे तो उस समय मैं ने आप की बड़ी सेवा की थी आप ने मुझे बर देना किया था उस के पीछे आप को मैं ने एक और विपद से भी उद्धार किया है उस समय भी आप ने एक बर देना किया था सो उस समय से मैं ने कोई बर नहीं मांगा अब

दो बर मांगती हूं मुझे दो। राजा ने कहा अच्छा दो बर मांगो। कैकेई ने कहा कि प्रथम यह मांगती हूं कि भरत को राज्य दें और द्वितीय यह कि राम चन्द्र को चौदह वर्ष का बनवास दें। राजा यह बात सुन मूर्छित हो कुछ काल तक अचेत हो रहे फिर चेत में आकर कहा अरी चण्डालिनी पापीयशी! जो राम मेरे प्राणाधिक हैं मैं उन को बनबास दे एक दिन भी न जीऊंगा। अतएव पति हीनत्व स्वीकार करके भी तूने सपत्नी पुत्र को बनबास देने की बासना की तेरे समान दुर्वृत्ता स्त्री इस जगत में नहीं। राम चंद्र राजा होंगे, आज उन का अधिवास हुआ है कल जो भरत को राज्य दें तो लोग कहेंगे कि राजा ने स्त्री परवश हो यह काम करा है यह मुझे कभी न सुहायगा। जो कोई नारी के बश होता है उस की सब निन्दा करते हैं इसी प्रकार राजा ने बहुत भर्तसना की परंतु कैकेई ने न माना। और सारी राति बिवाद बिसम्बाद में कटी। प्रभात समय राजा शोक से व्याकुल हो राज सभा में न आये। राज्याभिषेक का समय उपस्थित हुआ परंतु तब भी वह बाहर न निकले सभासद लोगों ने राजा के पास सुमंत्र को भेजा और कहा कि देखो महाराज क्यों नहीं आये सुमंत्र ने देखा कि राजा दशरथ अचेत हो धरती पर पड़े हैं सुमंत्र ने कहा महाराज आज

राम चंद्र राजा होंगे निमंत्रित नृपति गण सब सभा में विराजमान हैं, केवल आप की बाट देख रहे हैं आप शीघ्र राम चंद्र जी को चल कर राज तिलक दें दशरथ ने कहा कि सुमंत्र! क्या देखते हो पापीयसी कैकेई ने मेरे प्राण विनाश करने का उद्यम किया है। मैं बचन बद्ध हो चुका हूं तुम शीघ्र राम चंद्र को मेरे निकट बुला लाओ कि कुछ परामर्श स्थिर करें। यह बात सुन सारथी श्री राम चंद्र जी के पास गया राम चंद्र जी ने उस के आवने का कारण समझ लिया और सीता से कहा कि मेरे राज्य पाने की बात सुन विमाता ने कुछ युक्ति की होगी अतएव मैं सुन आता हूं कि पिता जी क्यों बुलाते हैं। यह कह-कर रथ पर चढ़ पिता के पास आये। राम चंद्र जी के राज तिलक उत्सव देखने के लिये बहुत बड़ी भीड़ हुई इस लोक मण्डली के बीच होकर जब राम चंद्र जी जाने लगे तो सब ने जयध्वनि की तदन्तर राम चन्द्र जी लक्ष्मण को बाहर छोड़ पिता के पास गये और देखा कि वह अचेत हो धरती पर पड़े हैं विमाता से पूछा हे माता पिता की ऐसी दशा क्यों हुई? कैकेई ने कहा कि राजा ने मुझे दो बर देने किये थे प्रथम तो यह कि भरत राजा हो और द्वितीय यह कि राम चन्द्र तुम चौदह वर्ष बनवास को जाओ। राम चन्द्र जी ने मुसकरा कर कहा कि इस बात की क्या चिन्ता

है। भरत सर्व्व गुण विशिष्ठ हैं, और अच्छे प्रकार राज्य कार्य सम्पादन कर लेंगे वह आकर राज्य करें मैं अबही बन को चला जाता हूं। कैकेयी? ने कहा कि भरत के आने की बाट देखनी कुछ आवश्यक नहीं तुम आजही बन को चले जाओ राजा दशरथ ने यह सब कैकेई की बातें सुन शिर झुका लिया। रामचन्द्र जी ने कहा कि जननी मैं आजही बन को चला जाऊंगा केवल सीता को माता के समर्पण कर आऊं इतना ही विलम्ब होगा यह कह कर रामचन्द्र जी ने अपने पिता को प्रणाम किया राजा पुत्र की ऐसी अलौकिक सुशीलता देख विलख २ कर रोने लगे। श्री राम चन्द्र जी ने अपनी जननी के निकट जा यह सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि मैं पिट सत्य पालन के लिये बन को जाता हूं कौशल्या राणी उन की बनवास की कथा सुन हाहाकार ध्वनि से रोने लगीं और नाना प्रकार के यत्न से उन्हें बन जाने से निवारण करने का उपाय करने लगीं। रामचन्द्र जी ने कहा कि जो मैं बन न जाऊं तो पिता का सत्य पालन न होगा। कौशल्या ने कहा कि राजा तो बुद्धि रहित हुए हैं और कैकेई के बश हो गये हैं शास्त्र में यह लिखा है कि स्त्री के बश न होना चाहिये जो पिता स्त्री के बश होकर अपने पुत्र को बनवास देना चाहे उस का सत्य क्या?

लक्ष्मण ने कहा कि जननी यथार्थ कहती हैं स्त्री बधी-भूत पिता की सत्य के कारण क्यों राज्य त्याग किया आज्ञा करो तो अभी भरत का राजा होना खण्डन कर दूं। कौशल्या ने कहा हे राम! जो लक्ष्मण कहते हैं सुनो और मैं तो बारम्बार कहती हूं कि तुम पिता का सत्य पालन मत करो जो चाहो तो भरत को एक आज्ञा की पालन के कारण सारा राज्य दे दो परंतु दूसरी आज्ञा के प्रति पालन करने का कुछ प्रयोजन नहीं जो तुम बन को चले जाओगे तो मैं जीती न बचूंगी, हे राम चन्द्र! देखो मैं तुम्हारी गर्भ–धारिणी जननी हूं तुम को गर्भ में धारण करके कितना कष्ट पाया है; अतएव माता पिता से भी अत्यन्त पूज्य है मैं तुम्हें बन गमन से निषेध करती हूं तुम मात वाक्य लंघन मत करो राम चन्द्र जी ने कहा कि यह बात सत्य है परंतु पिता तुम्हारे पूज्य हैं अतएव उन की आज्ञा निश्चय गुरुतर है सो उसे किस प्रकार लंघन करूं जब कौशल्या राणी ने देखा कि राम चन्द्र ने पिट आज्ञा प्रति पालन करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करलि है तो अत्यन्त शोकाकुल हो रोने लगीं। राम चन्द्र माता को प्रणाम कर सीता के निकट गये और उन से सारा वृत्तान्त कहा और कहा अभी एक वर्ष भी न हुआ होगा कि तुम्हारे साथ मेरा बिवाह हुआ है इतने में विधि ने

यह विड़म्बना की अब मैं बन को चला जब तक मैं लौटूं तुम घर में रहना और माता की सेवा करना। जानकी ने कहा कि हे नाथ! तुम मेरे शिरोमणि कर्त्ता और परम गुरू हो जो तुम बन को जाओ तो मुझे घर में रहने से क्या सुख। पति बिना पत्नी की और गति नहीं पति के जीवन से उस का जीवन और उस के मरन से उस का मरन है अतएव जो तुम बन को जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी मैं सदा की तुम्हारी दासी हूं, जहां तुम रहोगे मैं तुम्हारी चरण सेवा करूंगी। और तुम बन में अनेक कष्ट पाओगे जो यह दासी तुम्हारे संग रहेगी तो कष्ट में अनेक न्यूनता होगी जो कहो कि मेरे साथ चलने से तुम भी दुःख पाओगी तो यह कहती हूं कि तुम्हें देखके सब दुःख भूल जाऊंगी और तुम्हारे दर्शन से रोग शोक कुछ जान न सकूंगी और तुम्हारी सेवा में बड़ा सुख मानूंगी। रामचन्द्र ने कहा हे प्रिये! बन बड़ी भयानक जगेह है और सिंह व्याघ्र राक्षसों से परिपूर्ण है तुम नवीन युवती हो उस दुर्गम भयानक बन में कैसे रहोगी और फल मूल खा क्योंकर जिओगी तुम्हारा अङ्ग अति कोमल है और तुम अति कोमल शय्या पर सोया करती हो तुम धरती पर क्योंकर सोओगी और तुम कभी घर से बाहर नहीं निकली हो सो पैरों कैसे चलोगी तुम्हारे

कोमल चरणों में कुशाङ्कुर चुभने से तुम चलने से रह जाओगी अधिकन्तु बन में भ्रमण करने से दोनों की विकृत मूर्त्ति हो जावेगी फिर एक दूसरे को देख किस प्रकार सुख होगा अतएव तुम घर रहो जब चौदह वर्ष बीत जायंगे तो मैं फिर आकर तुम्हारे संग सुख स्वच्छन्द से काल विताीत करूंगा। स्वामी की यह बात सुन जानकी बड़ी कातर हुई और कहा हे नाथ तुम पण्डित होकर निर्बोधों की सी बातें क्यों करते हो तुम्हें सारे जगत में बीर कहते हैं परन्तु जो अपनी भार्या की रक्षा न कर सके उस का बीरपना क्या ? देखो भरत ने तुम्हारे राज्य लेने में कुछ ढील न की उस के राज्य में तुम्हारी भार्या की कौन रक्षा करेगा तुम कहते हो कि बन में जाने से मेरे चरणों में कांटे चुभेंगे परन्तु जो तुम मेरे साथ रहोगे तो मैं उन कांटों को तृण समान करूंगी और धरती पर सोने से जो शरीर पर धूल लगेगी तुम्हारी कृपा से उसे अगुरु चन्दन जानंगी तुम्हारे संग जो दुख तले रहूंगी तो वह भी स्वर्ग पुरी से सहस्र गुण सुख दायक गिनूंगी मैं तुम्हारे सुख में सुख और दुख में दुख जानती हूं। तुम बिना सब अंधकार है। जो बन में भ्रमण करने से भूख वा प्यास लगेगी तो तुम्हारा श्याम रूप देख वह सब निवारण करलूंगी और बल्कल

से तीर्थ देखने में आवेंगे और बड़े २ बन और पर्व्वत देखूंगी। जब मैं अपने पिता के घी तो पण्डित जोतिषी लोग यह कहते थे कि यह कन्या अपने पति के संग बनवास करेगी। वह बात कदाचित् झूंठ नहीं; मेरे भाग्य में बनवास लिखा है। उसे कोई खण्डन नहीं कर सकेगा जो तुम मुझे अपने संग न ले जाओ तो मैं आत्म हत्या करूंगी और तुम स्त्री बध अपराधी होगे जनक नन्दिनी के इस प्रकार के बचन सुन श्री रामचन्द्र जी ने कहा हे सीता मैंने केवल तुम्हारे मन की परीक्षा के कारण यह सब बातें कहीं थी। अब जो तुमने यथार्थ बन जाने की हठ धरी है तो अपने सब अलङ्कार उतार दो। यह बात सुन सीता बड़ी आनन्द हुई और अपने गहने उतार जिसे सामने पाया उसी को दे दिया और जो धन वस्त्र भंडार में था सो सब को बांट दिया॥

तब श्री राम चन्द्र जी ने लक्ष्मण जी से कहा भाई तुम घर रह कर सब को पालन करो दास दासियों की सदा सुधि लेते रहना और राज्य लेने की आशा कदाचित् मत करना। पिता माता मुझे न देखकर कातर होंगे; परन्तु मुझ में और तुम में कुछ प्रभेद नहीं है अतएव तुम को भी देखकर उन की बहुत सी सान्तना होगी। लक्ष्मण जी ने कहा कि मैं तुम्हारा सेवक हूं जो

तुम बन को जाते हो तो मैं भी तुम्हारा अनुचर होकर साथ चलूंगा। मैं और तुम एक हैं विमाता यह जानती हैं अब जो मैं तुम्हारे साथ न जाऊं तो वह अपने मन में क्या कहेंगी। और तुम भी सेवक बिना सीता को क्योंकर साथ लिये बन में भ्रमण करोगे अतएव मैं तो यहां नहीं रहता तुम्हारे साथ चलूंगा। राम चन्द्र जी ने कहा जो मेरे संग जाया ही चाहो तो अच्छे धनुष बाण साथ ले लो। बन में बहुत राक्षस राक्षसी हैं सदा उन के साथ युद्ध रहेगा। यह सुन लक्ष्मण जी ने अच्छे २ शर और धनुष साथ ले लिये। तब राम चंद्र जी ने लक्ष्मण जी से कहा भाई हम बन को जाते हैं हम को धन का प्रयोजन नहीं अतएव सत्-कुल-जात ब्राह्मण पुरोहितों को बुलवा कर जो जो कुछ मांगें दान कर दो और दरिद्र दुखियारों को जो हमारे दुःख में दुखी हैं बहुत सा धन द्रव्य दे सब को ऐसा निहाल कर दो कि चौदह वर्ष के भीतर किसी को मांग कर खाना न पड़े। लक्ष्मण जी ने ऐसा ही किया॥

फिर श्री राम चन्द्र जी औ सीता जी औ लक्ष्मण जी बन जाने को प्रस्तुत हुए जो राम लक्ष्मण सोने के पालनों पर चला करते थे और जिन्हों ने कभी धरती पर पांव न धरा था और जिस सीता ने कभी सूर्य का मुख भी न देखा था

अट्टालिका से निकल राजपंथ में खड़े हुये। उनको यह अवस्था देख अयोध्या निवासी छोटे बड़े सब हाहा कार शब्द से रोने लगे। राजा ने कैकेई के बश में आकर उन्हें बनवास दिया यह अपवाद सारी नगरी में फैल गया। तब श्री राम चंद्र जी श्री लक्ष्मण जी श्री सीता जी राजा के पास विदा होने को गये। राजा उस समय शोकाकुल हो काल भुजंगिणी कैकेई को नाना प्रकार से भर्त्सना कर रहे थे। जब राम चंद्र जी के आने का सम्बाद सुना तो सब राणीयों को अपने पास बुलवाया। वह सब आ राजा के चारों ओर बैठ गईं। श्री राम चंद्र श्री लक्ष्मण श्री सीता तीनों ने राजा को प्रणाम करके कहा" महाराज! अनुमति हो हम बन को जायें। राजा ने रोते २ कहा बेटा अब हम को फिर कर तुम्हारे मुख कमल के देखने की आस न रही तुम्हारे शोक में निश्चय मेरा जीवनान्त होगा; अतएव चलो मैं भी तुम्हारे संग बन को जाऊंगा। रामचंद्र जी ने कहा पुत्र के संग पिता का बन में जाना शास्त्र विरुद्ध है राजा ने कहा तो तुम आज बन को मत जाओ काल जाना। आज मैं तुम्हें देखकर अपना हृदय शीतल करूं राम चन्द्र जी ने कहा हे पिता एक राचि के लिये क्यों अपयश लिया और इस में विमाता बुरा कहेंगी। अतएव आज ही बन को जाना

ठीक है। राजा ने यह बात सुन सुमंत्र सारथी से कहा कि रामचन्द्र जी के साथ तुरङ्ग मातङ्ग और बहुत सूत्य धन देा कि जंगल में बहुत तीर्थ और तपस्वी हैं रामचन्द्र यह सब धन उन को दान करेंगे। राजा की यह आज्ञा सुन कैकेई ने म्लान बदना होकर कहा "महाराज! आप ने भरत को सब राज्य दिया है अतएव सब धन जो रामचन्द्र को दिये दे हैं यह कैसा विचार है? रामचन्द्र ने कहा विमाता यथार्थ आज्ञा करती हैं हम तो बन को जाते हैं बन में तुरङ्ग मातंग और धन से क्या प्रयोजन? केवल लक्ष्मण और सीता मेरे साथ जायं और किसी वस्तु का प्रयोजन नहीं हम केवल बल्कल परिधान कर बन में भ्रमण करेंगे। कैकेयी ने पहिलेही से बल्कल बना रक्खा था रामचन्द्र के बल्कल का नाम लेते ही वह बल्कल मंगा दिया यह देखकर राजा दशरथ और उनकी १०० राणीयांरोने लगीं और सबने मिलकर भर्त्सना कर कैकेई से कहा-पितृ सत्य पालन के लिये केवल रामचन्द्र ही बन को जावेंगे लक्ष्मण और सीता को क्यों भेजते हो फिर रामचन्द्र और लक्ष्मण जी ने बल्कल पहिना परन्तु सब को यह चिन्ता हुई कि सीता किस प्रकार बल्कल पहिनेंगी फिर सभासद और मंत्रियों ने यह विधान किया कि सीता के बल्कल पहिनने का कुछ प्रयोजन नहीं वह अलङ्कार वस्त्र आदि पहिने रहेंगी।

तब सुमंत्र ने राजभण्डार से अच्छे २ पट वस्त्र और स्वर्ण अलङ्कार लादिये। सीता जीने वह सब वस्त्र अलङ्कार पहिन त्रिभुवन मोहिनी रूप धारण कर राजा के चरणों में प्रणिपात किया और कृताञ्जलि पुटहो कौशल्या राणी के सम्मुख दण्डायमाना हुईं। कौशल्या ने कहा सीता! तुम राजा की कन्या और राजा की बधू हो; तुम्हारा चरित्र देख सारा जगत् चलेगा अतएव तुम बड़ी सावधानता से रहना और अपने स्वामी की सेवा करना। स्वामी चाहे निर्धन हो चाहे धनवान स्त्री को स्वामी से उत्तम धन और कोई नहीं। सीता ने कहा जननी मैं पति की सेवा को परम धर्म जानती हूं स्वामी की सेवा करूं यही मेरी कामना है इसी कारण मैं बन गमन में व्याग्रहूं आप आशीर्वाद दें कि सदा स्वामी पद सेवा करती रहूं। कौशल्या ने कहा ऐसी कुल बधूओं को नवीन अवस्था में बन गमन करना न चाहिये इससे मुझे बड़ा दुःख आता है। तब कौशल्या ने रामचन्द्र को सम्बोधन कर के कहा देखो रामचन्द्र! जानकी परम सुन्दरी हैं; बन अति भयानक है मुनि आश्रम में सदा सावधानता से रहना। सुमित्रा ने कहा हे लक्ष्मण! तुम रामचन्द्र को देव तुल्य ज्ञान करना; बड़ा भाई पिट तुल्य होता है; उस के सदा आज्ञाकारी रहना और सीता को माता से अधिक ज्ञान

करना। रामचन्द्र जीने कहा हे माता तुम आशीर्वाद करो कि हम तीनों एक जगेह रहैं; फिर त्रिभुवन में किसी से न डरें। तब रामचन्द्र जी ने और सब माताओं की बन्दना की और कैकेयीसे कहा माता आशीर्वाद करो मैं बन को जाता हूं कैकेयी ने कुछ उत्तर न दिया। तब रामचन्द्र जीने अपनी माता के चरणों में सीस नवा कर और उनको पिता के चरणों में समर्पण कर कहा जब तक मैं उलटा न आऊं आप मेरी माता का पालन करना राजा ने कहा जो मैं जीता रहूंगा तो अवश्य करूंगा परन्तु मैं तुम को एक आज्ञा करता हूं तुम उसे लंघन मत करना तुम तीन दिन रथ पर चढ़ कर जाना। यह बात सुन सुमंत्र रथ लाया और रामचन्द्र और लक्ष्मण और सीता ने उस पर चढ़ कर यात्रा की॥

जब रामचन्द्र जीने अयोध्या से यात्रा की तो सारे लोग उनके रथ के पीछे २ चले राजा दशरथ यद्यपि उत्थान शक्ति रहित हुये थे तथापि सुत के देखने के कारण बाहर आ खड़े हुये यह देख कर रामचन्द्र जी ने सारथि से कहा कि मुझसे पिता की ऐसी दुर्गति देखी नहीं जाती तुम शीघ्र रथ चालन करो सारथि ने रथ चलाया और पल भर में रथ दृष्टि से बाहर हो गया। तब राजा दशरथ अचैतन्य हो धरती

पर गिर पड़े और अहार निद्रा परित्याग कर केवल राम चिन्ता में मग्न हुये॥ रामचन्द्र जी के बन में जाने से छोटे बड़े अपने पराये सब दुखी हुये॥

रथ पर चढ़ रामचन्द्र तमसा नदी के तीर जा उतरे; और स्नान कर फलाहार किया। लक्ष्मण जी ने कुछ वृक्ष के पत्ते बिछा दिये; रामचन्द्र और सीता उस पर सो रहे; लक्ष्मण धनुष बाण लिये जागते रहे। दूसरे दिन प्रातःस्नान कर तमसा और गोमती नदी पार हो इक्ष्वाकु के देश में होकर गंगा तट कोशल राज्य में एक वृक्ष के तले जा बैठे सारथि घोड़े चराने लगा। संध्या समय फिर रथ पर चढ़ दूसरे दिन शृंगवेर नगरी में गुहक चण्डाल नामी एक बंधु के घर जा सारथि को बिदा कर दिया। गुहक चण्डाल ने बहुत चाहा कि उन्हें अपने घर रक्खे परन्तु वह सम्मत न हुये और दूसरे दिन गङ्गापार हो आगे २ आप बीच में सीता और पीछे २ लक्ष्मण पैरों चले। दो कोस तक चल गङ्गा यमुना के बीच भरद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचे। भरद्वाज उन के बनवास की बात सुन बड़े व्याकुल हुये और बहुत सा विलाप कर उन सब को अपने आश्रम में रखने के लिये बहुत २ बिनती की। परन्तु अयोध्या नगरी वहां से निकट जान और यह सोच कर कि कदाचित भरत उन्हें लेने को

चले आवें श्री राम चन्द्र जी वहां न ठहरे और सीता जी को बीच में ले यमुना पार होकर आगे को चले। सीता कभी पैरों न चलीं थीं अत्यन्त थकित हो गईं और जैसे धूप लगने में घृत पिघल जाता है उन के कोमल शरीर की भी वही दशा हुई। तब कुछ अन्तरजा चित्रकूट वन में प्रवेश कर वहां पर्णशाला बना उस में रहने लगे उधर सुमंत्र राम चन्द्र को शृंगवपुर में छोड़ अयोध्या को लौट गया। राजा दशरथ ने खाना पीना पहिले ही से त्याग कर दिया था यह सम्वाद सुन शय्यागत होगये और कहा कि सरयू तीर एक समय में मृग की अहेर खेलने गया था उस समय अंधक मुनि का पुत्र नदी में कलश भर पानी लिये जाता था मैंने उसे अन्तर से मृग जान बाण से मार दिया मुनि ने नदी के तीर पर पुत्र का तर्पण किया और मुझे यह शाप दिया कि जा तूभी ऐसाही पुत्र शोक पावेगा जैसा कि मैंने पाया यह कहकर मर गया अतएव वह बात कभीव्यर्थ न होगी। रामचन्द्र के शोक में मेरे प्राण आजही त्याग हो जावेंगे। यह बात कहते २ उनका शरीर ठंढा हो गया और वह अचैतन्य हो गये और रात्रि को उनका देहान्त हो गया। इस दुर्घटना से सब राजमहिषी गण ने बहुत मनस्तापपाया विशेष कौशल्या तो अत्यन्त ही व्याकुल हुईं और

राजा का अन्त्येष्टि क्रिया कौन करेगा इस बात की जब चिन्ता हुई तो वशिष्ठ मुनि ने विधान दिया कि राजा की देह तैल में रक्खी जाय और केकय राज्य से भरत शत्रुघ्न को बुलवाया जावे। तब केकय राज्य में दूत भेज दिया और थोड़े दिनों में दूत भरत शत्रुघ्न को लेकर अयोध्या में पहुंचा तब उन्होंने पिता के मृत्यु का सम्बाद सुन बड़ा शोक विलाप किया और अपनी माता को रामचन्द्र जी के बनवास का कारण जान बहुत भर्त्सना की तब सरयू तीर पिता की अन्त्येष्टि क्रिया कर बहुत सा दान पुण्य किया॥

तब मंत्रियों ने भरत को राज सिंहासनारूढ़ होने को कहा। परंतु भरत ने यह उत्तर दिया कि राजा के वर्त्तमान रहते सेवक किस प्रकार गद्दी पर बैठ सक्ता है। राम इस राज्य के भूपति हैं और मैं उन का किंकर हूं अतएव उन का राज्य मुझ से नहीं सम्हलेगा विशेष मेरे माता के कारण उन का बनवास हुआ है। अतएव मैं गद्दी पर कदाचित् नहीं बैठूंगा, मैं और शत्रुघ्न दोनों मिल कर उन के अन्वेषण में जावेंगे और उनके पांव पड़ माता के दोष के कारण अपने ऊपर उनका क्रोध शान्ति करवा-कर उन को लाकर सिंहासन पर बैठाऊंगा। यह बात कह भरत शत्रुघ्न चतुरंग सेना ले तपस्वी का भेष धारण कर राम चन्द्र जी के अन्वेषण में

चित्रकूट पर्वत में जाकर देखा कि एक पर्ण-शाला के द्वार पर श्री राम चन्द्र जी बैठे हैं। सीता उसके भीतर और लक्ष्मण जी बाहर हैं। भरत ने रामचन्द्र जी को देख गलवस्त्र होकर उनके पदानत हुये। रामचन्द्र जी ने उन्हें उठाकर आलिंगन किया तब भरत ने उन के पांव पकड़ कर कहा—आप किस के कहने से राज्य छोड़ कर बन में आये हैं। बामा जाति की बामा बुद्धि होती है उनके कहने पर कौन राज्य छोड़ कर जंगल को जाता है। माता ने जो अपराध किया है सो मेरा अपराध है। उसे क्षमा करके देश को चलें आप अयोध्या के भूषण हैं आप बिना अयोध्या में अंधेरा हो रहा है। रामचन्द्रजी ने कहा भरत तुम पण्डित होकर विमाता को क्यों अनुयोग कर रहे हो। मैं पिता की आज्ञा से बन में आया हूं विमाता का इस में कुछ दोष नहीं तब रामचन्द्र जी ने पिता की कुशल पूंछी तब वशिष्ठ मुनि ने उन के परलोक प्राप्ति का सम्बाद कह सुनाया रामचन्द्र जी यह बात सुनतेही हाहा कार ध्वनि से रोने लगे और सीता और लक्ष्मण भी रोने लगे। फिर वशिष्ठ मुनि के विधान के अनुसार तीन दिन अशोच ग्रहण कर राम चन्द्र जी ने पिता का श्राद्ध आदि कार्य सम्पूर्ण किया तब भरत को बहुत सा समझा कर कहने लगे कि भाई अयोध्या सूनी पड़ी है

क्या जाने किधर से शत्रु आजायँ और राज्य नष्ट कर डालें; अतएव तुम जाकर राज्य शासन और प्रजा पालन करो; चौदह वर्ष बीतते क्या विलम्ब लगता है फिर सब आमिलेंगे; कुछ चिन्ता मत करो। भरत ने कहा सिंह का भार शृगाल से कब चलता है मैं आपके राज्य को क्यों कर सम्हालूंगा जो आप अत्यन्तही न चलें तो अपनी पादुका मुझे दें कि मैं उन्हें सिंहासन पर धर कर आप के नाम से राज्य करूं। जो आप इसमें सम्मत न हों तो मैं भी आपके साथ बनवास करूंगा। यह बात सुन रामचन्द्र जी ने अपनी खड़ाऊं उनको देदी भरत उनको शिर पर रख अपने देश में आये और उन खड़ाऊं को सिंहासन पर रख उस पर छत्रदण्ड लगवाकर राज्य करने लगे॥

भरत के जाने से कुछ दिन पीछे लक्ष्मण जी ने कहा प्रभु जो यहां रहोगे तो भरत फिर लेने आवेंगे। अतएव यहां अब स्थिति करना उचित नहीं चलो और कहीं चलदें। तब राम लक्ष्मण और सीता तीनों अगस्त्य पर्वत को चले गये उस पर्वत पर उपस्थित होतेही अगस्त्य मुनि अग्रसर होकर उन्हें अपने आश्रम को ले गये फिर वहां कुछ दिन रह कर वह पंचवटी बन में चले गये और वहां एक कुटीर बना कर रहने लगे॥

इस समय लङ्का में रावण राजा था। लङ्का

लवण समुद्र में एक द्वीप है अब उसको सिंहल-द्वीप कहते हैं। उस द्वीप में पहिले राक्षसों की बस्ती थी। परन्तु वह सदा देवतों से युद्ध विग्रह किया करते थे इस कारण देवतों ने उन्हें युद्ध में पराभव कर राक्षस बंश विध्वंस कर बिश्व-श्रवा मुनि के पुत्र बैश्रवण को वह राज्य दे दिया था। परन्तु युद्ध समय में कितने एक राक्षस लङ्का से भाग किसी और स्थान में जा छिपे थे।

जब लङ्का में बैश्रवण का राज्य होगया तो राक्षसों के मन में फिर लङ्का के लेने की इच्छा हुई तब सुमाली नाम एक राक्षसाध्यक्ष ने अपनी कन्या निकषा को कहा कि तुम बिश्रश्रवा मुनि के पास जाकर उन्हें प्रसन्न कर उनसे एक पुत्र का बर मांगो वह पुत्र लङ्काका अधिकारी होगा निकषा पिता वाक्य अनुसार बिश्रश्रवा मुनि के पास जा काय मनो—वाक्य से उनकी सेवा की मुनि संतुष्ट हुये और उसे बर देना चाहा। निकषा ने कहा मेरी यह अभिलाषा है कि मेरे पुत्र हों। मुनि ने वह वर दिया परन्तु यह कहा कि वह दोनों पुत्र दुर्जय राक्षस होंगे निकषाने मुनि को प्रणाम कर कहा प्रभु मेरी अभिलाषा पूर्ण की इससे मैं बड़ी प्रफुल्ल हुई परंतु मेरी सन्तान राक्षस होगी यह सुन कर दुखी हुई अत एव एक और पुत्र सर्व गुण

निधान मुझे दो मुनिने कहा अच्छा तुम्हारे सर्व्व गुण विशिष्ठ एक पुत्र और होगा। यह बात सुन निकषा राक्षसी बड़ी आनन्द हुई। यथा समय उसके तीन पुत्रहुये। जेष्ठ रावण,व दूसराकुम्भकर्ण जिसका शरीर अति प्रकाण्ड था और तीसरा सर्व्वगुण विशिष्ठ बिभीषण हुआ। रावण अत्यन्त बलवान और दिग्विजयी हुआ कुम्भकर्ण अत्यन्त आलसी हुआ और रात्रि दिन सोता रहता। बिभीषण परम धार्म्मिक था और स्वजातियों की न्याईं नर हिंसा नहीं करता। रावण ने धीरे २ बहुत देश जय कर लिये और अपने बाहु बल से लङ्काका अधिकारी होगया फिर उनका असंख्य परिवार होगया और उनके दोर्दण्ड प्रताप से मेदिनी कम्पमान हुई। इस रावण के सूर्पनखा नामी एक बहिन थी कितने एक निशाचरों के साथ जंगल में फिरती २ पंचबटी में रामचन्द्र और लक्ष्मण का भुवन मोहन रूप देख कर मोहित हुई और मोहनी रूप धारण कर उनके पासजा उनके पाणि ग्रहण की आसा कर रामचन्द्र जी के शरणागत हुई। रामचंद्र जी ने कहा कि देखो मेरी स्त्री मेरे संग है अत एव मैं तुम्हारी कामना सिद्ध नहीं कर सक्ता। रामचन्द्र जी की यह बात सुन कर वह लक्ष्मण जी के पास गई उन्होंने भी उसे उत्तर दिया। जब दोनों जगह से निरास होगई तो सूर्पनखा

ने जाना कि इस सीताही के कारण मेरीकामना सिद्ध नहीं हुई । यह मन में बिचार मुँह फाड़ उसे खाने को दौड़ी लक्ष्मण जी ने सीता की रक्षा कर सूर्पनखा के नाक कान काट लिये सूर्पनखा ने उसी क्रोध से सेनाले युद्ध आरम्भ किया रामचन्द्र जी ने राक्षसों को बिनाश करडाला। उस समय सूर्पनखा ने और भी मनःपीड़ा पाकर अपने भाई रावण के पास जाकर कहा कि राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र अपनी स्त्री के साथ बन में आये हैं मैंने देखा कि उनकी स्त्री सीता परम सुन्दरी रूपवती कामनी है स्वर्ग मर्त्य पाताल तीनों लोक में उसके तुल्य रूपवती नारी न होगी। अतएव मैंने उसे तुम्हारे कारण लाने का यत्न किया था परंतु रामचन्द्र ने मेरे नाक कान काट लिये ॥

रावण ने सूर्पनखा की दुर्दशा देख और विशेष सीता के रूप का वृत्तान्त सुन सीता हरणाभिलाषीहो बिचारा कि रामलक्ष्मण सदासीता की रक्षा करते हैं अतएव किसी कौशल से उसे हरना चाहिये यह बात शोच मारीच नामी एक राक्षस को बुलवाकर कहा हे मारीच सीता के हरने में तुम्हें मेरी सहायता करनी पड़ेगी। तुम किसी कौशल से राम लक्ष्मण को भुला कर बन में लेजाओ तो मैं तपस्वी का भेष धारण करके सीता को ले आऊंगा जो यह कार्य

सिद्धि कर दोगे तोमैं तुम्हैं बड़ा पुरस्कार दूंगा। मारीच ने कहा महाराज रामचन्द्र बड़ा बीर है बाल्य कालमें जब यज्ञ नाश करने को आया करते तो वह ऐसे बाण की दृष्टि किया करते कि हमारी आंखों के आगे अंधेरा आजाता अब तो वह यौवन अवस्था में हैं इसी कारण बल शक्ति भी अधिक होगई होगी अतएव मेरेसेयह कार्य नहीं होसक्ता। रावण ने कहा क्यातू मेरी आज्ञा नहीं मानेगा यह बात कह उसे बिनाश करने को प्रस्तुत् होगया। मारीच ने दोनों ओर से मृत्यु जान रावण का कहना मान लिया॥

तब मारीच पंचवटी बन को चला और रावण उसके पीछे होलिया। रामचन्द्र जीके कुटीर के पास पहुंच मारीच ने माया के बल से एक स्वर्ण मृग का रूप धारण कर लिया और कुटीर के आस पास फिरने लगा। सीता ने उस स्वर्ण मृग को देख कर रामचन्द्र जीसे कहा कि जो यह मृग मार ला सको तो उसका चर्म बिछा कर बैठा करूं रामचन्द्र जी सीता की परितोषण के लिये लक्ष्मण को उनकी रक्षा के निमित्त छोड़ कर माया मृग हत करने को गये। मृग उन्हें देख भागने लगा रामचन्द्र जी उसके पीछे हुये फिर जब हाथ न आया तो उसके ओर बाण चलाया मायाबी राक्षस "रे भाई लक्ष्मण मैं मरा"! यह कह कर चिंघार कर धरती पर

गिर पड़ा। सीता ने कुटीर से शब्द सुन अपने मन में यह विचारा कि रामचन्द्र जी पर कोई विपद पड़ी होगी नहीं "लक्ष्मण"! कह कर क्यों पुकारते यह सोच लक्ष्मण जी से कहा कि तुम जाकर देखो राम चन्द्र ने तुम्हें किस कारण बुलाया है जाने किसी राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया हो। लक्ष्मण जी ने कहा ऐसा ब्रह्माण्ड में कौन है जो राम चन्द्र जी को पकड़ सके; वह मुझे तुम्हारी रक्षा के कारण छोड़ गये हैं, तुमको छोड़ कर क्योंकर जासक्ता हूं। सीता ने लक्ष्मणको भर्त्सना करके कहा, एक भाई ने तो राम चन्द्र का राज्य लिया है और तुम मुझे लेने की चाहना से राम चन्द्र की रक्षा करने को नहीं जाते हो। लक्ष्मण ने कहा आप मुझे इतनी भर्तसना क्यों करती हो। राम चन्द्र मेरे भाई हैं परन्तु मैं उनको अपने पिता के समान जानता हूं और आपको माता कर मानता हूं अतएव ऐसे कटु बचन मेरे से मत कहो। मैं रामचन्द्र जीकी आज्ञा से यहां हूं जो आप आज्ञा दें तो मैं तिलार्द्ध बिलम्ब नहीं करता अभी चला जाता हूं सीता ने कहा अच्छा तो शीघ्र जाकर देखो कि राम चन्द्र क्यों पुकारते हैं। यह बात सुन लक्ष्मण ने धनुष से सीता के आस पास एक रेखा खींच दी और सीता से कहा मैं राम चन्द्र जी के उद्देश में चला आप घर में

रहिये रेखा के बाहर कदाचित् मत निकलना सीता ने कहा अच्छा मैं न निकलूंगी तुम जाओ॥

रावण ने यह सब बातें दूर से सुन लीं। जब लक्ष्मण चले गये तो रावण रथ से उतर एक ब्रह्मचारी का भेष धारण कर सीता के कुटीर के सामने आ खड़ा हुआ और सीता से भिक्षा मांगी। कुटीरमें जो कुछ फल मूल था सीता ने वह सब लेकर रेखा के अन्दर रख दिया छद्म बेषी रावण रेखा के भीतर से भिक्षा न ले सका और सीता ने कहा मैं रेखा से बाहर नहीं आसक्ती तुम यहीं से भिक्षा लेलो तब ब्रह्म चारी वेषी रावण ने कहा कि मैं भीतर से भिक्षा नहीं ले सक्ता जो तुम बाहर आकर भिक्षा न दोगी तो मैं तुमको शाप दूंगा सीता ब्रह्म शाप से डर लक्ष्मण के उपदेश को लंघन कर रेखा के बाहर भिक्षा देने निकली परन्तु जों बाहर आई रावण ने उनका हाथ पकड़ लिया सीता ने कहा अरे पापी तू यह क्या कुकर्म करे है मेरा अंग स्पर्श मतकर। रावण ने कहा सीता तुमने मुझे नहीं पहिचाना। मैं दश मुख रावण हूं तुम मेरे ऊपर अनुकूल हो। मैं तुम्हें राजेश्वरी करूंगा और इन्द्र की अमरावती से भी उत्तम जो मेरी पुरी है उसमें तुम्हें रक्खूंगा। मेरी जितनी राणी हैं वह सब तुम्हारी दासी होकर सेवा करेंगी और जब तुम अन्न दोगी तब खाने पावेंगी और

मैं तुम्हें मणि माणिक्य आदि से भूषित करूंगा। अतएव बन बन में भ्रमण कर राम की सेवा में जन्म निष्फल क्यों खोती हो चलो मेरी राजेश्वरी होकर सुख से रहो ॥

रावण की यह बात सुन सीता ने कहा अरे दुरात्मा तू राम की निन्दा क्यों करता है राम केशरी और तू शृगाल है। राम तुझे वंश समेत विनाश करदेंगे यह बात सुन रावण ने अपनी निज मूर्ति धारण कर दांत पीसकर उन्हें डराया तब सीता अत्यन्त भीता हो कहां राम! कहां लक्ष्मण! कहकर रोने लगीं। रावण ने खींचकर उन्हें रथ पर चढ़ा लिया और लंका की ओर चल दिया-सीता चिल्ला २ कर राम लक्ष्मण का नाम लेले-कर रोने लगीं और अपने मन में पछिता के कहने लगीं कि हाय मैंने लक्ष्मण को क्यों भेजा जो लक्ष्मण मेरे पास होते तो ऐसी दुर्गति मेरी न होती। फिर इस अभिप्राय से कि राम लक्ष्मण को उनका पता लगे जगह २ अपने अलंकार फेंकती गईं। रावण ने सीता के रोने पर कर्ण पात न किया और सागर पार लंका में लेगया वहां जाकर उन्हें नाना प्रकार से समझाने लगा कहा हे देवी तुम वृथा क्यों परिताप करती हो मैं इस लंका का राजा हूं और तुम मेरी राणी होकर सुख से अन्तःपुर में रहो। सीता ने कहा तुम दुराशा परित्याग करो मेरे

प्रभु राम हैं वही मेरे पति और मेरी गति हैं। उन बिना मैं किसी दूसरे को नहीं जानती तुम मुझे हरकर लाये हो इस कारण रामचन्द्र तुम्हें कुलसमेत बिनाश करेंगे॥

यह बात सुन रावण निरास हुआ परन्तु राम सीता के अन्वेषण में निश्चय आवेंगे यह जान राक्षसों का जगह २ पहरा नियुक्त कर दिया और सीता को अन्तःपुर में न रखकर अशोक बन में रक्खा। वहां नाना मूर्ति धारिणी भयंकरी निशाचरी गण उनको वेष्ठन करे रहतीं और सदा यह सीख देती और कहती कि तुम रावण के अनुगत हो जाओ। इस में जोसीता कुछ अच्छा उत्तर नहीं देती तो वह उन्हें भर्त्सना करती। कोई मारने को उठती विशेष उन पर सूर्पनखा का बड़ा क्रोध था वह सदा उनपर दांत पीसती और मारने को आती परन्तु केवल रावण के डर से कुछ न कर सकी ऐसी दुरावस्था में सीता अशोक बन में वृक्ष के तले रहतीं। कभी २ फल अहार करतीं और मलीन वेशा और मुक्त केशा हो रामको स्मरण कर रात्रि दिन रोती रहती। उधर जब रामचन्द्र जी मृग को बिनाशकर कुटीर को आने लगे तो पंथ में लक्ष्मण को देखकर कहाकि भाई तुम सीताको अकेली क्यों छोड़ आये हो। लक्ष्मण ने कहा सीता ने आप की चितकार ध्वनि सुनकर मुझे

आप के अन्वेषण में भेजा है मैंने उन्हें एकाकिनी छोड़ना न चाहा था परन्तु उन्होंने मुझे बहुत भर्तसना की इसीकारण मैं आया हूं तब दोनों भाई घर को आये और देखा कि सीता नहीं है। कुटीर सूनी पड़ी है इसमें दोनों के शरीरपर जो बज्रा-घात हुई। रामचन्द्रजी शून्य गृह देख ज्ञान शून्य हो विलाप करने लगे तब उच्च स्वर से सीता २ कहकर पुकारने लगे और सारे बन नदी गिरि गुहा इत्यादि में अन्वेषणकर डाला परंतु किसी जगह सीता का पता न लगा दोनों भाई व्याकुल हो फिर रोने लगे और अहार निद्रा आलस्य त्यागकर सीता के अन्वेषण में द-क्षिणाभिमुख कोगमन कियाकुछ दूर जाकरकुश बन में प्रबेश कर देखा कि कानन में सीता का एक अलंकार पड़ा है कुछ दूर जा उनकाडाला हुआ एक बस्त्र पाया इसी बिधि दण्डकारण्य पार हो पम्पानदी के तट पर ऋष्यमूक पर्व्वतपर नल नील सुग्रीव हनुमान सुषेण आदि बीरों से भेट की। सुग्रीव किष्किंधा का राजा था। बालि राजा उससे राज्यदारा छीन आप राजा होगया था इसी कारण वह निराश हो पर्व्वत पर रहते थे- उन्हों ने देखा था कि रावण एक नारी को रथ पर चढ़ा कर लिये जाता है और उस नारी का फेंका हुआ एक अलंकार उठा रक्खा था जबवह अलंकार देखाया तो रामचन्द्र

जी ने जाना कि लंकाधिपति ने मेरी रमणी हर ली है। अतएव सुग्रीव को अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया सुग्रीव ने कहा कि जैसे तुम विपद ग्रस्त हो मैंभी वैसाही हूं अतएव तुम मेरे राज्य पाने में सहायता करो मैं भी तुम्हारी सीता के उद्धार का उपाय करूंगा राम सम्मत हुये और अग्नि को साक्षी कर दोनों ने वचन किया और रामचन्द्र ने बालि को विनाश कर सुग्रीव को राज्य दे दिया तब वर्षा ऋतु आने करके चार महीने वहां रहना पड़ा तदन्तर सुग्रीव और दक्षिण देश के और २ भूपति गण अपनी २ सेना ले सागर तट पर पहुंचे और वहां से हनुमान को सीता के उद्देश के लिये लंका में भेजा॥

हनुमान समुद्र पार हो एक महीने में लंका में पहुंचा; वहां पहुंच राक्षसों के भय से दिन को छिप रहा रजनी समय क्षुद्र भेष में रावण के अन्तःपुर में प्रवेश कर देखा कि एक मन्दिर में कुंभकर्ण पड़ा सोता है और एक मन्दिर में रावण एक परम रूपवती नारी के साथ मणिजटित पर्यंक पर निद्रित है; उन के चारों ओर शत शत अपूर्व्व वेश भूषा धारिणी कामिनी गण नाना विध यंत्रों से गीत वाद्य कर रही हैं। हनुमान ने रावण के पास नारी को देख पहिले जाना कि यही सीता होगी परन्तु वह मन्दोदरी थी हनुमान ने इसी प्रकार से और मन्दिरों में और और बहुत

सी स्त्री देखीं और सुवर्ण मणि माणिक्य आदि से रावण की पुरी इन्द्र पुरी से भी अधिक शोभायमान पाई परन्तु किसी जगह सीता देवी का पता न लगा। तब वृक्ष पर चढ़ इधर उधर दृष्टि की तो रावण की पुरी के संलग्न नाना भांति के पुष्प से सुगन्धित और नाना विधि मधुर अलापी और अति सुखर पक्षियों से परिपूर्ण और जगह२ सुवर्ण नाट्यशालाओं से सुशोभित एक रम्य-कानन में भयानक मूर्ति धारी राक्षसी गण को भ्रमण और कलरव करते देखा हनुमान ने जाना कि सीता यहीं होंगी। यह सोच एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़कर चारों ओर निरीक्षणकर देखा कि राक्षसी गण से पीड़ित एक युवती नारी मलीन वसन परिधाना म्लान बदनादी एक वृक्ष की जड़ में बैठी राम२ कर रोदन कर रही है यह देख हनुमान को बड़ा शोक हुआ एक बार मन में आई कि राक्षसियों को विनाशकर इन को यहां से ले जाऊं। हनुमान यह सब चिन्ता कर रहा था इतने में रावण की आंख खुली देखा कि सुन्दर चांदनी खिल रही है और मंद २ सुशील वायु संचालित हो रही है इस से चञ्चल चित्त हो रावण मन्दोदरी आदि कामिनीगण को साथ ले अशोकवन में सीता के पास आये हनुमान यह देखकर जिस वृक्ष के तले सीता बैठी थी उस के आड़ में छिप रहा सीता रावण को देख डर कर

कम्पमाना हो वस्त्र से अङ्ग छादन कर? वृक्ष स्थल पर हस्तावरण किया। रावण ने कहा सीता यह लङ्का देवताओं के लिये अगम्य है तुम्हें क्या डर है राम की सेवा में तुम्हारा यौवन वृथा जाता है अब उस की क्यों चिन्ता करती हो वह नर है कुछ अमर नहीं इतने दिनों किसी राक्षस ने खालिया होगा अतएव उसकी चिन्ता में शरीर को क्यों शीर्ण करती हो देखो मैं लङ्का का अकेला राजा हूं मेरे डर से देव, दानव, गन्धर्व सब डरते हैं तुम मेरी राणी होकर सुख से कालयापन करो। सीता ने कुछ उत्तर न दिया रावण ने कहा मैं तुम को हरण करके लाया हूं इस कारण तुम क्रोध कर सक्ती हो परन्तु हम राक्षस की जाति हैं बल छल से सब कार्य करते हैं यह हमारा जाति धर्म है अतएव मेरे पर कृपा करो। यह कह कर दशानन सीता के चरणों पर गिर पड़ा और कहा देखो रावण का जो शीस किसी के निकट नत नहीं होता सो तुम्हारे पदानत है अतएव मेरे पर प्रसन्न हो और दुख मत दो। रावण ने सीता के सन्मुख जब शीस झुकाया तो सीता ने मुंह फेर लिया और कहा जो तू अपनी भली चाहे है तो मुझे रामचन्द्र जी के हाथ सौंप दे और उन के साथ प्रीति कर ले नहीं तो वह तुझे वंश समेत विध्वंस और लंकापुरी का नाश कर डालेंगे और

सुनो कोई गुरु जन के सिवाय और किसी के प्रदानत नहीं होता जब तुम मेरे प्रदानत हुए और मेरे चरण धारण किये तो अब मुझे कुछ अश्लील भाषा मत कहना। मैं राम की रमणी हूं और राम बिना किसी को नहीं जानती और न जानूंगी॥

यह बात सुन रावण ने क्रोधान्वित हो कहा कि देख दस महीने तुझे हरण करके लाया हूं दो महीने और तुझे कुछ नहीं कहता फिर जो होना है सो होगा। सीता ने कहा तुम्हारी मृत्यु निकट आती जाती है। यह कह कर बहुत मिष्ठ भर्त्सना की रावण ने जलदग्नि सम प्राय हो सीता के विनाश के लिये खड्ग उठाया रावण के संग की कामिनी गण ने सैन से कहा जो रावण कहे सो मान ले सीता ने न माना और फिर भर्त्सना करने लगीं मदनोन्मत्त रावण तब खड्ग निक्षेप कर सीता के अंग हस्तार्पण करने को उद्यत हुआ तब मन्दोदरी राणी ने कहा "जो यह करोगे तो नल कुबेर का शाप तुम्हें फलेगा" और तुम मर जाओगे॥

रावण यह बात सुन कुण्ठित हुआ परन्तु प्रहरी राक्षसीयों को कह गया कि सीता को अच्छे प्रकार से समझाओ। राक्षसी गण उन को नाना भांति से समझाने लगीं कोई खड्ग कोई दण्ड ले उन्हें मारने उठती और कहतीं तेरे कारण

हम ने इतना दुख पाया। आज तुझे मार ही डालेंगे अधिकन्तु उन पर शूर्पनखा का बड़ा कोप था वह कहती इसी रांड़ के कारण मेरे नाक कान काटे गये; ऐसी जी में आवे है कि नख प्रहार कर इस का शिर तोड़ कर फेंक दूं। निशाचरी गण इसी प्रकार के कटु कटाक्ष कहने लगी सीता मन २ में राम का स्मरण करने लगीं। कुछ समय पीछे त्रिजटा नामी एक राक्षसी ने किसी परामर्श के लिये और २ राक्षसीयों को बुलाया इस कारण जब सीता से सब अलग हो गईं तो हनुमान वृक्ष पर से उतरे और सीता को अपना वृत्तान्त कह सुनाया और जो २ काम श्री राम चन्द्र जी उन के उद्धार के लिये कर रहे थे सब कह सुनाया। सीता यह सम्वाद सुन बड़ी प्रफुल्ल हुईं और हनुमान का यथेष्ट आदर किया। तब हनुमान को यह बात कह बिदा किया कि मैं दस महीने से केवल राम स्मरण कर इस अवस्था में हूं और दो महीने में जो वह मुझे उद्धार न करें तो इस जन्म में फिर उन से मिलने न आऊंगी। हनुमान ने कहा जननी और दो महीने की बाट देखने का क्या प्रयोजन है चलो मैं तुम्हें अभी कन्धे पर चढ़ाकर यहां से ले जाता हूं सीता ने कहा बेटा यह उचित नहीं जो ऐसा करोगे तो रावण की न्याईं तुम्हारा भी अपहरण अपवाद होगा। रावण को विनाश करके मुझ को उद्धार

करो कि बीरत्व प्रकाश हो और सब का सुख उज्वल हो। यह सुन हनुमान सीता से बिदा हुआ मार्ग में राक्षसों ने पकड़ लिया परन्तु उसे मार न सके और उसकी पूछ में कपड़ा लपेटकर आग लगा कर छोड़ दिया इस में अपनी ही हानि की क्योंकि हनुमान प्रज्वलित पूछ समेत सारी लंका में फिर गया और बहुत से घर जला दिये लंका श्री भ्रष्ट हो गई तब हनुमान सीता का सम्बाद ले किष्किंधा में फिर आये राम लक्ष्मण सुस्थिर हुए और सीता के उद्धार का उपाय करने लगे॥

जब हनुमान लंका से चला गया तो राक्षस बड़े डरे बिचक्षण बिभीषण ने कृतांजली हो रावण से कहा सीता के कारण राज्य में बड़ी बिपद उपस्थित हो रही है इस राज्य नाश मूलक नारी को क्यों रक्खो हो उस रामचन्द्र जी के निकट भेज दो कि राज्य का मंगल हो। नहीं तो हम सब को बंश समेत बिनाश होना पड़ेगा रावण ने यह बात सुन कोपाविष्ट हो विभीषण को एक लात मारी। विभीषण ने यह अपमान पा लंकाको परित्यागकर रामचन्द्र जी की शरण ली। रामचंद्र जी ने विभीषण से बहुत स्नेह किया और यह बात कह उन्हें आज्ञा दी कि रावण को मार तुम्हें लंकाधिपति कर दूंगा। तब बानरों ने समुद्र पार गमन करने के निमित्त रामचंद्र जी

की आज्ञा से समुद्र पर पत्थर से एक सेतु बांधा, इस सेतु को अब तक सेतुबंध रामेश्वर कहते हैं। उस सेतु से लक्ष्मण समुद्र पार होकर सेना समेत राम लक्ष्मण लंका में आये। जब रामचंद्र लंका में पहुंचे तो रावण ने अपनी पुरी के द्वार रूठ कर लिये तब मंत्री गण सहित परामर्श कर बंधु समेत रण में आया रामचंद्र जी ने जाना कि इस के ऐश्वर्य का अन्त नहीं। जब रावण रणभूमि में उपस्थित हुआ तो दोनों पक्षों में महाघोर संग्राम आरम्भ हुआ तब राम रावण के सन्मुख हो युद्ध करने लगे रामचंद्र जी ने रावण के मस्तक का रत्न मुकुट चूर्ण कर डाला। रावण लज्जित हो रण छोड़ अपनी पुरी को भाग गया तब रामचंद्र जी ने उसके पीछे अंगद को भेजा। अंगद ने जाकर रावण को अनेक भर्त्सना किई लंकेश्वर ने लज्जित हो अनेक २ सेनापति भेजे बड़ा भारी युद्ध हुआ और बहुत राक्षस मारे गये तब रावण का पुत्र इंद्रजीत सेनाध्यक्ष हो रण में आया और राम लक्ष्मण को नागफांश से बांध डाला। बड़े कष्ट पा राम लक्ष्मण उस कष्ट से मुक्त हुये। तब महापार्श्व और महोदर और रावण के और चार पुत्र युद्ध को आये। यह भी सब सेना समेत मारे गये॥

तब रावण राजा ने उन के मारे जाने का सम्बाद सुन इन्द्रजीत को सुसज्जित कर फिर रण में

भेजा इन्द्रजीत बड़ी धूमधाम से आया और घोर युद्धकर राम लक्ष्मण और सब सेना पतियों को मूर्छित किया रावण यह सम्वाद पा बड़े आनन्द को प्राप्त हुआ और इन्द्रजीत का बड़ा समादर किया इस युद्ध में रामचन्द्र जी की बहुत सेना मारी गई विभीषण ने एक बूटी मंगवाकर उन सब को सुंघाकर आरोग्य कर दिया वह सबफिर युद्ध करने लगे इस में रावण बहुत डरा और कुम्भकर्ण को जगाया। कुम्भकर्ण अब तक निद्रित था वह युद्ध का वृत्तान्त कुछभी नहीं जानता था। जब जागा तो सैन्य सामंत ले रण में आया और रामचन्द्र जी की सेना में खल बलि मचादी और एकही बार दशदश बीस२ बानरों को पकड़कर मार डाला। कुंभकर्ण का युद्धाडम्बर और प्रकाण्ड आकार देख रामचन्द्र बहुत डरे। और मनमें कहने लगे कि जो ऐसे२ महाबीर लंका से युद्ध करने आवेंगे तो सीता के उद्धार होने की कुछ आशा नहीं तब धनुःशर हाथ में ले युद्ध को अग्रसर हुये कुम्भकर्ण ने मुंह फाड़कर चाहा कि उन्हें ग्रास कर जाय परन्तु रामचन्द्र जी ने ताक कर ऐसा बाण मारा कि उस के प्राण बियोग हो गये और सब सेना भाग गई। कुंभकर्ण के मरने से रावण एकही बार उद्यम भंग हो गया उस ने देखा कि बहुत सेना मारी गई और रामचंद्र की सेना लंका के घर

बार जलाकर लंका का नाश कर रही है इससे और भी मनस्ताप पा अपने पुत्र महाराक्ष को युद्ध में भेजा महाराक्ष भी युद्ध में मारा गया तब कुम्भ निकुम्भ नाम कुंभकर्ण के दो पुत्र युद्ध को आये यद्यपि यह अपने पिता के तुल्य महावीर थे परन्तु सुग्रीव के हाथ से मारे गये और उनके साथ और बहुत से राक्षस भी मारे गये तब इन्द्रजीत छोड़ रावण का और कोई सेनापति न रहा; अतएव रावण ने इन्द्रजीत से कहा कि तुम शत्रु विनाश कर आओ। इन्द्रजीत ने पिता की आज्ञा पाय युद्ध आरंभ किया परन्तु अवशेष पराजित हो लंका में भाग गया और रामचन्द्रजी के विनाश के लिये यज्ञ करने लगा बिभीषण ने यह जानकर लक्ष्मण से कहा कि इन्द्रजीत ने यज्ञ आरंभ किया है जो यह यज्ञ सम्पूर्ण होजावे तो उसको मारना कठिन होगा परन्तु जो यज्ञ नष्ट कर दिया जावे तो वह निश्चय मारा जायगा; हनुमान ने यह बात सुन यज्ञ नष्ट कर डाला तब लक्ष्मण ने इन्द्रजीत को मार डाला। इंद्रजीत के मारे जाने से रावण बहुत कुपित हुआ और सैन्य समेत आप रण में आया रावण का आना देख लक्ष्मण उसके सम्मुख हुये लक्ष्मण के साथ बिभीषण भी गया रावण ने बिभीषण को देख मन में जाना कि यही पापी सब अमंगल का मूल है इसी से मेरा वंश विध्वंस हुआ है अतएव इसी को पहिले मारना

चाहिये यह सोच लक्ष्मण पर बाण न मारा और विभीषण पर बाण बरसाने लगा लक्ष्मण ने अपने बाण से उन सब बाणों को निवारण किया तब लंकाधिपति ने विभीषण को छोड़ लक्ष्मण पर बाण बरसाना आरम्भ किया लक्ष्मण ने असाधारण साहस से संग्राम किया अवशेष रावण ने अग्नि बाण से लक्ष्मण का वक्षस्थल ऐसा भेदन कर डाला कि उनके मुख से रुधिर बहने लगा यह देख रामचन्द्र रोने लगे। तब राम रावण का बड़ा युद्ध हुआ रावण ने बड़े बल और साहस से युद्ध किया और एक बार रामचन्द्र जी को अस्थिर कर डाला अवशेष रामचन्द्र जीने रावण को वध कर डाला॥

जब रावण मारा गया तो सब राक्षस भाग गये और रामचन्द्र जी अपनी अंगीकार अनुसार विभीषण को लंकाधिपति कर दिया और मन्दोदरी को विभीषण की राणी कर दी। तब हनुमान शुभ सम्बाद ले अशोक बनमें सीता के पास गया सीता तब तक यह नहीं जानती थी कि रावण मारा गया हनुमान ने जब यह वृत्तान्त कह सुनाया तो बड़ी आनन्द हुई और कुछ काल तक मारे आनन्द के बोल न सकी हनुमान ने कहा जननी मैं ऐसा शुभ सम्बाद लाया आपने कुछ उत्तर नहीं दिया इसका कारण क्या है? सीता ने कहा बेटा तुम जो सम्बाद लाये हो

मणि माणिक्य अर्घ देकर तुम्हारा उचित पुरस्कार नहीं कर सकी. हनुमान ने कहा मुझे अर्घ आभरण से क्या प्रयोजन है जो मुझे प्रकृत रूप से परितुष्ट करने की वासना है तो आज्ञा दीजिये कि इन सब राक्षसियों को जिन्हों ने आप के अंग पर हाथ उठाया था उनका मुंह रेत में घिस घिस कर मार डालूं और सागर तट पर पत्थर पर पछाड़ पछाड़ कर सिर तोड़ डालूं यह बात सुन राक्षसीगण रोने लगीं। सीता ने कहा कि इन्हों ने मुझे क्लेश तो दिया परन्तु अपनी इच्छा से नहीं दिया केवल रावण की आज्ञा से दिया है इसकारण उनका कुछ अपराध नहीं उनको दण्ड देना उचित नहीं हनुमान यह बात सुन सीता को प्रणाम कर विदा हुआ।

तब रामचन्द्र जी के पास आकर सम्वाद दिया रामचंद्र जी ने सीता को लाने के लिये बिभीषण को भेजा बिभीषण सोने का चतुर्दोल लेकर लेने को गया और उनकी कन्यागण नानाप्रकार के सुगन्ध द्रव्य से सीता को स्नान करा उत्तम भूषण बसन परिधान कराया। तब बिभीषण उनको चतुर्दोल में चढ़ा कर बड़ी समारोह से रामचन्द्र जी के पास ले चले तब सब निशाचर नारी गण उन्हें देखने को बाहर निकलीं और अपना २ दुःख स्मरण कर कहने लगीं हे सुन्दरी

तुम तो अब स्वामी सम्भाषण को चलीं परन्तु तुम्हारे कारण हम कोई पति, कोई पुत्र, कोई भ्राता, कोई जामाता, कोई परोसी, कोई कुटुम्ब, खो बैठीं तुम्हारे आने से लङ्का का नाश हो गया। इसी प्रकार बहुत खेद करने लगीं॥

जब सीता का चतुर्दोल रामचन्द्र जी के कटक में पहुंचा तब उन्हें देखने को बहुत से लोग घिर आये। रामचन्द्र और लक्ष्मण और २ बंधु बान्धव गण समेत सभा किये बैठे थे। जब सीता रामचन्द्र जी के सम्मुख लाई गईं तब रामचंद्र जी को साष्टाङ्ग प्रणाम करके सभा में उनके सम्मुख खड़ी हुईं। सीता को देख रामचंद्र जी के नयन युगल से आनन्द अश्रु विगलित होने लगे परन्तु उनके मन में एक खटका हुआ मनही मन में यह चिन्ता करने लगे कि सीता चौदह मास लंका में रहीं इस में उनकी सतीत्व रक्षा पर सन्देह हो सक्ता है इस कारण इन्हें ग्रहण करना उचित नहीं और सीता से कहा कि मैं इस कारण तुम्हें ग्रहण नहीं कर सक्ता तुम सुग्रीव राजा अथवा लंकाधिपति विभीषण जिनके निकट जी चाहे चली जाओ अथवा अपने देश में भरत शत्रुघ्न हैं उनके निकट चली जाओ मैंने तुम्हें परित्याग किया। यह बात सुन सीता रोकर कहने लगी हे परमेश्वर! हे सर्वेश्वर! आपने मुझे किस अपराध से परित्याग किया यह मैं नहीं

जानती। आप बाल्यावस्था से मेरी प्रकृति उत्तम प्रकार से जानते हैं मैं पर पुरुष को जानती भी नहीं क्या रावण मुझे हर लेगया था इसी कारण मैं अपराधिनी हुई? मैं एक मुहूर्त्त को भी पर पुरुष को अपने हृदय में स्थान नहीं देती। रात्रि दिन तुम्हारे श्री चरण स्मरण किया करती हनुमान मेरी अवस्था देखआया है और आपसे कहा होगा आप को इस बात के सुनने से भी जो यह ही मनस्य था कि मुझे त्याग कर देते तो मुझे पहिलेही नहीं कहला भेजा कि मैं विष पान कर अथवा अग्नि में प्रवेश कर प्राण त्याग देती और जो मुझे असती जानते थे तो सागर बंधन कर रावण संग संग्राम करने का और मुझे उद्धार करने का क्या प्रयोजन था? आपने किस प्रयोजन और किस कारण से इतना क्लेश स्वीकार किया? मैं निर अपराधिनी हूं। आप अकारण मुझे परित्याग करते हैं जो मेरे कारण आप को लज्जा आती हो तो मुझे अग्नि कुण्ड प्रस्तुत करवा दें कि मैं उस में प्रवेश कर ऐसे अपमान से निष्कृति पाऊं। ऐसी २ बातें सुन कर भी रामचन्द्र जी के मनमें कुछ दया न आई उन्हों ने झट अग्नि का कुण्ड प्रस्तुत करा दिया। सीता सात वार अग्नि को प्रदक्षिण कर अग्नि को सम्बोधन कर कहने लगीं हे पावक! हे पाप नाशक! तुम पापपुण्यसब देख सक्ते हो जो मैं सतीत्व में स्थिर हूं तो तुम्हारे

निकट आओ यदि मेरे शरीर में कुछ भी पाप हो तो तुम मुझे अभी भस्म कर डालो। यह कहकर जलती अग्नि में प्रवेश किया। यह देख कर सब लोग अति आश्चर्य हुये रामचन्द्रजी मनमें चिन्ता करने लगे कि हाय! जिस सीता को साथ ले चतुर्दश वर्ष वनमें भ्रमण किया रावण से इतना युद्ध किया अवशेष उसी सीता ने अग्नि में प्रवेश किया हाय! क्या हुआ! इस से अधिक दुःख और क्या होगा! यह कह कर रोने लगे। सब इसी प्रकार से अनुताप कर रहे थे इतने में देखा कि सीता परम आनन्द से अग्निमें बैठी हैं कि उनके शरीर के आंच भी नहीं लगी उनके मस्तक पर जो पुष्प थे वैसेही प्रफुल्ल हैं जैसे थे तब रामचन्द्रजीने सीता को आलिंगन कर अपने सिंहासन पर उपवेशन कराया। जब सीता की परिक्षा होचुकी तब रामचन्द्रजीने विभीषण से विदा हो सब सैन्य सामंत ले सीता के सहित अति आनन्द से अयोध्या पुरी को गमन किया और वहां पहुंच कर बड़ी सभा किये और उत्साह से राज्य पाट करने लगे॥

राणी भवानी का वृत्तान्त॥

(चित्र संख्या ६)

जिला राजशाही में आत्माराम चौधरी की एक परम सुन्दरी कन्या राणी भवानी नामक थी। नाटोर के राजा रामकान्तराय से उस

चित्रसंख्या ६ पृष्ठ ८०



कन्या का विवाह हुआ। राणी भवानी ने बाल्य काल में विद्या नहीं सीखी थी परंतु वह बड़ी धर्म निष्ठा और देव भक्ता थीं और बाल्यकाल के संस्कार से अपने श्वशुर लोकांतर गमन के पीछे राज राणी होकर केवल धर्मानुष्ठान और पर उपकार में एकान्त चित्त होकर जो कीर्त्ति छोड़ गईं वह बहुत दिनों तक स्मरण रहेगी॥

जब राजा रामकांत राय राज्य प्राप्त हुये तब वह अठारह वर्ष के थे और राणी भवानी उस समय पन्द्रह वर्ष की युवती थीं। राजा रामकांत उनसे अतिस्नेह किया करते परंतु राज्य प्राप्ति के पीछे राणी भवानी और राजा रामकांत पर बड़ी भीड़ पड़ी थी। नवाब अलीवर्दीखां के आज्ञानुसार सैनिक पुरुषों ने आकर राजा रामकान्तराय का राज मन्दिर घेर लिया और नवाब की आज्ञानुसार राजा रामकान्त का भतीजा देवीप्रसाद राजा होगया। वह सब सेना राज भवन में प्रवेश कर धन द्रव्यादि लुन्ठन करने लगे जब उनका घर लुटने लगा तो राजा राम कान्त अन्तःपुर में थे और राणी भवानी उस समय प्रथम बार गर्भवती हुईं थी यह सुनकर कि राज सेना ने लूट आरंभ की है राजा राम कान्त अति व्याकुल हुये और अपमान के डर से राणी भवानी का हाथ पकड़ राज पुरी के एक खिड़की में से भाग निकले बहुमूल्य

द्रव्यादि कुछ साथ न लिसके केवल राणी भवानी के अंग के आभरण उन के साथ थे। राणी भवानी एक तो राज राणी तिस पर गर्भवती होने के कारण चल न सकीं। राजा राम कान्त ने उनके साथ कुछ दूर जाकर एक नौका में चढ़ पद्मा नदी पार हो नवाब के धन रक्षक जगत शेठ के शरणागत होकर रहे और कुछ दिन भेष परिवर्त्तनकर नवाब के राज भवन के निकट एक जगह छद्म भावमें रहे कुछ दिनों में राणी भवानी के अंग के अलंकारादि और एक मनुष्य दयाराम नामी के कौशल से अपने राज्य को फिर प्राप्त हुये और देवीप्रसाद सिंहासन से उतारा गया तदन्तर राजा राम कान्त सोलह वर्षतक राज्य करके परलोक प्राप्तहुये। प्रश्न ले लिखा गया है कि जिससमय राजा राम कान्त राज्य से उतारे गये राणी भवानी उससमय अन्तःसत्त्वा थीं सो उनके गर्भ से एक पुत्र जन्मा था परन्तु वह पुत्र और एक पुत्र जो उसके पीछे जन्मा था दोनों मर गये। उसके पीछे केवल एक कन्या जीवित रही उसका नाम तारावती था। राणीभवानी जब सधवा थीं तब उनका दान आदि अधिक नहीं था क्यों कि सब धन उनके हस्तगत नहीं हुआ था परन्तु तथापि नित्त नेमक्रिया और व्रत आदि सदा किया करतीं। उसके सिवाय मन्दिर स्थापन; जलाशय खनन; अन्नवस्त्र दान; और दरिद्र

दुखियारों की कन्याओं के बिवाह, और इसी प्रकार परहित कर कर्म किया करतीं और प्रथम से देवता, गौ, ब्राह्मण आदि पर उनकी बड़ी भक्ति थी और जब कोई वस्तु अच्छी प्रस्तुत होती तो देवतों को चढ़ाये बिना कभी ग्रहण नहीं करतीं। कहते हैं कि राजा रामकान्त ने २६००) रुपये के दो मोती की माला मोल लेकर विचारा कि एक माला राणी को दूसरी माला जैकाली विग्रह को चढ़ा दें। एक माला उनमें से अच्छी और दूसरी कुछ मन्दी थी राजा ने विचारा कि अच्छी माला राणी को और मन्दी देवी जी को दें; परन्तु राणी भवानी ने दोनों माला देख अच्छी माला विग्रह के लिये रख कर मन्दी आप पहिन ने का मनस्थ किया तिस पर राजा ने अपनी अभिप्राय प्रकाश की। राणी भवानी ने कहा कि तो दोनों की-ही बाञ्छा पूरी होने दो और दोनों माला देवी को चढ़ा दो इसी प्रकार की बजत से दृष्टान्त उनके देव भक्ति के और भी हैं। राजा रामकान्त के लोकान्तर प्राप्ति के पीछे सबधन राणी भवानी के हस्तागत हुआ और दान पुण्य आदि कर्म में पहिले से भी अधिक मुक्त हस्ता हुई। उनकी यह बाञ्छा थी कि अपनी कन्या का बिवाह करके गङ्गा बासिनी हों इसी अभिप्राय से रघुनाथ नामक एक कुलीन

ब्राह्मण को अपनी कन्या दान की और अपना सब धन उसे दे दिया; परन्तु वह हतभाग्य ब्राह्मण कुमार विवाह के कुछ दिन पीछे काल कर गया इसी कारण वह अतुल ऐश्वर्य भोग से वञ्चित हुआ और राज नन्दिनी को भी चिर दुःखिनी किया। रानी भवानी जामाता के मरनेसे अत्यन्त व्याकुल हुईं और दान ध्यान आदि सुखों से भी कन्या की पतिहीनत्व यंत्रणा के कारण सदा दुःखिता रहतीं। तब रानी भवानी ऐसा दान करने लगीं कि उसके सुनने से आश्चर्य होता। वह ब्राह्मण, गङ्गाबासी, जगन्नाथ धामबासी, और महन्त और अतिथि लोगों को वर्ष को वर्ष एक लाख ८० सहस्र रुपया दान किया करतीं। वह लोग उस रुपये से देव सेवा अतिथि सेवा आदि नाना प्रकार के धर्म कर्म किया करते उसमें से पच्चीस सहस्र अध्यापक पण्डितों को दिया जाता, वह चतुस्पाठि स्थापन कर अनेक विद्यार्थीयों को विद्या और अन्न दान किया करते और यह वृत्ति चिरस्थायी होजावे इस वासना से रानी भवानी अपना राजस्व भुगता कर वर्ष को वर्ष एक लाख ८० सहस्र रुपया सरकारमें रख दिया करती। वृत्तिभोगी ब्राह्मण आदि सब लोग कई पीढ़ीयों तक सरकार से वह रुपया लेकर प्रतिपालित होते और लाखों को प्रति पालन करते इस रुपये के सिवाय रानी

भवानी ने बीरभूम, राजशाही, दीनाजपुर, रङ्ग-
पुर, मुर्शिदाबाद, यशोर, ढाका निवासी ब्रा-
ह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र चारों वर्णों को न्युनाधिक
पांच लाख बीघा धरती बिना राजस्व दे रक्खी
थी इससे बहुत दीन दुखियारी और और बहुत
से लोग सुख से काल यापन करते आये हैं॥
और राणी भवानीने काशी जी, गया जी और
राजशाही और कई बड़े २ नगरों में देवालय
स्थापन करवादिये थे। इसमें से काशीजी में जो
देवालय और अतिथि शाला स्थापन किये थे
वह अति प्रशंसा के योग्य हैं उस जगह उन्हों
ने अनेक मूर्त्ति आदि स्थापन की थीं इसके सि-
वाय कईसौ शिवलिङ्ग स्थापन किये थे और इन
विग्रह आदिके लिये पत्थरके मन्दिर बनवादिये
थे पक्के घाट और अतिथि शाला बहुत से ब-
नवा दिये थे और काशी जी में ३०० मन्दिर
ऐसे बनवादिये जिनमें तीर्थ वासी लोग रहा
करते और जो लोग अपना देश छोड़ काशीवास
करने की इच्छा करते वह उनको परिवार
समेत उन घरोंमें जगह देते और यावत्जीवन
उन्हें अन्न दान करते और जो वह मरजाते तो
शास्त्रानुसार उनका श्राद्ध आदि कार्य करादिया
करतीं। इसके सिवाय काशी के आस पास चारों
ओर थोड़े २ अन्तर पर एक २ ऊंचा चबूतरा
और एक २ कुंआ बनवा कर एक २ वृक्ष लगवा

दियाथा जो लोग बोझा लेकर चलते और पंथ चलने से श्रान्त पिपासा युक्त होते वह बिना सहारे अपना बोझ उतार कर चबूतरे पर रख देते और जलपान करके वृक्ष के नीचे विश्राम कर अपना बोझ बिना सहारे फिर शिर पर उठा चले जाते थे वह अब तक वर्त्तमान हैं और पांच कोस में एक २ कोस पर एक २ वृक्ष और एक २ कुंआ बनवा दिया था और पथिकों के रसोई बनाने के लिये पत्थर का एक २ घर, जल पात्र, और चावल फल मूल आदि प्रस्तुत रहते और जगह २ पथिक लोग स्वच्छन्द और आनन्द से विश्राम किया करते इसके सिवाय जगह २ सदावर्त्त दिया जाता और अपने घर पर नित्य प्रातःकाल एक पत्थर के कुण्ड में आठ मन चने भिगोये जाते थे और दीन दुखियारों को दिये जाते और अन्नपूर्णा के मन्दिर में नित्य पचीस मन चावल का भोग होता और देव देवीकी पूजा और भोग बड़ी धूम धाम से हुआ करता यह सब भोग का अन्न नाना प्रकार व्यंजन के साथ चार पांच सहस्र लोग भले प्रकार भोजन करते डंडी, कुमारी, साधु नित्य एकसौ आठजने अपनी इच्छानुसार भोजन किया करते और उनको एक मुद्रा दक्षिणा दिया जाता। जैसे मनुष्य पर दया और कृपा थी वैसिही जीव जंतुओंपर भी थी काशी के पांच कोस के बीचमें जहां २ पक्षी

आदि रहते वहां अनाज फेंका जाता और चींटियों के बिलके आगे सदा शक्कर और मिठाई डाली जाती। जब कि राणी भवानी काशीको गईं तो उनके साथ सवा सौ नौका गये थे और वर्ष की वर्ष चावल और और द्रव्यादि से परिपूर्ण सवा सौ नौका आया करते॥

ऐसे दान आदिके कारण राणी भवानी का नाम काशी में बड़ा उज्वल हो रहा है बहुत लोग उन्हें दूसरी अन्नपूर्णा कहा करते हैं। कहते हैं कि एक समय राजधानी से रुपया आने में कुछ विलम्ब हुआ था इस कारण राणी भवानी ने अमृत लाल नामक एक श्रेष्ठ धनवंतसे एकलाख रुपया का चरण मांगा श्रेष्ठ ने कहला भेजा कि बंगाला देशके छोटे २ लोग थोड़ी २ धरती के धनी होकर अपने को राजा औ राणी बतलाते हैं उनके धन सम्पत्ति का कुछ पता नहीं लग सकता। मैं राणी भवानी को नहीं जानता इस कारण रुपया नहीं दे सक्ता। रातको उस श्रेठने यह स्वप्ना देखा कि अन्न पूर्णा उसके पास आ-कर कहती हैं कि ओ निर्बोध तूने क्या किया। राणी भवानी ने तेरे से चरण मांगा तूने उसको क्या कहा। राणी भवानी और मेरे में कुछ भेद नहीं है। वह श्रेठ यह स्वप्ना देख अति भोर एक लाख रुपया ले राणी भवानी के मंदिर पर गया और कहा मैं राणी भवानी को जान न

सका था इस कारण नदेसका अब रुपया लाया हूं परंतु एक बेर उनके भी चरण के दर्शन करना चाहता हूं। राणी ने कहला भेजा कि यहां भेट नहीं होती अन्नपूर्णा के मंदिर पर होगी फिर शेठ ने जब राणी भवानी को अन्न पूर्णा के मन्दिर में पूजा करते देखा तो अन्न पूर्णा और राणी भवानी के आकार में कुछ भेद न देखा तब से राणी भवानी अन्नपूर्णा कहलाने लगीं। गया धाम में भी राणीभवानी ने अनेक पुण्य किया और देवालय स्थापन किये। कहते हैं कि जब वह गया को गईथीं तो वहां के दीन दुखियारियों को पांच लाख रुपया बांटा था॥

राणी भवानी सब दान अपने हाथ से नहीं किया करतीं इस कारण आज्ञा दे रक्खी थी कि दरिद्रदुखियारियों को पेातदार एक रुपया देसके और धन रत्नक एक रुपये से पांच रुपये तक और सुतसही पांच रुपये से ग्यारह रुपये तक और दीवान ग्यारह रुपये से सौ रुपये तक दान कर सके इतने दान तक राणीसे पूछने का कुछ प्रयोजन न था इस से अधिक दान देने के लिये राणी की आज्ञा लेनी पड़ती इसके सिवाय अपने अधिकारमें ब्राह्मण कन्याओं की विवाह के समय कन्यादान का सारा व्यय अपने पास से दिया करतीं दुर्गा पूजा के समय

वर्ष की वर्ष दो सहस्र पट्ट वस्त्र मोल लेकर कुमारी और सधवा स्त्रियों को एक २ स्वर्ण की नथ समेत दान दिया करतीं और नौ दिन तक प्रति दिन एक सौ कुमारी कन्याओं को सोने के अलङ्कार पहिना कर पूजा करतीं और वह अलंकार उन्हें सदा को दे दिया करतीं और देश बिदेशी ब्राह्मण पण्डितों को पचास सहस्र रुपया वार्षिक दिया करतीं ॥

राणी भवानी के राज्य में रोगियों की चिकित्सा करने के लिये आठ वैद्य नौकर थे वह वैद्य बड़े२ नगर और आस पास सात२ ग्रामोंमें रोगियों की चिकित्सा करते फिरा करते और उन आठ वैद्यों के दो २ नौकर रहा करते वह नौकर रोगीयों के लिये औषधि बनाने के लिये वैद्य के साथ जाया करते इसके सिवाय वैद्योंके साथ दो तीन कहार औषधि साथ लिये फिरा करते और पुराने चांवल मूंग की दाल और मिश्री आदि रोगीयों की पथ्य की सामग्री भी साथ ले जाते इन ग्रामों में जो कोई मरजाता उसका संस्कार आदि का व्यय राणी दिया करतीं और ग्राम के दीन दरिद्र लोगों के मरने पर ब्राह्मणों के सत्कार के लिये छः रुपया और शूद्रों के सत्कार के लिये तीन रुपया दिया करती थीं ॥

राणी भवानी को हिन्दू मुसल्मान सब बड़ा

मान्य करते हैं। कहते हैं कि राणीभवानी जब गया जी में पिण्डदान देने को गईं तो टिकारी के राजा ने कहा कि पाँच लाख रुपया लूंगा तब पिण्डदान करने दूंगा। राणी भवानी ने यह बात मुर्शिदाबाद के नवाब को लिखभेजी। नवाब ने मूंगेर के सूबेदार को आज्ञा दी कि उसके राज्य पर आक्रमण करो। तब राजा ने राणी के पास आकर गलबस्त्र होकर बड़ी बिनती करी और बिना कर लिये राणी को पिण्डदान करने दिया। परन्तु राणी ने अपनी इच्छा से उसे तीन लाख रुपया दे दिया कुछ समय पीछे जब वह राजा अपना राजस्व न दे सका तो नवाब ने उसे कारा रुद्ध कर लिया तब राणी भवानी ने उसका रुपया आप देना करके उसे छुड़ा दिया। राजा ने मुक्ति पाकर अपनी पगड़ी एक थाली में रख कर राणी के पास भेज कर यह कहला भेजा कि मैंने तुमसे अच्छा व्यौहार नहीं किया परन्तु आपने मेरा शिर मोल लिया है। जब अंगरेजों का राज्य हुआ तब राणी भवानी का वह भी बड़ा मान्य किया करते थे कहते हैं कि राणीभवानीसदा देव अर्चना में लगी रहती इसी कारण एकबेर उनके राज्य का ग्यारह लाख रुपया देनारह गया कलक्टर गोर साहब ने उनकी जिमी-दारी खण्डखण्ड करके बेच देने का मनस्थ किया

परन्तु रात्रि को साहब ने स्वप्न में देखा कि एक श्याम मूर्त्ति स्त्री खड्ग हाथ में लिये उसे डरा के कह रही है कि जो तुम राणी भवानी की धरती और किसी को दोगे तो इस खड्ग से तुम्हारा शिर काट लूंगी। अंगरेज लोग स्वप्न नहीं मानते परन्तु उस समय के साहब लोग पुन्याह के समय घटस्थापना कर अपने शिरपर मुकुट पहिन कर बैठा करते अतएव कुछ आश्चर्य भी नहीं कि वह स्वप्न भी मानते हों। यह स्वप्न देखकर गोर साहबने राणी भवानी की धरती और किसी को नहीं दी॥

पहिले लिखागया है कि राणीभवानीकी इद्दावस्था में उन का राजस्व भले प्रकार संग्रह नहीं होता। परन्तु वह जिस से जिस बातका अङ्गीकार करतीं वह अन्यथा नहीं होता एक समय धन की न्यूनता के कारण उन्होंने अपनी सब कोठियों के अनाज बेचने की आज्ञा की। शस्यादि बेच कर तीन लाख रुपया संग्रहित हुआ परन्तु व्यय उस से भी अधिक हो चुका था और जिन २ को देने को अङ्गीकार कर चुकी थीं अपने अलङ्कार बेंचकर उनको दिया। वह जो मुख से कह देतीं कभी अन्यथा नहीं करतीं॥

राणी भवानी की पूजा और नित्य कर्म का नेम अति कठिन था वह प्रत्याह चार दण्ड रात्रि

रहते उठतीं और जप करने बैठतीं अर्ध दण्ड रात्रि रहते तक जप करतीं और फिर अपने हाथ से पुष्प चयन करतीं और नौकर साथ २ बत्ती लिये जाये फिरते जब पुष्प चयन कर चुकतीं तो प्रभात समय गङ्गा स्नान करतीं और घाट पर बैठे२ दो दंड दिन चढ़े तक जप गङ्गा पूजा और शिव पूजा करतीं। तब सब देवालों में जाकर पुष्पाञ्जली देकर घर आकर पुराण श्रवण करतीं और बान लिङ्ग शिव की पूजा और इष्ट पूजा करतीं। इतने में दो प्रहर हो जाते तब कुछ जल पी कर अपने परिवार के ब्राह्मणों को भोजन करा कर अपने हाथ से रसोई करके दश ब्राह्मणों को हविष्यान्न भोजन करातीं अढ़ाई प्रहर दिन चढ़े आप हविष्यान्न भोजन करतीं। तब दीवान आकर उनके राज्य सम्बन्धी सब आज्ञा लिख ले जाता तीसरे प्रहर भाषा में पुराण श्रवण करतीं। दो दंड दिन रहते पुराण समाप्त होता उस समय धर्माध्यक्षगण उन की आज्ञानुसार लेखनादि प्रस्तुत करके उनके स्वाक्षर कराने को आते। राणी वह सब श्रवण कर उनमें मुद्रांकन कर देतीं तब संध्या को फिर गंगा दर्शन और गंगा को घृत दीपक चढ़ाने जातीं फिर अपने घर आ चार दण्ड रात्रि तक माला फेरतीं। फिर कुछ जल ग्रहण कर राज्य संक्रान्त आज्ञा आदि

देतीं। प्रहर रात गये प्रजाओं की प्रार्थना आदि सुनकर विचार करतीं तदनंतर दो तीन दंड तक और बात चीत करतीं फिर उस का अनुसन्धान कर कि परिवार वाले किस प्रकार से बरताव करते हैं डेढ़ प्रहर रात गये शयन करतीं ॥

राणी भवानी का ऐसा शासन था कि यज्ञोपवीत होनेके पीछे जो कोई ब्राह्मण कुमार प्रात-स्नान न करता और प्रात संध्याका चिन्ह ऊर्द्ध पुंडर उसके कपाल पर दृष्ट न होता तो उसको गंगा पार उतरवा देतीं बालकों को पांच वर्ष वय-क्रम से उनको प्रात स्नान करना सिखातीं । राणी भवानी ने ३२ वर्ष की अवस्था में विधवा होकर ७८ वर्ष की अवस्था में परलोक गमन किया। वह परमा सुंदरी स्त्री थीं और अत्यन्त वृद्ध होगई थीं तथापि पीछे से देखने वालों को २०वर्ष की युवती के तुल्य दृष्टि पड़तीं ॥

उनके दांत एक भी न था परंतु केश सब काले थे। सम्मुख दो एक केश श्वेत हुये थे। इस अवस्था में भी वह अपने हाथ अन्न पाक करके भोजन किया करतीं एक दिन भी इस नेमकी अन्यथा नहीं हुई ॥

राणी भवानी ने अपने जामाता के परलोक सिधारने पर एक पुत्र गोद लियाथा। उसका

नाम राम कृष्ण था जब वह सेयाने होगये तो उनको सर्व्वाधिकारी कर आप गंगावासी हुई राजा राम कृष्ण बड़े तापस थे राज कर्म में कुछ मनोयोग नहीं करते इसी कारण उनके जीते जीही उनका राज्य बहुत नष्ट होगया था और अब राणी भवानी के परिवार के लोग अति सामान्य गिने जाते हैं ॥

नारीबोध॥

दूसराभाग

द्वितीयअध्याय ॥

पद्य

मंगलाचरणका

जय जगदीशहरे। भक्तजनोंके संकट छिनमेंदूर करे ॥ जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मनका। सुख संपत घरआवे कष्टमिटे तनका ॥ मात पिता तुम मेरे शरणगहूं किसकी। तुम बिन और न दूजा आश करों जिसकी ॥ तुम पूरण परमातम तुम अंतरयामी। पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालनकरता। मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥ तुमको एक अगोचर सबके प्राणपती। किसविधि मिलों गुसाईं तुमको मैं कुमती ॥ दीनबन्धु दुखहरता ठाकुर तुममेरे। अपनेहाथउठावो द्वारपड़ोतेरे॥ विषय विकार मिटावोपाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति दृढ़ावो संतनकी सेवा ॥

(भूपतिकृत दशमस्कन्ध भागवत)

अथ सुदामा व श्रीकृष्ण भेंट वर्णन ॥

चौपाई ॥

पुनि बोले शुकदेव बनानी। हरिसों कहत सुदामाज्ञानी ॥ तुमजो गुरुकी अस्तुतिकीन्ही। प्रगट रीति जगतकी कीन्ही ॥ नातो हौ सब के करतारा। पालत वज्रहि करत संहारा ॥ भक्त वछल है नाम तुम्हारो। निज भक्तन के पालन हारो ॥ यह सुनके बोले भगवाना। सुनोसुदामा मित्र सुजाना ॥ तुम्हरेअमृतबैन सुहाये। सुनके रोम २ सुख पाये ॥ बहुत प्रीति करि देखनआये। हमको कहो भेंट कहालाये ॥ भाभी जो कछु दियो हमकाजा। सो अमदेव करो मतलाजा ॥

दोहा ॥

शाक पत्र एक प्रीतिकरि हमको दे जो कोइ ॥
तेहि समान सबसृष्टिमें कछूस्वाद नहिंहोइ ॥

चौपाई ॥

बिबिधि भांति मिष्टान्न जो लावै। बिना भक्ति कछु काज न आवै ॥ दुर्योधन बहुपाक बनाये। प्रीति बिनाते हमें न भाये ॥ विदुरभक्तकी प्रीति दृढ़ाई। बासी शाक बहुत रुचिपाई ॥ जो तुम कुछलायेहमपाहीं। थोड़ो मत समझो मन माहीं ॥ वै तंडुल हमको अतिभावैं। बहु मिष्टान्न दृष्टि नहिं आवैं ॥ अब तें गांठि बांधि तुम

लीन्ही। तबते हम उनमें दृग दीन्ही॥ तिनहीं मांझ रहो मन जाय। हमे प्रीति की भूख सदाय॥ ऐसी भांति कहत यदुराय। त्यों २ ब्राह्मण बज्रत लजाय॥

दोहा॥

निज मनमें जान्यो तभी भूपति प्रभु यदुराज।
याहि पठायो ब्राह्मणी आयौ है धन काज॥

चौपाई॥

नातो याहि लोभ कछु नाहीं। अति निर्मोह रहे जगमाही॥ हरिजूको तंडुल अति भावैं। वैतो सकुचैं बज्रत डरावैं॥ हरि जू गांठि पकड़ के खींची। अपनी ओर सुदामाऐंची॥ दोनों बस्त्र फाटि तब गयो। तंडुल फैलत कौतुक भयौ॥ तेहि औसर मोहन सुर ज्ञानी। पट रानिन सों बोलत बानी॥ तंडुल सबै बीन तुम लेहू। एक मुठि मति चरणन तर देहू॥ यह सुन के तबहीं सब धाईं। तंडुल बीन धरे एक ठाईं॥ मुठी दोय तब हरि जो लीन्हे। बज्रत प्रीति सों मुख में दीन्हे॥

दोहा॥

तंडुलकी महिमा कहत भूपति प्रभु यदुराज।
सुर नर मुनि तिज्रलोक के तृप्त भये हैं आज॥

चौपाई॥

अबलौं बज्रत अन्न हम खाये। ऐसो स्वाद कबज्रुं नहिं पाये॥ यसोदा बज्रु विधि भोजन कीन्ही। बज्ररों माय देवकी दीन्ही॥ तिनज्रुं में कछु स्वाद न पायो। जैसोस्वाद आज मनआयो॥

राजन पती कृष्ण यदुनाथा । तंडुल और लिये जब हाथा ॥ चाहत मुखमें डारो जबहीं । पकड़ो हाथ रुक्मिणी तबहीं ॥ कहत तीसरी मुठी जो खैहो । तीनों लोक मुदामै दैहो ॥ यह सुनके विहंसे यदुराय । बिश्वकर्मा सों कह्यो बुलाय ॥ बिप्र काज बड़ मन्दिर रचो । सकल बिभूति आन तहं सजो ॥

दोहा ।

बिश्वकर्मा जबहीं चलो हरि की आज्ञा पाय ।
मन्दिर रतन जड़ाय के छिन में रचो बनाय ॥

चौपाई ।

टूटी छान हती जेहि ठाईं । मन्दिर बड़त भये तेहि ठाईं ॥ ठौर २ मणि माणिक लागे । मनो चहूं दिशि दीपक जागे ॥ दुहूं लोक की सम्पति जेती । घरमें आनिभरी सब तेती ॥ राजन जबै कृष्ण यदुराय । तंडुल महिमा कहत सुनाय ॥ यों बसुदेव देवकी माता । हंसे बड़त सुनके यह बाता ॥ कहत दूर तें ब्राह्मण आयो तंडुल मुट्ठी भेंट लैआयो ॥ तिनकीमहिमा कृष्ण बखानी । आपहिं खाय बड़त रुचिमानी ॥ यह सुनके बोले सुखदानी । सुनो मात तुम बात न जानी ॥

दोहा ।

इन तंडुल के स्वादको जानत नाहीं कोय ॥
हमबिन ऐसो कौन है जाको प्रापत होय ॥

तुमको भी अनुग्रह भयेा । द्विज दर्शनते पातक गयेा ॥ राजन या विधि विप्र सुदामा । एक दिवस राखेघनश्यामा ॥ उज्वल सेजसंवार बिछाई । पौढ़े परम मित्र सुखदाई ॥ प्रातहेाय बेाले घनश्यामा । अपने घर अबजाऊ सुदामा ॥ उनतेा कुछ हरि भेव न जानेा । बहुत सेाच अपने मन आनेा ॥ कहत बहुत आदर हरिकीनेा । मेाको कछू द्रव्य नहिंदीनेा ॥ अबमैं कौनभांति घर जैहौं । कहा जाय घरनी को दैहौं ॥ बहुरेा द्विज समझेा मन माहीं । विधन अनेक होत धनमाहीं ॥

दोहा ॥

ताते बहुत कृपाकरी मित्र आपनेां जान ।
मेाहिं द्रव्यदीन्हेां नहीं भूपति प्रभुभगवान ॥

चेापाई ॥

याबिधि मनमें करत बिचारा । पहुंचेा अपने नगर मंझारा ॥ अपनी टूटी छान नपावे । मन्दिर देख बहुत भ्रम आवे ॥ बहु विधि रचना रची बनाई । उपबन सेाभा कही न जाई ॥ सेाभित सुन्दर ताल विशाला । तिनमें फूलेकमल सनाला ॥ द्वारपाल सब बैठे द्वारे । भूषण वसन अनूप संवारे ॥ तिनसेां पूछत विप्र सुदामा । ये केहिके मन्दिर अभिरामा । राजनपती विप्रकी नारी । पहिरे बहुभूषण अतिभारी ॥ देखनकारण चढ़ी अटारी । पति आवत देखेा उन नारी ॥

दोहा ॥

तब अपनी दासीनसों याविधि कहत सुनाय ।
आवत हैं मम प्राणपति उनको लेउ बुलाय ॥

चौपाई ॥

यह सुनिकै दासी बहु धाईं । बाहिर लेनसुदामै आईं ॥ यद्यपि बहुतकरीमनुहारी । पगधारोनिज गेहमझारी ॥ तद्यपि द्विज घरमें नहिं जाय । कौतुक देखत बहुतसकाय ॥ दासी सकल पकड़के बाहीं । लेआईं तब आंगन माहीं ॥ पायन आयपड़ी वह नारी । परमपुनीत महा व्रतधारी ॥ नमस्कारकरि बिनती कीनी । तीन बार परिकरमा दीनी ॥ आनंद बहुत जो मनमें भयो । नयन नीरसंग बाहर लयो ॥ तब निज नारि विप्र पहिचानी । जाकी छवि नहिं जात बखानी ॥

दोहा ॥

मणिमयमन्दिर देखिके चकित भयो मनमाहिं ।
जेहिसमान दुऊंलोकमें और ठौर कहुं नाहिं ॥

चौपाई ॥

हेमचीर के चंदवा सोहैं । झालरमें मुक्ताहल मोहैं ॥ तहां सुवर्ण की चौकी धरी । बिबिधि बरन रतनन भरी ॥ बहु सुन्दर दासी एक साथा । ठाढ़ीहैं लिये सुरकुल हाथा ॥ रतन जटित पलंगा अतिराजे । दूध फेनसम सेजबिराजे ॥ महा मनोहर सभा जो देखी । इन्दर सभा सम अद्भुत देखी ॥ तबद्विज अपने मनमें जानी ।

मोपर कृपाकरी सुखदानी ॥ जिनको मनउदार जगमाहीं। जो कछुदेत कहतवै नाहीं ॥ राजन पती बिप्र सुरज्ञानी। निज तिरिया प्रतिबोली बानी ॥

दोहा ॥

जब लौंना सुमिरै हरी जे सन्तन के मीत।
ते दिन लेखेमें नहीं गये वृथा सब बीत ॥

चोपाई

हौं हरिसौं मांगौं यह बाता। तुमको नहिं भूलौं दिन राता ॥ पाण्डो सुत हरि सौं हित कीन्हों। यद्यपि दुर्योधन दुखदीन्हों ॥ एक हाथ धरती नहिं दीन्हीं। तिन पर कृपा कृष्णजी कीन्हीं ॥ तिनके दुःख दूर सबकिये। सकलविश्व के राजा भये ॥ हा यदुनाथ दीन हो भाखी। द्रुपद सुता की लज्जा राखी ॥ दीनबन्धु है नाम तुम्हारो। मो से दीनन को निस्तारो ॥ राजनजी खाते जग माहीं। हरि सौं हरि बिन मांगत नाहीं ॥ यद्यपि धनको गयो सुदामा। धन अरु मुक्ति दई घनश्यामा ॥

दोहा ॥

यहचरित्र अद्भुत महा चितदेसुनै जोकोय।
रहै सदा सुखचैन सों दुख नहिं पावै सोय ॥

अथ ज्ञानचालीसी संक्षेप ॥

दोहा ॥

देबो यज्ञको मूलहै यातें देबो ठीक।
परदेबे में जान लो दुख कबहुं नहिं नीक ॥

सञ्चय करबो है भलो सेा आवै बड़ काम ।
पाप न संचै कीजिये जेा अपयश को धाम ॥
जड़कबहुं नहिं काटिये काहूकी मन धारि ।
पापरु पुण्यकी जड़कटी भलीएक निरधारि ॥
भलेाहोतनहिं मारिबेा काहूकेा जगमाहिं ।
भलेामारिबेा क्रोधको तामसनररिपुनांहिं ॥
जेारीकरि नहिं रेाकिये काहूकेा मनमीत ।
बनै तेा मनकेा रेाकिये जातें हेाय बिनीत ॥
संग सदा सुखदान है करिये सज्जन देख ।
कबहुं न करिये दुष्ट को सङ्ग यहीअबरेख ॥
करैहिर्स जेा काऊको तामें लहनरहान ।
पर विद्याकी हिर्स बर जासों हेा जगमान ॥
प्रीतिरीति दुख मूलहै मैं कीन्हेां निर्धार ।
प्रीतिभली भगवानकी जाते हेाभवपार ॥
भलेानजगमें चास केाउ चास दुःखको मूल ।
परगुरु पितकी चासतें मिटै क्लेशको मूल ॥
बुरेा मांगिबेा जगत में जातें हेा अपमान ।
क्षमा मांगिबेा ईशतें भलेा एह कर ज्ञान ॥
प्रातहिउठकेनित्त नित करियेप्रभुकेाध्यान ।
जातें जगमें हेाय सुख अरु उपजे सतज्ञान ॥
काहूते कड़ुवो बचन कहेा न कबहुं जान ।
तुरत मनुजके हृदयको छेदतहै जिमिबान ॥
कबहुं न चेारी कीजिये यद्पि मिलैबहुबित्त ।
नरफांसि ताके फंद में पावै लाज अमित्त ।
मीठी बेाली बेालिये करिके सबसेां प्रीति ॥

करैप्रेम तासों सकल लख शुक शारकरीति
यद्यपिहोत पितुमातको सब सुतपै सम नेह।
लखि सुपूत ठंढकलहे जरै कुसुतलखि देह ॥
जोजन दूषा धारमन जरत देख परहित्त।
कैसे ऐसे पुरुष को शीतलता लह चित्त॥
जान सर्बगत ईशको करो न कबहूं पाप।
सबै चराचर जगतको देखत हैं वह आप ॥
सुनके दुर्जनके वचन होरहिये चुपचाप।
करै जो समता तासुकी नीच कहावै आप॥
झूंठन कबहूं बोलिये झूंठ पापको मूल।
झूंठेकी कोउ जगतमें करै प्रतीति न भूल॥

प्रश्नोत्तर ॥

सुखी जगतमें कौनहै कहोमोहिं समझाय।
होयलीन भगवानमें सुखी वही जग आय॥
दुखी कहतहैं कौनसों याहि सृष्टि के बीच।
देख परोदय जो जरै दुखी रहत वह नीच॥
कोजगमें धनवान है जाको मन न डुलाय।
जोराखै संतोष मन वह धनिकनि में राय॥
कहत दरिद्री कौनसों कहोमोहिं करिनेह
धनतृष्णाजाकी अधिक जान दरिद्री येह॥
पुण्यवान जनहोहिंजे उनकी व्यापहिचान।
ईश्वर डरजाके हृदय पुण्यवान सो जान॥
पापीजनजो जगत में सो किमजान्यो जाय।
जो अपने प्रभुसों बिमुख पापीवही कहाय॥
बुद्धिवान नरके अबै लक्षण कहो बखान।

जो जगनिन्हा सों डरै बुद्धिवान सो जान ॥
सज्जन जन जग कौन से कैसे दुष्टलखाय ॥
परअकाज में जासुचित सोनर दुष्ट कहाय ।
बड़ो कौनया जगत में मैंपूछों यह बात ।
ढके दोष जो सबन के सोजन बड़ो कहात ॥
करोनरिपुता काहूसों सबके रहोतुममीत ।
जातेंमन प्रफुलितरहे होवन रिपुकी भीत ॥
पहिलेलखिके दोषगुण फिर आरंभो काज ।
जातें मनको होयदुख लहो न जगमें लाज ॥
सुनके सबकी बातका पहिले ढूंढ़ो हेत ।
फिर उत्तरसुखतेंकहो याविधि राखोचेत ॥
पर निन्दाकर जोनर तुम्हैं देत बड़ाई पूर ।
मत भूलो यापै कछु तुम्हैं कहैंगो कूर ॥

चाणिक्य कृत राजनीतिका संक्षेप ॥

चाणिक्यानकआपनकही राजनीतिसमुझाय ।
जाकेजाने नरन के बड़ी बुद्धि बढ़िजाय ॥
याही को जो सब पढ़ैं वाजानैं सब कोय ।
यही लोक परलोक है याते सुधरैं दोय ॥
धर्म न उपजै सत्य बिन आवै नहीं बिराग ।
जाको बढ़ोदेवनलगे ज्योंवालत है काग ॥
बड़ो वृक्षजो सेइये फल छाया युत होय ।
देवागत फल नामिलै छाय न मीठी कोय ॥
मातपिता गुरुराजबुध इनके बचन प्रमान ॥
इनकी अज्ञाभंग कर दुष्टमाननो जान ॥
क्षमा रूप जोधन धरे दुर्जन काह कराय ।

बिनतृणअग्निज्योंभूमिमें आपनहींबुझिजाय॥
अक्षर पंडित को उचित मूरखको दुख देत।
मंदिरमें दीपकबरै चकसोंहैं कछिहेत॥
खटपटे दिन काटिये धूपहि रहिये सोय।
छाय न ताकीबिलंबिये पेड़ पातरो होय॥
काया कंचन मन रतन यत्नकरत दिनजाय।
जो जैसीसंगति करे सोतैसो फल पाय॥
बंधअग्नि बनमें उठी सब बन डारेजार।
सतकुलमें उपजी कुमति सबकुल डारेमार॥
चंदन तरुकी बासते सब चंदन होय जाय॥
कुलमें एक सपूत है सगरो कुटुम अघाय।
लोचन रूप बिशाल है नर बिद्या बिन रैन।
सभा नशोभै बिनगुणी ऐसो बास मिलैन॥
एक पण्डित अरु नृपतिको जान एकहीभेष।
राजा पूजै देश में पण्डित देश बिदेश॥
जिन्हैं न आवै पढ़ कछू तेनर बड़ अजान।
बिन सींगन के बरध वह गर्जतफिरैं असान॥
जाके सुत पण्डित नहीं शूर न दाता होय।
कुलअंधियारो तासुको चन्द्रहीननिशिहोय॥
सुखचाहो बिद्यापढ़ो बिन बिद्या सुख नाय।
सुख अरु बिद्या देउ को एकहिसे नरपाय॥
समरथको अति भारनहिं बिद्यापुरुषनदूरि।
पिय पावै क्वारी कहां बड़ी सजीवन मूरि॥
शैल २ माणिक नहीं मोतीगज २ नाहिं।
साधसाध सबही नहीं चन्दन बन २ नाहिं॥

अथ सभाविलास संक्षेप ॥

भाव सरस समझत सबै भले लगें यहभाय ॥
जैसे श्रीसर की कही बाणी सुनत सुहाय ॥
नीकी पैफीकी लगै बिन औसर की बात ।
जैसे वर्णत युद्धमें रसशृङ्गार न सोहात ॥
फीकी अरुनीकी लगै कहिये समयविचारि ।
सबके मन हर्षितकरे ज्योंबिवाह में गारि ॥
जाहीते कछु पाइये करिये ताकी आस ।
रीते सरवर पै गये कैसे बुझत पियास ॥
भलेबुरे सबएकसे जबलौं बोलें नाहिं ।
जानपरत है काकपिक ऋतु बसन्तकेमाहिं॥
मधुर बचनते जातमिट उत्तम जनअभिमान ।
तनक शीत जलसों मिटै जैसे दूधउफान ॥
सबैसहायक सबलके कोइन निबल सहाय ।
पवन जगावत आगको दीपहि देतबुझाय ॥
कछुबसाय नहिं सबलसों करै निबलसोंजोर
चलै न अचल उखाड़तरु डारत पवनझकोर
जो जाहीसों रुचिरह्यो तिनताहीसों काम।
जैसे किरवा आकको कहाकरै बस आम ॥
प्रकृतिमिलेमन मिलतहै अनमिलतेनमिलाय
दूधदहीते जमतहै कांजीते फटिजाय ॥
परघर कबहुंन जाइये गये घटत है जोति ।
रविमण्डलमें जातशशि छीनकला छबिहोति॥
ब्रह्मबनाये बनरहे तेफिर और बनैन ।
कान कहत नहिं बैनजो जीभसुनतनहिंबैन॥

मूरख गुण समझे नहीं तौ न गुणी कै चूक ।
कहा भयौ दिनकी बिभौ देखै जो न उलूक ॥
मूढ़ तहाहीं मानिये जहां न पण्डित होय ।
दीपक की रबिको उदय बात न बूझै कोय ॥
निपट अबुधसमझैकहा बुधजन बचनबिलास
कबहुं भेक न जानहीं अमलकमलकी बास ।
सांचझूंठ निरणय करे नीतिनिपुणजो होय ॥
राज हंस बिन को करै क्षीर नीरको दोय ॥
दोषहि को उमहैं गहैं गुण न गहैं खल लोक।
पियै रुधिर पैना पियै लगीपयोधर जोक ।
कारज धीरे होत है काहेहोत अधीर ।
समय पाय तरवर फलै केतिक सींचैनीर ॥
क्योंकीजै ऐसी यतन जातें काज न होय ।
परबत पर खोदै कुंवा कैसे निकसै तोय ॥
बड़े सहजही बातसों रीझदेत बकगोध ।
तुलसीदल ते बिष्णुजो आकधतूरे ईश ॥
सुधरी बिगड़ीबेगही बिगड़ी फिर सुधरैन ॥
दूध फटै कांजी पड़ै सो फिर दूध बनैन ॥
छोटे नरतें सहत हैं शोभायुत शिरताज ।
निरमल राखे चांदनी जैसी पांय अन्दाज ॥
सहज रसीलो होयसो करै अहित परहेत ।
जैसे पीड़ित कीजिये ईखतऊ रसदेत ॥
कबहुं कुसंग न कीजिये करै प्रकृत कीहान।
गूंगे को समुझाइबो गूंगेकी गति आन ॥
कहाकरें कोऊ यतन प्रकृत और की और ।

विषमारै ज्यावे सुधा उपजै एकै ठौर ॥
डरै न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की बान ।
भंवर न छोड़ै केतकी तीखे कंटक जान ॥
धनबाढ़े मन बढ़गयो नाहिन मन घट होय ।
जो जल संग बाढ़ैजलज जलघटघटै न सोय ॥
सबते लघु है मांगिवो यामें फेर न सार ।
बलिपै यांचतही भयेबावन तन करतार ॥
जैसे की सेवा करो तैसी आसा पूर ।
रत्नाकर सेवै रतन सर सेवै सालूर ॥
होत सुसंगत सहज सुख दुख कुसंगके थान ।
गन्धी और लुहार की बैठे देखदुकान ॥
ठौर छुटेते मीतहो होय अमित सतरात * ।
रवि जड़ उखड़े कमल कोजारत फारतजात ॥
गुण वारो सम्पति लहै लहै न गुणबिनकोय ।
काढ़े नीर पतालते जो गुण घटयुत होय ॥
अरि छोटो गिनिये नहीं जाते होतबिकार ।
तृणसमूह को छिनक में जारत तनकअंगार ।
पण्डित जनको श्रमपरम जानत जे मतिधीर ।
कबहुं बांझ न जानहीं तन प्रसूत की पीर ॥
बीर पराक्रम नाकरै तासे डरत न कोय ।
बालकहू को चिचका बाघ खिलौना होय ॥
कारज ताही को सरै करै जोसमय निहार ।
कबहुं न हारै खेल जो खेलै दांव बिचार ॥

---

* अर्थात् सूर्य व जल कमल के बड़े मीत होते हैं परन्तु जब वह उखड़जावें तो येही उसको जला व बहा देते हैं ॥

कोऊ दूर न करसकै विधि के उलटे अंक।
* उदधिपिताउचन्दको धोयनसकोकलंक॥
करतकरत अभ्यासके जड़मति होय सुजान।
रसरी आवतजातते शिलपर परत निशान॥
कोसुख कोदुख देत है देत कर्म झकझोर।
उरझे सुरझे आपही ध्वजा पवन के जोर॥
सोई अपनो आपनो रहै निरन्तर साथ।
होत परायो आपनो अस्त पराये हाथ॥
अन्तर अंगुरी चारको सांच झूंठ में होय।
सब मानै देखी कही सुनै न मानै कोय॥
होय भले के सुत बुरो भलो बुरे के होय।
दीपक सों काजल प्रकट कमल कीचमेंजोय॥
होय भलेचाकरनते भलो धनी को काम।
ज्योंअंगद हनुमान ते सीता पाई राम॥
सुख सज्जनके मिलनको दुर्जन मिलै जनाय।
जानेऊख मिठासको जब सुख नीब चबाय॥
जाहिमिलेसुखहोतहै तेहि बिछुरतदुखहोय।
सूर्य उदय फूलै कमल ताबिन सकुचै सोय॥
झूठेहू करिये यतन कारज बिगड़ै नाहि।
कपटपुरुषधन खेतपर देखत मृगफिरजाहि॥
कारज सोई सुधरिहै जो करिये समझाय।

---

* समुन्दर को कहत हैं अर्थ यह कि चन्द्रमा की उत्पत्ति समुद्र से है तोभी उसका कलङ्क निवृत्त नहीं हुआ॥

अति बरषै बरषैबिना जोन छषी* कुम्हलाय ॥
रहै प्रजाधन यत्न सों तहं बांकी तरवार ।
सेा फलकोऊ न लैसकै जहांकटीली डार ॥
पण्डितअरुबनितालता शेाभित आश्रय पाय ।
हैमाणिक बहुमोलको हेमजटित छबिछाय ॥
अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूंठ बनाय ।
बेद्या बरष घटावही योगी बर्ष बढ़ाय ॥
कहूंकहूं गुणदोषते उपजत दुःख शरीर ।
मधुरी बाणी बोल के परत पींजरा कीर ॥
भले बुरे निबहैं सबै महत् पुरुषके संग ।
चन्द सर्प जल अग्नि ये बसत शंभु के अंग ॥
बिना कहे हू सतपुरुष परको पूरै आस ॥
कौन कहतहै सूर्यको घरघर करत प्रकाश ।
कछुकहि नीच न छेड़िये भलोनबाको संग ।
पाथर डारै कीचमें उछरि बिगाड़ै अंग ॥
मीठी मीठी बस्तुनहिं मीठी जाको चाह ।
अमलीमिसिरी छांड़िके आफूखात सराह ॥
खाय न खरचैखच्छमन चोर सकल लैजाय ।
पीछे जो मधुमक्षिका हाथमलै पछिताय ॥
उत्तम विद्या लीजिये यदपि नीचपै होय ।
पड़ो अपावन ठौरमैं कांचन तजत न कोय ॥
जान बूझ अजुगत करै तासों कहा बसाय ।
जागतही सोवत रहै ताको कहा जगाय ॥

* छषिन खेत को कहते हैं अर्थ यह कि थोड़ो वा बहुत वर्षा से खेत को हानि ई ती है ॥

सज्जन बचावै कष्टतें रहै निरंतर साथ।
नैन सुहाई ज्यों पलक देह सुहाई हाथ॥
बुद्धिवान गंभीर को संगत लागै नाहिं।
ज्यों चंदन ढिग अहिर हे विषन होय ते हिं माहिं॥
सज्जन को दुख हृदिये दुर्जन पूरै आस।
जैसे चंदनको घिसै सुन्दर देत सुवास॥
सज्जन चित कबज्जन धरत दुर्जन जनके बोल।
पाहन मारै आमको तब फल देत अमोल॥
बिरले नर पंडित गुणी बिरले बूझन हार।
दुख खण्डन बिरले पुरुष ते उत्तम संसार॥
जेकरतार बड़े किये पग पग धरैं विचार।
दुर्जन हूसें जमिलैं बोलैं रोस निवार॥
जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उत्तम साथ।
ज्यौंपलास * संग पानकेपकुंचै राजा हाथ॥
बचन पारखी होहि तू पहिले आपन भाख।
अन पूछे नहिं भाषिये यही सीखजी राख॥
सुख श्रवण दृग नासिका सबही के एकठौर।
कहबो सुनबो देखबो चतुरनको कछु और॥
जो तू चाहै अधिक रस सीख दीख कीजेय।
जो तू सों अनरस करै ताहि अधिक रस देय॥
नर की अरु † नलनीरकी गतएकैकर जोय।

---

* पलास एक वृक्षको कहते हैं जिसकेपत्तेकेसे पानके बीड़े बांधते हैं।

† अर्थ यह कि जितना मनुष्य नम्रता करता है उतनाही बड़ी पदवी पाता है जैसे नल अर्थात् नली होती है उतनाही जल उसमें अधिक ऊंचा होता है॥

ज्यों २ नीचे होय चलै त्यों २ ऊंचो होय ॥
कैसे निबहै निबल जन करि सबलन सों गैर।
जैसे बस सागर बिषे करत मगर सों बैर ॥
अपनी पहुंच बिचारकर करतब करिये दौर।
तेती पांव पसारिये जेती होवै सौर ॥
फेरि न होइहै कपट सों जो कीजै ब्यौहार।
जैसे हांडी काठकी चढ़ै न दूजी बार ॥
करियेसुखकोहोतदुख यहकछु कौनसयान।
वा सोने को जारिये जासों टूटै कान ॥
भले बुरे जहं एक से तहां न बसिये जाय।
ज्यों अन्याय पुरमें बिकै खरगुड़ एकै भाय ॥
भाव भाव की सिद्ध है भाव भाव की भेव।
जो मानै तो देवहै नहीं भीतको खेव ॥
अतिअनीत खाये न धन जोप्यारो मनहोय।
प्यारी सोने की छुरी पेट न मारै कोय ॥
मूरख को पोथी दई बांचनको गुण काथ।
जैसे निर्मल आरसी दई अंध के हाथ ॥
अतिहटमतकर हटबढ़ैबात न करियेकोय।
ज्यों २ भीजै कामली त्यों त्यों भारी होय ॥
लालचहू ऐसो भलो जासो पूजै आस।
चाटतहू कछु ओसके बुझत काहुकी प्यास ॥
एक बस्तु गुण होत है भिन्न प्रकृत के माय।
भटा एक कोपित करै करत एककोबाय ॥
बिन स्वारथ कैसे कहै कोई कटुये बैन।
लात खाय पुचकारिये जो होदुधारू धेन ॥

करै बुराई सुख चहै कैसे पावै कोय।
बोये पेड़ बबूल के आम कहां ते होय॥
होय बुराई तेबुरो यह कीन्हो निरधार।
खाउँ खनैगो और को ताको कूप तयार॥
एक भेषके आसरे जाति बरण छिपि जाय।
ज्यों हाथीके पांव में सबको पांव समाय॥
कनकन जोड़े मन जुड़ै खाते निबड़ै सोय।
बूंद बूंद सों घट भरै टपकत बीते होय॥
श्रमहीसों सबमिलतहै बिनश्रममिलैनकाहू।
सीधी अंगुरी घी जम्यो क्योंहूं निकसैनाहू॥
होतनकारजमोबिना यहकहै सोयअजान।
जहां न कुक्कुटशब्दतहँ होतन कहा बिहान।
यहैबात सबही कहैं राजा करै सो न्याव॥
ज्यों चौपड़ के खेल में पांसो परै सो दांव॥
पर को अवगुण देखिये अपनीदृष्टि न होय।
करै उजेरो दीप पै तरे अँधेरो जोय॥
अपनी अपनी ठौर पर सबको लागै दांव।
जल में गाड़ी नावपर थल गाड़ीपर नांव॥
सुखदेखायदुखदीजिये खलसोंलड़ियेकाहि।
जो गुड़ दीनेही मरै क्यों बिष दीजै ताहि॥
अन पूछेही जानिये मूढ़ देख मन मांहि।
छलके ओछे नीर घट पूरे छलके मांहि॥
बिनसत बारनलागही ओछेजनकी प्रीति।
अम्बर डम्बर सांझके ज्यों बालू की भीति॥
कुल सपूत जान्यो पड़ै लखि सब लक्षणगात।

होनहार बिरवार के होत चीकने पात ॥
जो धनवन्त सो देयकछु देयकहा धनहीन।
कहा निचोड़ै नग्नजन न्हान सरोवर तीर ॥
होतनिबाहन आपनो लीन्हेफिरेसमाज।
चूहा बिल न समातहै पूछ बांधिये छाज ॥
बिना प्रयोजन भूलिहू ठटिये नाहीं ठाट।
जानो नहिं जानगरको ताकीपूछ न बाट ॥
आप कहै नाहिन करै ताको यह है हेत।
आप न जावै सासरे औरन को सिखदेत ॥
पाछे कारज कीजिये पहले यत्न बिचार।
बड़ेकहतहैं बांधिये पानी पहिले पार ॥
ठीक किये बिनऔरकी बात सांच न थर्प।
होत अँधेरीरैनि में पड़ै जेवरी सर्प ॥
ठौरदेखके हूजिये कुटिलसरल गतिआप
बाहर टेढ़ो फिरत है बांबी सूधो सांप ॥
दोऊ चाहैं मिलनको तौमिलाप निरधार।
कबहूं नाहिन बाजि है एकहाथ ते तार ॥
आपै कारज आपनो करत कुसंगत साथ।
पायकुल्हाड़ी देत है मूरख अपने हाथ ॥
परतछ नीके देखिये कहबरणै कोउ ताहि।
कर कंकण की आरसी को देखत है चाहि ॥
आये आदर ना करै जात रहै पछिताय।
घर आये नाग न पूजिये बांबी पूजन जाय ॥

निबल सबल के पक्षते सबलन सों अनखात ।
देत दिमायत की गधी ऐरा की कोलात ॥
बढ़त द्रव्य सञ्चयजहां चोर राज भय होय ।
कांसे ऊपर बीजुली परत कहत सबकोय ॥
ओछे नरके पेटमें रहै न मोटी बात ।
आधसेर के पात्र में कैसे सेर अमात ॥
हिलनमिलन चितवनमिटी बयबीतेकरतूत ।
योगीथा सो उठ गया आसन रही भभूत ॥
अपने २ करथपै लिख पूजति तिय भीत ।
सुफल फलै मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीत ॥
तुलसी जहां बिवेक नहिं तहां न कीजैबास ।
श्वेत २ सब एकसे कररु कपूर कपास ॥
राम नाम आराधवो तुलसी दृथा न जाय ।
लड़िकाई को पैरबो आगे होत सहाय ॥
जिमि पनिहारी जेवरी खीचत कटै पषान ।
तुलसीरसना रामकर पापकेतिक अनुमान ॥
तुलसी रसना तौ भली जोतू सुमिरै राम ।
नातरुकाढ़िनिकालिये सुखमेंभलो न चाम ॥
तुलसी विलम्ब न कीजिये भजलीजै रघुबीर ।
तन तरकसतें जातहै स्वास सारिखे तीर ॥
एके साधे सब सधै सब साधे सब जाय ।
जो गहि सेवै मूलको फूलै फलै अघाय ॥
स्वारथ सीताराम से परमारथ सियराम ।
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहाहै काम ।
स्वारथ परमारथ सुलभ सकल एकही ओर ॥

द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥
तुलसी सोई चतुरता रामचरण खौलीन ।
परमन परधन हरनको बेश्या बड़ी प्रबीन ।
चतुराई चूल्हे पड़ो ज्ञानी जनकी धाय ।
तुलसीरामसों प्रेमनहिं सो जड़मूल नसाय ॥
मोर २ सब कोउ कहत तूकोकहु निजनाम ।
कै चुपसाधे सुन समझ कै तुलसी भजराम ॥
तुलसी अपने रामको रीझ भजो कै खीज ।
खेत पड़ेते जानिये उलटे सीधे बीज ॥
सीकहते सुख ऊपजै ताकहते तम नास ।
तुलसी सीता जोकहत राम न छांड़तपास ॥
तुलसी अघ सब दूर गये रा अच्छरके लेत ।
फिर नेरे आवत नहीं मा अच्छर पढ़ देत ॥
आप आपनेते अधिक जेहि प्रिय सीताराम ।
तुलसी ताके पग तरे मेरे तनको चाम ॥
तुलसी जोपै राम सों नाहिन सहज सनेह ।
मूड़ मुड़ायो वृथाही भांड भयो तजि गेह ॥
मूंड़ उघारन किनकह्यो बरजिरहे प्रियलोग ।
घरही सती कहावती जरती नहीं बियोग ॥
यथालाभ संतोष सुख रघुपति चरण सनेह ।
तुलसी जो मन हाथहै जस कानन जसगेह ॥
प्रीतिरामपद नीतिरथ चलै रागरस जोति ।
तुलसी संतनके मते यह भक्तनकी रीति ॥
तुलसी खोटे दासको रघुपति राखे मान ।
ज्यों मूरख उपरोहितहि देतदान यजमान ॥

काहूके धनधामहै काहूके परवार।
तुलसी ऐसे दीनके सीताराम अधार॥
नहिंसेवानहिंबुद्धिबल नहिंविद्या नहिंनाम।
तुलसीपतित पतंगको तुमपति राखोराम॥
एक भरोसे रामके किये पाप भरमोट।
जैसे नार कुनार को बड़े खसम की ओट॥
तुलसी छलबल छांड़िकै करै राम से सनेह।
अन्तरकह भरतार सों जिनदेखी सब देह॥
सब देखे परखे लखे बूझत कहे कहा होय।
तुलसी सीताराम बिन अपनो नाहीं कोय॥
होयअधीन जांचे नहीं श्रीश नाथ नहिंलेय।
तुलसीमानो याचकहि मन रघुबरको देय॥
गंगा यमुना सरस्वती सात समुद्र भर पूर।
तुलसी चातक प्रेमतें बिना स्वाति सब धूर॥
एक भरोसो एक बल एक आस बिश्वास।
स्वाति बूंद रघुनाथ हैं चातक तुलसी दास॥
तीन टूक कोपीनको अरु भाजी बिन लौन
तुलसी रघुबर उर बसे इन्द्र बापुरो कौन॥
गुण स्वरूप बल द्रव्यको प्रीति करै सबकोय।
तुलसीप्रीति सराहिये जो इनतेबाहरहोय॥
कहा कहूं छबि आज की भले बनेहो नाथ।
तुलसी मस्तक जब नवै धनुष बाण लेो हाथ॥
मुरली मुकुट दुराय के नाथ भये रघुनाथ।
तुलसीरुचिलखिदासकीधनुषबाणलियोहाथ॥
पशूगढंते नरभयो भूले सींग अरु पूंछ।

तुलसीहरिके भजनबिनु धृकडाढ़ी अरुमूछ ॥
प्रभुताको सबको उचहै प्रभुको चहै न कोय ।
जो तुलसी प्रभुको चहै आगहि प्रभुता होय ॥
तुलसी घरके घेरमें घरी घरी तनछीन ।
कबहूंना बनबन फिरे कर करवा कोपीन ॥
घरके घूमर घेरमें राम चरण लौलीन ।
तुलसी ऐसे संतको कहा करवा कोपीन ॥
कामक्रोध मदलोभकी जबलग मनमें खान ।
तब लगपंडित मूरखो तुलसी एक समान ॥
जब लगअंकुश शीसपर तबलग निरमलदेह ।
तुलसी अंकुशबाहिरे शिरपर डारतखेह ॥
तुलसी कायाखेत है मनसा भयो किसान ।
पाप पुण्यदोउबीज हैं बवै सो लुनै निदान ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधीहू में आध ।
तुलसी संगत साधकी हरै कोट अपराध ॥
स्वामीते सेवकबड़ो जो निज धर्म समान ।
रामबांधि उतरे जलधि कूदगये हनुमान ॥
स्वामीको सेवक घने सेवकको प्रभु एक ।
तुलसी दोमें सोबड़ो जाके मनमें टेक ॥
होत भले के अनभलो होतदानिके सूम ।
होत कपूत सपूतके ज्यों पावक में धूम ॥
नीच निचाई ना तजै साधनहूंके संग ।
तुलसीचन्दन विटपबस बिनविषभयो भुवंग ॥
आसनदृढ़आहार दृढ़ सुमतिज्ञान दृढ़होय ।
तुलसी बिना उपासना बिनदूखहु की जोय ॥

तन सुखाय पिंजरकरै धरैरैन बिन ध्यान।
तुलसीमिटै न वासना बिना बिचारे ज्ञान॥
आवतही हर्षैनहीं नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहां नजाइये कंचन बरसे मेह॥
हर्ष उठै आदर करै आवत जान अतीत।
तुलसी तबहींजानिये परमेश्वर सेां प्रीत॥
तुलसी या संसारमें भांत भांतके लोग।
हिलिये मिलिये प्रेमसेां नदी नाव संयोग॥
तुलसीविलंब न कीजिये मिलियेसबसेांधाय।
कोजानै केहिभेषमें नारायण मिलजाय॥
तुलसी कहत पुकारके सुनो सकलदैकान।
हेमदान गजदानते बड़ो दान सन्मान॥
तुलसी कबहुंनत्यागिये अपने कुलकी रीति।
लायकहीसेां कीजिये ब्याह वैर अरु प्रीति॥
ज्ञानगरीबी हरिभजन कोमल बचनअदोष।
तुलसी कबहुंनछांड़िये क्षमा शील संतोष॥
तुलसी सुपुरुष सेइये जबतब आवै काम।
लंक बिभीषणको दई बड़ेदुचितमें राम॥
तुलसीनिजकीरति चहै परकीकीरतिखोय।
तिनके मुख मसलागिहै मिटैनमरिहैधोय॥
बहुत गई आनन्दसेां रही नेकसी आय।
तुलसी चिन्तामतिकरो श्रीरघुबीर सहाय॥
तुलसी जगमें आइके करलीजे दो काम।
देबेको टुकड़ा भलो लेबेको हरि नाम॥
तुलसी या संसारमें पंचरतन हैं सार।

साधुमिलनअरुहरिभजन दयादीनउपकार ॥
बैर सनेह सयानको तुलसी जो नहिं जान ।
सोकिमिप्रेममगधरतपग पशुबिनपूछबखान ॥

अथ प्रश्नोत्तर ॥

प्रीतमया कलिकालमें कछु ऐसोको आहि ।
एक वस्तु जेहिसौंपिये देदश गुनकर ताहि ॥
सुनो अर्थ मनमोहनी है यह धरासुभाय ।
जोये एकै बीजके देदशगुन करताय ॥
ऐसो बकुभख कौनहै खात जुनाहिंअघाय ।
खातखात भोजनघटै तबआपहि मरजाय ॥
बकुभखज्वाला जानिये तृणलकरी बकुखाय ।
जबभोजन घटजातहै तब सारी होजाय ॥
दृग मुंदे सब देखिये कौन सुकर सोईठ ।
जो चखखोल निहारिये ककूनआवै दीठ ॥
वह खप्नेको सुकुरहै सोवत सबदिखराय ।
जागे ककु सूझेनहीं जबदृगदै खुलजाय ॥
रहै भाखसीमें सदा चिन्ताककुनजनाय ।
रुदनकरै छूटैजबै वाको नाम बताय ॥
बालकवाको नामहै गर्भ भाखसी जान ।
जब निकसै तब रोइहै वाको यही बखान ॥
तियबिगारनरभिन्परै नरबिगारभिरतीय ।
येचारोंधोपूछिये कहो सोचके जीय ॥
भूमि बिगारत खाननी नामखानकोलेइ ।
हानिकरै मंजारत्यों दोष मंजरी देय ॥
न्यारेन्यारे पुरुषहैं सकलहोहिंएकठाम ।

तब सबकोऊ कहतहै उनको नारी नाम ॥
मनके तबलौं पुरुषहैं न्यारे न्यारे आहि ।
धागे माहिं परोइये माला करिये ताहि ॥
न्यारीन्यारीनारिहैंमिलैंजोपुरुषनमाहिं ।
तबसबकोउनरभाषिये नारीकहियेताहिं ॥
अश्व अश्वनी एकहै जबहिकहतदलहोय ।
कहत सबै घोड़ाजुरे घोड़ी कहतन कोय ॥

अथमुकरी ॥

अर्द्धनिशा वह आयो भौन । सुन्दरता वरनै कहिकौन ॥ निरखतहीमनभयोअनंद । क्योंसखि साजन नासखि चंद ॥ वाबिन चित्त चहूं दिशि डोलै । चातक ज्योंपुनिपिय २ बोलै ॥ प्रलयहोय आवहि नहिंगेह । क्योंसखिसाजन नासखिमेह ॥ शोभा सदा बढ़ावनहारा । आंखनसेछिन होत न न्यारा ॥ आठपहर मेरो मन रंजन । क्योंसखि साजन ना सखि अंजन ॥ रात दिन वाको हो गौन । खुलेद्वार आवेमेरेभौन ॥ वाको हर्षवताऊं कौन । क्योंसखि साजन ना सखि पौन ॥ बाट चलत मेरा अचरा गहै । मेरीसुनै न अपनी कहै ॥ नाकछु मोसों झगरा झांटा । क्यों सखि साजन नासखि कांटा ॥

सभाविलास सम्पूर्णञ्च ॥

गीत ॥

रागकल्याण ॥

जगत में चार दिनन को मेला।

कोऊ बाप कोऊ सुत बन बैठो, कोऊ गुरू कोऊ चेलो ॥
जलको बूंद गरभमों बैठत नख शिख अंग दिखावे।
ब्राह्मण वैश्य देहको मानत है माटी को ढेलो ॥
भूषण बस्त्र बिबिधि बिधिभोजन यातनहेत बटोरे।
सोतन श्वास बिहीन होतजब मोलनप्रेतअधेलो ॥
देख्योजगत धूमकोबादर बिनसत बिलमनलागे।
अबासों हरिके पदपकरो फेर न मिले है बेलो ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका कौशल्या मातासे बिदा होना
और उनके बिलाप का वृत्तांत ॥

(तुलसीकृत रामायण)

दोहा ॥

सज्जनसरल रघुबरबचन कुमतिकुटिल करिजान।
चले जोंकजिमि बक्रगति यद्यपि सलिल समान ॥

चौपाई ।

रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेह जनाई ॥ सपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥ तुम अपराध योग नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुख दाता ॥ राम सत्य जो तुम कछु कहहू । तुम पितु मातु बचन रत अहहू ॥ पितहिं बुझाय कहेहु बलि सोई । चौथे पन अस अयस न होई ॥ तुम सम सुवन सुकृत जेहि दीन्हें । उचित न तासु निरादर कीन्हें ॥ लागहि कुमुख बचन सुभ कैसे । मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥ रामहिं मातु बचन सब भाये । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाये ॥

दोहा ॥

गै मूर्छा रामहिं सुमिरि नृप फिर करवट लीन्ह ।
सचिव राम आगमन कहि बिनय समय सम कीन्ह ॥

चौपाई ॥

जब नृप अवनि राम पगु धारे । धरि धीरज तब नयन उघारे ॥ सचिव सम्हारि राउ बैठारे । चरण परत नृप राम निहारे ॥ लिये सनेह बिकल उर लाई । गइ मनि फणिक बहुरि जिमि पाई ॥ रामहिं चितै रहे नर नाहू । चला बिलोचन बारि प्रबाहू ॥ शोक बिकल कछु कहै न पारा । हृदय लगावत बारहि बारा ॥ बिधिहि मनाय राउ मन माहीं । जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं ॥ सुमिरि महेशहिं

कहहि निहोरी। बिनती सुनहु सदा शिव-मोरी॥ आसुतोष तुम औढर दानी। आरति हरहु दीन जन जानी॥

दोहा॥

तुम प्रेरक सबके हृदय सोमति रामहिं देहु। बचन मोर तजि रहहिं घरपरिहरशील सनेहु॥

चौपाई॥

अयश होउ बरु सुयश नसाऊं। नरक परौं बरु सुर पुर जाऊं॥ सब दुख दुसह सहावहु मोही। लोचन ओर राम जनि होही॥ असमन गुणित राउ नहिं बोला। पीपर पात सरस मन डोला॥ रघुपति पितहि प्रेम बश जानी। पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी॥ देश काल औसर अनुसारी। बोले बचन बिनीत बिचारी॥ तात कहेा कछु करौं ढिठाई। अनुचित छमब जानि लरिकाई॥ अति लघु बात लागि दुख पावा। काहुन कहि मोहिं प्रथम जनावा॥ देख गुसांइहि पूछेउं माता। सुनि प्रसंग भाशीतल गाता॥

दोहा॥

मंगल समय सनेहबस सोच परिहरिय तात। आयसु देइय हर्षिहिय कहि पुलके प्रभु गात॥

चौपाई॥

धन्य जन्म जगसीतल तासू। पितहिं प्रमोद चरित सुनिजासू॥ चारि पदारथ करतलताके। प्रियपितु मातु प्राण सम जाके॥ आयसु पालि

जन्म फलपाई । ऐहें बेगहिहो डरजाई ॥ बिदा मातु सन आवौं मांगी । चलिहौं बनहिं बहुरि पग लागी ॥ अस कहि राम गवन तब कीन्हा । भूप शोक बश उतर न दीन्हा ॥ नगर व्यापि गई बात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥ सुनिभय बिकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जनु लागि दवारी ॥ जो जहं सुनै धुनै सिर सोई । बड़ बिषाद नहिं धीरज होई ॥

दोहा ॥

सुखसुखहिंलोचन स्रवहिं शोकन हृदयसमाइ ।
मानहुं करुणा रसकटक उतरा अवध बजाइ ॥

चौपाई ॥

भलि बनाइ बिधि बात बिगारी । जहं तहं देहिं कैकयिहि गारी ॥ एहि पापनिहि बूझि का परेऊ । छाय भवन पर पावक धरेऊ ॥ निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा बिष चाहत चीखा ॥ कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुबंश बेणु बन आगी ॥ पालव बैठि पेड़ एहि काटा । सुख महं शोक ठाट एहिं ठाटा ॥ सदा राम एहि प्राण समाना । कारण कवन कुटिल पन ठाना ॥ सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ । सबविधि अगम अगाध दुराऊ ॥ निज प्रतिबिम्ब सुकुर गहिजाई । जानि न जाइनारि गतिभाई ॥

दोहा ॥

कानहिं पावक जरिसकै का न ससुद्र समाय ।
कानकरै अबला प्रबल केहि जगकाल नखाइ ॥

चौपाई ॥

का सुनाय बिधि काह सुनावा । का दिखाइ छवि काह देखावा ॥ एक कहैभल भूप न कीन्हा । बर बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥ जो हठि भयऊ सकल दुख भाजन । अबला बिबस ज्ञान गुणगाजन ॥ एक धर्म पर मति पहिचाने । नृपहि दोष नहिं देहिं सयाने ॥ सिबदधीचि हरि चंद कहानी । एक२ संग कहहिं बखानी ॥ एक भांतिकर सुमत कहहीं । एक उदास भावसुनि रहहीं ॥ कान मूंदिकर रोकर जोहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥ सुजत जाइ अस कहत तुम्हारे । भरत राम कह प्राण पियारे ॥

दोहा ॥

चंद्रश्रवै वरु अनलकण सुधा होइ बिषमूल ।
सपनेऊ कबऊ नकरहिं कछु भरतरामप्रतिकूल ॥

चौपाई ॥

एक बिधातहिं दूषण देहीं । सुधा देखाइ दीन्ह बिष जेहीं ॥ खरभर नगर शोच सब काहू । दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥ बिप्र बधू कुल मान जठेरी । जे प्रिय परम कैकयी केरी ॥ लगी देन सिख शील सराही । बचन बाण सम लागहिं ताही ॥ भरत न प्रिय मोहिं राम समाना ।

सदा कहउं यह सब जग जाना ॥ करउ राम परसहज सनेहू । केहि अपराध आज बनदेहू ॥ कबहुंन कीन्ह सवति अवरेसू । प्रीति प्रतीतजान सब देसू ॥ कौशिल्या अब काहा बिगारा । तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दोहा ॥

सीय कि पिय संग परिहरिहि लषण कि रहिहहिं धाम । भरतकि भूजब राजपुर नृप कि जियहिं बिनुराम ॥

चौपाई ॥

अस बिचारि जिय छाडउ कोहू । मोक कलंक कोटि जनि होहू ॥ भरतहिं अवसिदेउं युवराजू । कानन काज राम कारकाजू ॥ नाहिन रामराज कर भूखे । धर्म धुरीण विषय रस रूखे ॥ गुरु गृह बसहिंरामतजिगेहू । नृपमन असबरदूसरलेहू ॥ राम सरिस सुत कानन योगू । काहा कहहिं सुनि तुम कहिं लोगू ॥ जौन मानि है कहे हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे ॥ जौ परि हास कीन्ह कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावउ सोई ॥ उठउ बेगि सोइ करउ उपाई । जेहि विधि मोक कलंक नसाई ॥

छन्द ॥

जेहि भांति मोक कलंक जाइ उपाय करि कुल पालहूं । हठि फेर रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालहूं ॥ जिमि भानुविन दिनप्राण

विन तनुचन्दविन जिमि यामिनी। तिमि अवध तुलसीदास प्रभु विन समुझि धौं मन भामिनी॥

सोरठा॥

सखिनसिखावनदीन। सुनतमधुरपरिणामहित। तेइकछु कानन कीन्ह। कुटिल प्रबोधी कूबरी॥

चौपाई॥

उतर न देइ दुसह रुखरूखी। मृगिहि चितव जनु बाघिनि भूखी॥ ब्याधि असाधि जानि तिन त्यागी। चली कहति मति मन्द अभागी॥ राज करत इहिदैव बिगोई। कीन्हेसि असजस करै न कोई॥ इहि विधि बिलपहिं पुर नर नारी। देहिं कुचालिहि कोटिक गारी॥ जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा। कवन रामबिनु जीवन आसा॥ बिकल वियोग प्रजा अकुलानी। जिमि जलचर गण सूखत पानी॥ अति विषाद बस लोग लुगाई। गयेमातु पहिं राम गुसांई॥ मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ। इहै सोच जनि राखहिं राऊ॥

दोहा॥

नव गयंद रघुवंश मणि राज अजानसमान। छूटनानि बनगवन सुनि उरअनन्द अधिकान॥

चौपाई॥

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातुपद नायउ माथा॥ दीन्ह असीस लाय उर लीन्हे। भूषण बसन निछावरि कीन्हे॥ बारबार

मुख चूमति माता। नयन नेह जल पुलकित गाता॥ गोद राखि पुनि हृदय लगाये। स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये॥ प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई। रंक धनद पदवी जनु पाई॥ सादर सुन्दर बदन निहारी। बोली बचन मधुर महतारी॥ कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगल कारी॥ सुकृत शील सुख सीव सुहाई। जन्म लाभ कर अवध अघाई॥

दोहा॥

जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भांति।
जिमि चातकि चातक तृषित। दृष्टि शरद ऋतु स्वाति॥

चौपाई॥

तातजाउ बलि बेगि अन्हाहू। जो मनभाव मधुर कछु खाहू॥ पितु समीप तब जायहु भैया। भइ बड़िबार जाइ बलि मैया॥ मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुर तरु के फूला॥ *सुख मकरंद भरे श्रीमूला। निरखि राममन भ्रमर न भूला॥ धर्मधुरीण धर्म गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी॥ पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू। जहं सब भांति मोर बड़काजू॥ आयसु देउ मुदित मन माता। जेहि मुदमंगल

* अर्थ यह कि ऐसी सुख की वासना और कान्ति को देख रामचन्द्र का मन रूपी भंवर मोह को प्राप्त न हुआ॥

कानन जाता ॥ जनि सनेहबस डरपति मोरे† ।
आनंदमातु अनुग्रह तोरे ॥

दोहा ॥

बर्षचारिदशबिपिनबसिकरिपितु बचन प्रमान ।
आयसुपायपुनिदेखिहौं मनजनकरसिमलान ॥

चौपाई ॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के । सरसम लगे मातु उरकरके ॥ सहमिसूखिसुनि सीतलबानी । जिमि जवासपर पावस पानी ॥ कहि न जाय कछु हृदय बिषादू । जनुसहमेकरि केहरिनादू ॥ नयन सलिल तनु थरथर कांपी । मांजा मनहुं मीनकह ब्यापी ॥ धरिधीरज सुतबदननिहारी । गदगद बचन कहति महतारी ॥ तात पितहिं तुम प्राण पियारे । देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥ राजहेनकहं शुभदिन साधा । कहेउजान बन केहिं अपराधा ॥ तात सुनावहु मोहिं निदारू । को दिनकर कुल भयउ कृशानू ॥

दोहा ।

निरखिरामरुखसचिवसुत । कारणकहेउबुझाइ ।
सुनिप्रसङ्गरहि मूकगति । दशाबरणि नहिंजाइ ॥

चौपाई ॥

राखि न सकहिं न कहिसकहीं । दुहुंभांति उर दारुण दाहू ॥ लिखत सुधाकर लिख गा राहू । बिधिगति बाम सदा सबकाहू ॥ धर्म

† अर्थ यह कि रामचन्द्रजी कहते हैं तुम सनेह बस भूलि भी मत डरो मेरा मन बहुत आनन्द है ।

सनेह उभय मति घेरी। भइ गति सांप छछूं-दरि केरी॥ राखौं सुतहि होइ अवरोधू। धर्म जाइ अरु बंधु बिरोधू॥ कहौं जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच बिकल भइ रानी॥ बड़रि समुझि तिय धर्म सयानी। राम भरत दोउ सुत सम जानी॥ सरल सुभाव राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी॥ तात जाउं बलि कीन्हेउ नीका। पितु आयसु सब धर्मक टीका॥

दोहा।

राजदेन कहं दीन्ह बन मोहि न सोच दुख लेश।
तुम बिन भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेश॥

चौपाई॥

जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाउ जानि बड़ि माता॥ जो पितु मातु कहे बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना॥ पितु बन देव मातु बन देवी। खग मृग चरण सरोरुह सेवी॥ अंतहु उचित नृपहि बन बासू। बय बिलोक हिय होत हुलासू॥ बड़ भागी बन अवध अभागी। जो रघुबंस तिलक तुम त्यागी॥ जो सुत कहौं संग मोहि लेहू। तुमरे हृदय होय संदेहू॥ पुत्र परम प्रिय तुम सबही के। प्राण प्राण के जीवन जी के॥ ते तुम कहहु मातु बन जाऊं। मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं॥

दोहा॥

यह बिचारि नहिं करउं हठ झूठ सनेह बढ़ाय।

मानिमातुको नातबलि सुरति बिसरिजनिजाय॥

चौपाई॥

देवपितर सब तुमहिं गुसाईं। राखउँ नयन पलक की नाईं॥ अवधि अंबुप्रिय परिजन मीना। तुम करुणा कर धर्म धुरीना॥ अस बिचारि सोइ करउ उपाई। सबहिं जियत जेहि भेटउ आई॥ जाउ सुखेन बनहिं बलि जाऊं। करि अनाथ जन परिजन गाऊं॥ सब कर आज सुकृत फल बीता। भये कराल काल बिपरीता॥ बहु बिधि बिलपि चरण लिपटानी। परम अभागिनि आपुहिं जानी॥ दारुण दुसह दाह उर व्यापा। बरणि न जाय विलापकलापा॥ राम उठाय मातु उर लावा। कहि मृदुबचन बहुत समझावा॥

दोहा॥

समाचारतेहिं समयसुनि सीयउठी अकुलाय। जायसासु पदकमल युग बंदि बैगि सिर नाय॥

चौपाई॥

दीन्ह असीस सासु मृदुबानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी॥ बैठि नमित मुख सोचति सीता। रूपराशि पति प्रेम पुनीता॥ चलन चहत बन जीवन नाथा। कवन सुकृत सन होइहि साथा॥ की तनु प्राण कि केवल प्राना। बिधि कर तब कछुजात न जाना॥ चारु चरण नख लेखतिधरणी। नूपुर मुखर मधुर कवि बरणी॥

मनहुं प्रेम बसबिनती करहीं। हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं॥ मंजु बिलोचन मोचति बारी। बोली देखि राम महतारी॥ तात सुनहु सिय अतिसुकुमारी। सासुससुर परिजनहिं पियारी॥

दोहा॥

पिता जनक भूपालमणि ससुर भानुकुल भानु। पतिरबि कुलकैरवबिपिन बिधुगुन रूपनिधानु॥

चोपाई॥

मैं पुनि पुत्र बधू प्रिय पाई। रूप राशि गुण शील सुहाई॥ नयन पुतरि इव प्रीति बढ़ाई। राखहुं प्राण जानकिहिं लाई॥ कल्प बेलि जिमि बहुविधि लाली। सींचि सनेह सलिल प्रति पाली॥ फूलत फलत भये बिधि बामा। जानि न जाय काह परिणामा॥ पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन पग अवनि कठोरा॥ जिवन मूरि जिमि जुगवति रहेऊं। दीपबाति नहिं टारन कहेऊं॥ सोसिय चलन चहत बन साथा। आयसु काहा होय रघुनाथा॥ चन्द्र किरण रस रसिक चकोरी। रवि कुल नयन, सकै किम जोरी॥

दोहा॥

करि केहरि निशिचर चरहिं दुष्टजंतु बन भूरि। बिष बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनमूरि॥

चोपाई॥

बनहितकोल किरात किशोरी। रची बिरंचि

बिषय सुखभोरी। पाहन समि जिमि कठिन सुभाऊ। तिनहिं कलेश न कानन काऊ॥ कैतापस तिय कानन जोगू॥ जिन्हतप हेतु तजा सब भोगू॥ सिय बन बसिहि तात केहि भांती। चित्र लिखित कपि देखि डेराती॥ सुर सर सुभग बनज बन चारी। डाबर जोग कि हंस कुमारी॥ अस बिचारि जस आयसु होई। मैं सिख देउं जानकिहि सोई॥ जौं सिय भवन रहै कह अम्बा। मोर कहं होइ प्राण अवलम्बा॥ सुनिरघुबीर मातुप्रियबानी। धीरजसनेहसुधाजनुसानी॥

॥ दोहा॥

कहिप्रियबचन बिबेकमय कीन्हमातु परितोष।
लगेप्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिनगुनदोष॥

॥चौपाई॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समय समझ मन माहीं॥ राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भांति जिय जनि कछु गुनहू॥ आपन मोर नीक जौ चहहू। बचन हमार मानि गृह रहहू॥ आयसु मोरि सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥ एहितें अधिक धरम नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा॥ जब जब मातु करिहि सुधि मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी॥ तब तब तुम्हकहि कथा पुरानी। सुन्दरि समुझाएहु मृदुबानी॥ कहैं सुभाव सप्रथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखौं तोही॥

दोहा ॥

गुरु श्रुति संमत धर्म्म फल पाइय बिनहिं कलेश ।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश ॥

चौपाई ॥

मैं पुनि करि प्रमान पितु बानी । बेगि फिरब सुनसुमुखि सयानी ॥ दिवस जातनहिं लागिहि बारा । सुन्दर सिखवन सुनहु हमारा ॥ जो हठि करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुख पाउब परिनामा ॥ कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घाम हिम बारि बयारी ॥ कुस कंटक मग काँकर नाना । चलब पयादेहि बिनु पद चाना ॥ चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमि धर भारे ॥ कन्दर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहि निहारे ॥ भालु बाघ बृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दोहा ॥

भूमि शयन बल्कल बसन असन कंद फल मूल ।
ते कि सदा सबदिन मिलहिं सबै समय अनुकूल ॥

चौपाई ॥

नर अहार रजनीचर करहीं । कपट बेष बिधि कोटिन धरहीं ॥ लागै अति पहार कर पानी । बिपिन बिपति नहिं जाय बखानी ॥ ब्याल कराल बिहंग बन घोरा । निशिचर निकर नारि नर चोरा ॥ डरपहिं धीर गहन सुधि आये । मृग लोचनि तुम्ह भीरु सुभाए ॥ हंस गवनि तुमनहिं

बनयोगू। सुनि अपयश मोहिं देइहैं लोगू॥ मानस सलिल सुधा प्रति पाली। जिअइ कि लवन पयोधि मराली॥ नव रसाल बन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला॥ रहउँ भवन अस हृदय बिचारी। चन्द्रबदनि दुख कानन भारी॥

दोहा।

सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करइ हित मानि। सो पछिताय अघाइ उर अवसि होइ हित हानि॥

चौपाई॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पी के। लोचन ललिन भरे जल सी के॥ सीतल सिख दाहक भइ कैसे। चकइहि सरद चांदनी जैसे॥ उतरु न आव बिकल बैदेही। तजन चहत सुचि स्वामि सनेही॥ बरबस रोकि बिलोचन बारी। धर धीरज उर अवनि कुमारी॥ लागि सासु पग कह कर जोरी। छमब देबि बड़ि अबिनय मोरी॥ दीन्ह प्रान पति मोहि सिख सोई। जेहि बिधि मोर परम हित होई॥ मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं। पिय बियोग सम दुख जग नाहीं॥

दोहा।

प्रान नाथ करुना यतन सुन्दर सुखद सुजान। तुम बिन रघुकुलकुमुदबिधुसुरपुर नरकसमान॥

चौपाई॥

मातु पिता भगनी प्रिय भाई। प्रिय परिवार सुहृद समुदाई॥ सासु ससुर गुरु सुजन

सहाई। सुत सुन्दर सुशील सुखदाई॥ जहंलगि नाथ नेह अरुनाते। पिय बिनु तियहि तरनि ते ताते॥ तन धन धाम धरनि पुर राजू। पति बिहीन सब शोक समाजू॥ भोग रोग सम भूषण भारू। यम यातना सरिस संसारू॥ प्राननाथ तुम बिन जगमाहीं। मोहिं सुखद कतहुं कछु नाहीं॥ जिय बिन देह नदी बिन बारी। तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी॥ नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। शरद बिमल बिधु बदन निहारे॥

दोहा॥

खग मृग परिजन नगर बन बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुर सदन सम परर्ण शाल सुखमूल॥

चौपाई॥

बन देवी बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा॥ कुश किसलय साथरी सुहाई। प्रभु संग मंजु मनोज तुराई॥ कन्दमूल फल अमिय अहारू। अवधि सौधसुख सरिस पहारू॥ छण छण प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी॥ बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे॥ प्रभु बियोग लवलेश समाना। सब मिलि होहिं न कृपा निधाना॥ अस जिय जानि सुजान शिरोमनि। लेइय संग मोहिं छांड़िय जनि॥ बिनती करौं बहुत का स्वामी। करुणामय अंतर उर जामी॥

दोहा ॥

राखिय अवध जो अवधि लगि रहत जो जानिय प्रान।
दीनबंधु सुन्दर सुखद शील सनेह निधान ६६ ॥

चौपाई ।

मोहिं मग चलत न होइहि हारी। छिनछिन चरन सरोज निहारी। सबहि भांति पिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं॥ पाय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहौं बाय मुदित मन माहीं॥ श्रम कन सहित श्याम तन देखे। कहा दुख समय प्रान पति पेखे॥ सम महि तृन तरु पल्लव डासी। पाय पलोटहि सब निशि दासी॥ बारबार मृदु मूरति जोही। लागिहि तात बयारि न मोही॥ को प्रभु संग मोहिं चितवनि हारा। सिंह बधुहि जिमि ससक सियारा॥ मैं सुकुमारि नाथ बन योगू। तुम्हहिं उचित तप मो कहुं भोगू॥

दोहा ॥

ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौन हृदय बिलगान।
तौ प्रभु विषम वियोग दुख सहिहहिं पामर प्रान॥

चौपाई ॥

अस कहि सीय विकल भइ भारी। बचन वियोग न सकी संभारी॥ देखि दशा रघुपति जिय जाना। हठि राखे नहिं राखिहि प्राना॥ कहेउ कृपाल भानु कुल नाथा। परिहरि सोच चलहु बन साथा॥ नहिं विषाद कर अवसर

सानू । वेग करब बन गवन समाजू ॥ कहि प्रिय बचन प्रियहि समुझाई । लगे मातु पद आशिष पाई ॥ फिरहिं दशा विधि बहुरि कमोरी । देखिहौं नैन मनोहर जोरी ॥ वेगि प्रजा दुख मेटो आई । जननी निठुर विसरि जनि जाई ॥ सुदिन सुघरी तात कब होई । जननी जियत वदन विधु जोई ॥

दोहा ॥

बहुरि बच्छ कहि लालकहि रघुपति रघुबर तात
कबहिं बुलाइ लगाइ उर हरषि निरखि हौं गात

चौपाई ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । बचन न आव बिकल भइ भारी ॥ राम प्रबोध कीन्ह विधि नाना । समय सनेह न जाय बखाना ॥ तब जानकी सासु पग लागी । सुनिय माय मैं परम अभागी ॥ सेवा समय दैव बल कीन्हा । मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥ तजब छोभ जनि छाड़िय छोहू । करम कठिन कछु दोष न मोहू ॥ सुनि सिय बचन सासु अकुलानी । दशा कवन विधि कहो बखानी ॥ बारम्बार लाइ उर लीन्ही । धर धीरज सिख आशिष दीन्ही ॥ अचल होउ अहिवात तुम्हारा । जब लग गंग यमुन जल धारा ॥

दोहा ॥

सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।

चलीनायपद पद्म सिर अतिहित बारहि बार॥

अथ लक्ष्मणजी के शक्ति बाण लगना और राम चन्द्रजीका विलाप वर्णन॥

चौपाई॥

उहां राम लक्ष्मणहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुहारी॥ अर्द्ध रातगइ कपि नहिं आवा। राम उठाय अनुज उर लावा॥ सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधुसदा तव मृदुल सुभाऊ॥ मम हित लागि तजे पितु माता। सहेउ बिपिन हिमआतप बाता॥ सो अनुराग कहा अब भाई। उठहु बिलोकि मोरि बिकलाई॥ जो जन त्यौं बनबंधु बिछोहू। पिता बचननहिं मनतेउं ओहू॥ सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहि बारा॥ अस विचार जिय जागहु ताता। मिलहिनजगतसहोदरभ्राता॥ यथापंख बिनु खग अति दीना। मणि बिनु फणि करिवर करिहीना॥ असमम जिवनबंधुबिनतोही। जो जड़ दैव जियावै मोही॥ जैहों अवध कवन मुंह लाई। नारि हेत प्रिय बंधु गंवाई॥ बरु अपजस सहतेउं जग माहीं। नारि हानि विशेष छति नाहीं॥ अब अवलोकि शोक यह तोरा। सहै कठोर निठुर उर मोरा॥ निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम प्राण अधारा॥ सौंपेउ मोहि तुमहि गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी॥ उतर ताहि दैहों का जाई।

उठि किन मोहिं सिखावहु भाई ॥ बहु बिधि सोचत सोच विमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन ॥ उमा अखण्ड एक रघुराई। नर गति भाव कृपाल दिखाई ॥

सोरठा॥

प्रभु बिलाप सुनि कान विकल भये बानर निकर। आइ गयेहनुमान जिमि करुणा महँ वीररस ॥

तृतीय अध्याय॥

पत्र लिखने की रीति॥

बेटी की ओर से पिता के नाम

ऊपर का शिर नामा॥

पत्र मिदं परम पूज्य श्री युत मुन्शी श्याम सुन्दर पिताजी के श्री चरणों में काशी धाम में पहुंचे॥

पत्र

मथुरा धाम कार्तिक वदी २ द्वितीया संवत् १९३२ विक्रमी

सिद्धि श्री परम पूज्य तात !

श्री चरण दर्शनाभिलाषिनी परम अनुगता दासी श्री मती विद्यावती की कोटि २ राम २ वांचना, यहां के समाचार भले हैं और आपके सदा भले चाहिये॥

आसौज सुदी पंचमी ५ की लिखित आपकी आज्ञा पत्री प्राप्त हुई जिसके पढ़ने से मनको बड़ा आनन्द हुआ। आपने जो मुझे लिखा है कि अब तुम सेयानी हुईं तुमको चाहिये कि अपनी सुसराल को चली जावो और अपने पति का घर बार संभालो कि स्त्री का स्वधर्म यही है, सो मैं यह लिखचुकी हूं कि आप के श्री चरण दर्शन किये बिना मैं अपने पतिके घर नहीं जासक्ती और इसी कारण माता का कथन मैंने अस्वीकार किया था और दो चार

बार मुझे वहां से लेने को आकर फिर गये थे इसमें जो मेरा कुछ अपराध होतो कृपा करके मार्जन करें ॥

हे तात ! पृथिवीमें माता पिता के तुल्य कोई प्यारा नहीं है सो आपके श्री चरण एक बार दर्शन किये बिना मैं क्योंकर अपनी सुसराल को चली जाती तो फिर वे यहां कभी मुझे भेजते वा न भेजते क्योंकि स्थान बहुत दूर है और मैं आपके श्री चरण दर्शन को तरसती ही रहजाती अतएव आप अब छुट्टी लेकर भाई राम लाल का विवाह करने आवेंगे तब भाई का विवाह देख और आपके श्री चरण दर्शन कर जो आप आज्ञा देंगे तो अपनी सुसराल को चली जाऊंगी ॥

कल बड़े भाई जीकी एक पची आई थी वहां सर्व प्रकार से कुशल है और उन्होंने यह लिखा है कि मैं भी माघ के महीने में दो मास की छुट्टी ले कर घर आऊंगा यहां सब सुखी हैं माता की ओरसे और रामलालकी ओर से कोटि कोटि प्रणाम वांचना ॥

श्री चरण सेविका विद्यावती ॥

उत्तर विद्यावती के पत्र का

काशी धाम माघ शुदी पंचमी

सम्वत १९३२ विक्रमी

स्वस्तिश्री प्राणाधिका चिरंजीविनी श्रीमती

विद्यावती !
मेरी बहुत२ आशीष बांचनी यहांके समाचार सब भले हैं और तुम्हारे सदा भले चाहियें ॥

तुम्हारी हस्ताक्षर लिखित पत्रिका हमारे पास पहुंची जिस से परमानन्द लाभ हुआ। बेटी ! तुम्हारी ज्ञान शीलता सुशीलता और नम्रता को देख कर इस समय तुम्हारे देखने कोमेराअन्तःकरणऐसाव्याकुलहोरहाहैकि इस पत्र के लिखते २ मेरे नयन युगल से अश्रू निकलते हैं और लिखा नहीं जाता बेटी ! तुम्हारी पितृ भक्ति पर धन्यहै आज कल तुम ऐसी पितृवत्सला स्त्री बहुत कम होती हैं अब ज्यों त्यों दो मास की छुट्टी लेकर तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हें आंखों से देख कर हृदय शीतल करूंगा और प्राणाधिक रामलाल का बिवाह तुम्हारेही सन्मुख करदूंगा कुछ चिन्ता मत करना तुम्हारे बड़े भाई जी को मेरा आशीर्वाद लिख देना और लिखना कि माघ के महीने में अवश्य २ घर आजावें मैं भी थोड़े दिनों में उन को पत्र लिखूंगा। प्राणाधिकरामलाल और तुम्हारी माता को मेरी आशीष कह देना और अपने कुशल समाचार से सदा चिन्ता दूर करते रहना यहां के सब कुशल से हैं। और समाचार तुम्हारे पत्र आने पर लिखूंगा

आशीर्वादक श्री श्यामसुन्दर ॥

शिरनामा ॥

पत्र मिदं श्री मती विद्यावती के पास मुन्शी श्यामसुन्दर के घर पर श्री मथुराधाममेंपहुंचे

बहिन की ओर से बड़े भाई के नाम

मथुरा धाम माघ सुदी अष्टमी
संवत् १९३२ विक्रमी

सिद्धि श्री परम मान्य पितृ तुल्य भ्रात।

श्री चरण दर्शनाभिलाषिनी विद्यावती की कोटि २ राम २ बांचनी यहां के सब समाचार भले हैं और आप के सदा भलेचाहियें।

कल पिता जी की आज्ञा पत्री आई जिस से बहुत आनन्द हुवा उन्हों ने तुम्हें लिखा है कि माघ के महीने में तुम अवश्य २ छुट्टी लेकर घर चले आना पिता थोड़े दिनों में छुट्टी लेकर भाई रामलाल का विवाह करने आवेंगे और सब समाचार भले हैं। माता की अशीष बांचना और रामलाल की राम २ बांचना और जब घर आओ तो मेरे लिये कृपा करके एक अच्छे छापे की रामायण लेते आना ॥

एकांता नुगता दासी
विद्यावती

शिरनामा ॥

पत्रमिदं परम मान्य पितृ तुल्य मुंशीमुकुन्दलाल जी भाई जी के श्री चरणों में कानपुर पहुंचे।

उत्तर ॥

कानपुर पौष बदी दूज संवत् १९३२

स्वस्तिश्री प्राणाधिका चिरंजीव।

मेरी बज़त २ अशीष बंचना—तुम्हारी पची पज़ंची सब समाचार पढ़कर बड़ा आनन्द ज़आ। पिता जीकी आज्ञा के अनुसार मैं अवश्य२ माघ के महीने में घर पज़ंचूंगा और तुम्हारे लिये वह पुस्तक लेता आउंगा—माता को हाथ जोड़कर मेरी बज़त२ प्रणाम कहदेना और रामलाल को अशीष कहदेना—और यहां के समाचार भले हैं अपने समाचार सदा लिखते रहना—अब मुझे अधिक लिखने का अवकाश नहीं है॥

तुम्हारा परम शुभाकांक्षी

मुकुन्द लाल

पिता की ओरसे पुत्रीको ॥

प्राणाधिका—

तुम्हारी सुसराल से कल एक पत्र आया—अगले महीने में तुम्हारा अंचलग्रह किया जावेगा अमर नाथके नाम जो पची मैंने लिखी है उस में अलङ्कार वस्त्र आदि के मोल लेनेका विवरण बिस्तार लिखाहै और अब मैं घर नहीं आसक्ता नहीं तो तुम्हें बिदाके समय कुछ उपदेश देता परन्तु इस

पच में कुछ उपदेश लिखताहूं तुम चित्त लगाकर सब काम मेरेउपदेशके अनुसार करते रहना॥बेटी! देखो स्त्री का यह धर्म्म है कि जब वह अपने पति के घर जाय तो उसकी आज्ञा और सम्मति बिना कोई काम न करे। और ऐसी चाल चले जिस से पति,ननद,और सास सब उसपर सन्तुष्ट रहें—संसार में जो अपने से बड़े हों उनका आदरमान करना और अपनी सखी सहेलियों और देवरानी जिठानियों और सास ननद से कभी विवाद विरोध न करना और कपड़े गहने और खाने पीनेके लिये किसी से बुरी मत बनना और बहुत लालच मत करना जैसा मिले खालेना और पहिनलेना।जो तुम से कोई चूक होजावेतो अपनी बिनती से अपना अपराध क्षमा करालेना—जो कोई तुम्हें कुछ कटुबचन कहबैठे तोउसका लौटकर कुछ उत्तर मत देना। और घरके बालक बालिका सबको सम दृष्टि प्यार की आंखसे देखना और अपने पति अथवा सास ननदकी निन्दा किसीके आगे मत करना और अपने घरकी बात जो छिपाने के योग्य हो किसी से मत कहना और तुम्हारे पति जो किसी कारण रुष्ट होजायें तो अभिमान मत करना और करजोर बिनती कर मना लेना और उन की और अपनी सास की सदा सेवा करती रहना—सास जिस बातको तुम्हें वारण करें उसे कभी मत करना—सास

को अपनी माताके तुल्य समझना और सब से मीठी बोलना—अधिक और क्या समझाऊं तुम आप सेयानीहो। और कभी२ अपनी कुशल समाचार आदि हमें लिखते रहना॥ यहां सबकुशल क्षेमहै और हमारी राम२ यथायोग्य सब छोटों बड़ों को कहदेना॥

तुम्हारा शुभाकांक्षी आशीर्वादक
श्री शिवलाल

स्त्रीकीओरसे पतिके नाम॥

प्राणनाथ! वैशाखवदी ४ संवत् १९३२

श्री चरण सेविका, परम अनुगता परिचारिका, एकान्त आधीना श्रीमती कमलावती की कोटि कोटि राम२ बंचना। यहांके समाचार सब शुभ हैं और आपकी कुशल सदा चाहतीहूं। जबसे आप काशी जीको गयेहैं तबसे कोई आज्ञापची आप की नहीं आई इसी कारण मेरा और माता जी का प्राण बड़ा व्याकुल होरहा है अतएव कर जोड़कर बिनती करतीहूं कि पत्र पाठ मात्र अपनी कुशल आदि समाचार लिख कर श्रीमती माताजीकी और इस चातकिनी की चिन्ता और प्यास मोचन करना। आपकी आज्ञानुसार मैंने १००) रुपयेके झुमकोंकी जोड़ी बनवाई है और वह बड़ी सुन्दर बनीहै—माता और जीजी उन्हें देख-

कर प्रसन्न हुईं—कल दासी के पिताका एक पत्र आयाथा उन्होंने लिखाहै कि अगले महीने में तुम्हेंलेनेको गाड़ी भेजूंगा सो आपकी आज्ञाचाहतीहूं कि जो आप आज्ञा दें तो कुछदिन अपने माता पिता के रह आऊं॥ जब आप घरको आवें तो अवश्य२ काशीजीसे कृपाकरके दासी के लिये एक बनारसी दुपट्टा और एक अच्छे छापे की कौमुदी व्याकरण लेते आना॥ यहां आर्य्यतात और माता और सब बालक बालिका सुख आनन्द से हैं श्रीमती माता जीकी बहुत २ अशीष बंचना और इसपत्रका उत्तर शीघ्रलिख देना॥

तुम्हारी चरण सेविका
श्रीमती कमलावती

पती की ओर से स्त्री को॥

काशीधाम वैशाखबदी १०

संवत् १९३२

स्वस्तिश्री पति प्राणाप्राण प्रिये! मेरी बहुत २ अशीष बंचना—तुम्हारी हाथ की लिखी पत्री पहुंची पढ़कर बड़ा आनन्दहुआ प्रिये! बहुत दूरके पथश्रांत पथिकको अतिथि शाला दिखाई देनेसे जैसा आनन्द होता है तुम्हारी पत्रीसे मैं भी वैसाही आनन्द हुआ—बहुत से कामों करके

तुम्हें पत्री लिखने का अवकाश नहीं हुआ इसी कारण पत्र नहीं लिख सका हाथ जोड़ कर मेरा यह अपराध माता से क्षमा करवा लेना ॥

जैसी तुम और माताजी मेरे देखनेको व्याकुल होरहीहो मैंभी तुम्हें और श्रीमती माताजी के श्री चरण दर्शनों को वैसाही अस्थिर होरहाहूं पर क्याकरूं कुछ बश नहीं—पराई नौकरीहै जो ईश्वरकी कृपाहोगी तो मैं शीघ्र आमिलूंगा—जो तुमने अपने पिता के घर जाने की अनुमति मांगी है सोमेरी उसमें सम्पूर्ण सम्मतिहै—जब कोईलेने आवै तो तुम बेखटके चलीजाना-तुम्हारे लिये एक १००)रुपये की हुण्डी भेजताहूं उसे भुना कर जब अपने पिता के जाओ तो रुपया अपने पिता के घरलेतेजाना और जबमैं घरको आऊंगा तुम्हारा डुपट्टा और पुस्तक अवश्य लेता आऊंगा ॥ यहां के समाचार सब भलेहैं। हाथ जोड़कर सब छोटे बड़ोंसे मेरी राम २ कह देना और अपने समाचार सदा लिखते रहना ॥

शुभाकांक्षी

श्रीरामप्रसाद

चतुर्थ अध्याय ॥

वस्तु बिचार ॥

नन्दलाल और बिद्यावती का बृत्तान्त ॥

नन्दलाल "जी जी। देख आज कैसी श्याम घटा छारही है; आज मेह निश्चय आवेगा और वह देख घन बादल भाग २ कर समुद्र में पानी लेने जा रहे हैं।

जीजी! यह बादल किसके आधार खड़े हैं?

विद्यावती—नंदलाल। तूतो बड़ा बावला है यह बादल क्या जीव हैं? जो भाग २ कर पानी पीने जाते हैं यह तो इसी भूमि की भाफ़ है जिस पर तू खड़ा है॥

देख जैसे उष्ण तवे पर जब पानी डालते हैं वा गीली लकड़ी को आग में जलाते हैं तो उसमें जो जलका अंश होता है वह अग्नि की उष्णता से भाफ़ अर्थात् धूम की आकृत होकर उड़ जाता है इसी प्रकार से इस पृथ्वी में समुद्र नदी, धरती, वृक्ष और जीव, मनुष्य के शरीर का जलांश उष्णता के कारण भाफ़ होजाता है। उष्णता पर शीतलता और शीतलता पर उष्णता पड़ने से भाफ़ उतपन्न होती है इसी कारण जाड़े में जब हमारा शरीर उष्ण होता है तो बाहर की शीतलता से हमारे मुख से भाफ़ निकलती है अर्थात् हमारे स्वास का जलांश धूम के आकार में प्रकाश मान होता है

और जो यह संदेह करो कि यह किस प्रकार से जाना जाता है कि हमारे श्वास में जलांश होता है तो उसका यह उत्तर है कि किसी दर्पण पर अपने मुख की भाफ़ डाल कर देखो तो उस पर जलकण दिखाई देंगे। और भाफ़ वायु से लघु होने के कारण वायु पर चढ़ जाती है और ऊपर की शीतल वायु से जम कर बादल के आकार बन जाती है और जब वह बादल आकाश के किसी ऐसे उष्णभाग में पहुंचते हैं कि जहां की पवन और भी शीतल हो तो भाफ़ पानी होकर मेह बरषने लगता है। जैसे पतंग वायु के आश्रय ऊपर खड़ी रहती है इसी प्रकार से बादल वायु से लघु होने के कारण वायु के आश्रय ऊपर स्थित रहते हैं॥

विद्यावती तो यह कह ही रही थी कि इतने में एक बादल के गजने का शब्द सुनाई दिया और बिजली चमकी तब नंदलाल ने चौंक कर विद्यावती का हाथ पकड़ लिया और कहने लगा कि जीजी! तूतो बड़ी झूठी है तू तो कहती थी कि बादल भाफ़ होय हैं-तो ऐसा बिकट शब्द क्योंकरें है? क्या भाफ़ बोला करती है? और यह अग्नि क्यों चमकी?

विद्यावती-नंदलाल! इस पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु में कुछ उत्ताप और कुछ आकर्षण शक्ति होती है बादल में जो उत्ताप होता है उसको

तड़ित वा विद्युत वा बिजली कहते हैं जब वह उत्ताप उज्वलाकार होकर प्रकाश मान होता है तब हम को दिखाई देता है और जब वह उत्ताप एक बादल से निकल कर दूसरे बादल की आकर्षण शक्ति के कारण अति वेग से उस बादल में जा मिलता है तब जो वायु संचालित होती है उससे एक शब्द उत्पन्न होकर हमारे कानों तक पहुंचता है इसी को बादल का गर्जना कहते हैं जब वह अग्नि अर्थात् बिजली बादल को छोड़ कर पृथ्वी की किसी वस्तु पर पड़ती है तो उसे भस्मकर डालती है और खण्ड२ कर देती है और यह जो कोई कहा करते हैं कि बिजली को पकड़ सक्ते हैं और उसे कूटकर उसकी तलवार बना सक्ते हैं यह बात मिथ्या है यह कोई ऐसी वस्तु नहीं जो पकड़ी जाय केवल अग्निकी लपट की नांई होती है और जब बिजली बादल को छोड़ देती है तब किसी वस्तु के सहारे धरती में प्रवेश करना चाहती है इसी कारण उसके पथमें जो वस्तु ऊंची अर्थात् निकट होती है उसी के सहारे और उसी के अंदर होकर धरती में पहुंचती है इसी कारण मेह के समय ऊंचे वृक्ष अथवा ऊंचे घर के नीचे ठहरना अच्छा नहीं क्योंकि जो बिजली उस पर गिरे तो धरती में जाते २ उसे छोड़ कर मनुष्य के शरीर में होकर चली जाती है और

मनुष्य जल कर मर जाता है इसकी कारण यह है कि मनुष्य का शरीर और वस्तुओं से बिजली के लिये अच्छा सहारा है॥

थोड़ी काल पीछे बड़े २ ओले पड़ने लगे॥ नन्द लाल ने एक ओला हाथ में उठा कर दिखाया और बोला "जीजी! यह तो बड़ा शीतल है, यह ओले कहां से आवें हैं? भगवान के घर ऐसे ओले कितने रक्खे हैं?

विद्यावती—नंदलाल तू बड़ा निर्बोध है यह तो मेह की बूंदें ऊपर से गिरते २ शीतल वायु के लगने से कई बूंदें मिल कर जम जाती हैं और पाले की नाईं डले बनकर गिरती हैं भगवान के घर में एकट्ठी थोड़ी ही धरी हैं॥

थोड़ी देर में बादल खुलगए तब विद्यावती ने रसोई चढ़ा दी॥

नंदलाल ने खेलते २ एक लोन की डली उठा ली और पूंछा जीजी यह लोन कैसे उपजता है और कहां से आता है॥

विद्यावती ने कहा लोन कई प्रकार का होता है; एक लोन तो कंकर की नाईं धरती से खोद कर निकाला जाता है। और एक प्रकार का लोन समुद्र के अथवा किसी झील वा कूप के खारी जल के औटाने से बनता है और यह लोन की डली जो तेरे हाथ में है इसको साम्हर कहते हैं। जैपुर में एक झील है उसका नाम साम्हर

है और वहां लोन का बड़ा कारखाना है उस झील के पानी को औटाने से बड़ा निर्मल लोन बनता है फिर वह लोन रेलमें भर २ कर सब देशों में चला जाता है ॥

नंदलाल "जीजी यह सोना चांदी जो लंका से तोड़ २ कर लाते हैं उन्हें राक्षस खा नहीं जाते?

विद्यावती-तूतो बावलों की सी बात करता है सोना चांदी सब लंका से थोड़ाही आता है जैसे लोन धरती खनन से निकलता है उसी प्रकार से कई देशों में सोना चांदी लोहा आदि धातु भी खानों से निकलती है प्यारिये लोग उसे धो २ कर गला कर परिस्कृत कर देश २ को ले जाते हैं और लंका में अब राक्षस थोड़े ही बस्ते हैं वहां तो इन्हीं अंग्रेजों का राज्य है वहां भी यहां जैसे साहिब लोग और हमारे जैसे पढ़े लिखे चंगे भले मनुष्य बस्ते हैं। वहां से सदा काग़ज़ पत्र हमारे लाट साहब के पास आते रहते हैं ॥

नन्दलाल-जीजी राक्षस कैसे होते हैं ?

विद्यावती-भाई राक्षस जंगली असभ्य मनुष्यों को कहते हैं जो लोग बनमें रहते हैं और मनुष्यों में कभी नहीं आते नंगे फिरा करते हैं रहने को घर नहीं बनाते भूख के मारे जो मिले वह खालेते हैं जब भीड़ पड़ती है तो जीव जंतुओं का कच्चा मांस अथवा स्वजातियों को मारकर

खा जाते हैं वह बोलना और लिखना पढ़ना वा किसी वस्तु की भलाई बुराई नहीं जानते और किसी वस्तु का ज्ञान नहीं उन्को होता इन मनुष्यों को संस्कृत में राक्षस कहते हैं उन्को मनुष्यों में लाकर यदि विद्या सिखाई जाय और बोलना चालना बताया जाय तो वह भी हमारे जैसे मनुष्य बन जांय और अपने ही साथियों को राक्षस बतानेलगें॥ जंगली असभ्य जातियों क राक्षस कहते हैं; राक्षस किसी जंतु का नाम नहीं है। अफ़्रीका नामी एक देश में ऐसी असभ्य जाति बसत हैं॥

नंदलाल—जीजी! तेरीते रेशमी साडी बसत सुन्दर है, मैं भी ऐसाही एक अंगा बनवाऊंगा और बाड़ी में रेशम बो कर सदा कपड़े बनाया करूंगा॥

विद्यावती—तूतो बड़ा निर्बोध है क्या रेशम कोई पेड़ थोड़ेही होते हैं जो तू अपनी बाड़ी में बोवेगा—यह तो एक कीड़े की राल है बंगाले और दक्षिण देशमें बेरी और तूतों के पेड़ पर एक प्रकारका कीड़ा होता है वह अपने मुख से राल निकाल एक टहनी में फसा कर उसी राल को लपेटता जाता है लोग उसे पेड़ परसे तोड़ लाते हैं और कितने एक ऐसे घर इकट्ठे करके पानी में उबालते हैं कीड़ा भीतर-ही भीतर मर जाता है और उसकी तार २

अलग होजाती हैं तबउसे किसी वस्तु पर लपेट लेते हैं और फिर धोकर नाना प्रकार के रंगों से रंजित कर देतेहैं और फिर उसके वस्त्र बना लेते हैं ॥

इतने में बनियों की लड़की गंगा आई उसने विद्यावती को हींग का छौंक लगाते देख कर कहा विद्यावती ! तुमतो बड़ी कुचाल हो हींग जाने क्या बला है तुम उसे तरकारी में छौंक कर खाते हो लोग कहते हैं कि गधे की खाल सड़ा कर हींग बनाते हैं ॥

विद्यावती-बावली ! हींग ऐसी बुरी वस्तु कदाचित् नहीं यहतो काबुलऔर सुलतान की ओर एक पेड़की गोंद होती है किसी जंतु की त्वचानहींहोती(गंगा)"मेरेभाईगंगाजी नहाने गए थे पथ में उन्होंने एकभूत देखा—विद्यावती हंसकर बोली बताओ क्योंकर देखा ?

गंगा-भाई तो यों कहताथा कि एकदिनरात केसमय हम ऊंटपर चढ़े चले जातेथे एक गांव से थोड़ी दूर जाकर एक चांदना सा दिखाई दिया मैंने जाना कि किसानों ने खेत में आग जलाई होगी जाड़े की ऋतुथी मैंने ऊंट वाले से कहा कि भाई चलो हाथ पैर सेंकलें जो शीघ्र २ ऊंटको दौड़ाया तो ज्यों २ निकट पहुंचे त्यों त्यों वह चांदना हमसे दूर २ हटता गया जब बहुत देर होगई तब ऊंट वाले ने कहा लाला

जी। हो न हे। यहतो छलावाहै चलो गांवकोही लौटचलें नहींतो हमतुम आज दोनों खेत रहेंगे यह बला जीतेनहीं छोड़ेगी और मैंने डरकर कहा अच्छा चलो। गांव कोही लौट चलें फिर जबहम गांवकी ओर ऊंट भगाने लगे तब वह छलावा भी हमारे पीछे २ भागने लगा हमारा उसका हाथ एकही का अंतर रह गया। हमने जाना कि अब ई यहनहीं छोड़ेगा जबऊंट हलके २ चलने लगा तो छलावा वहीं ठहर गया हमने गाओंकी राहली जो गांवमें पहुंचे तो मुझे तो उसी समय ताप चढ़ा उस गांव में एक सेयाना रहा करता था उसने बहुतसी झाड़ फूंक की तब तीसरे दिन मेरा ताप उतरा॥

ले विद्यावती यह तो आंखों देखी बातहै तूतो कहती थी कि भूत किसी को दिखाई नहीं देता॥

विद्यावती-बावली तुम्हें धोरा नहीं; प्रत्येक गांव के बाहर कुछ अन्तर एक जगेह होती है वहां गांव के मरे डंगर फेंके जाते हैं और उनसड़े जन्तुओं की देहोंसे एक प्रकारकी बाष्प अर्थात् बुरी बास की हवा निकलती है इसको इंग्रेजी में ग्यास कहते हैं कलकत्ता में एक प्रकार के कोयलों की ग्यास से सारे नगर में बिना तेल से चांदना हे ताहै जो ग्यास सड़ी वस्तुओं से निकलकर वायुमें तिरकर रातको चांदना करती

है उसको अंगरेजी में फासफोरेटेड हाय ड्रोजन गैस कहते हैं अर्थात् उस में फास फोरस नामक एक वस्तु का एक अंश होता है फासफोरस जन्तुओं की हड्डियों के गलाने और उसमें गंधद्रावक अर्थात् गंधक का तेजाब डालकर बनाते हैं इस का यह गुण है कि हवा में रखने से वा थोड़ीसी उत्ताप में रखने से जल पड़ती है इसी की अंग्रेजी दीवा सिलाई बनती है सो जब हम उस गैस के चाटने को आग जानकर उस के पास जाते हैं तो हमारे चलने से हमारे आगे की हवा उसे धकेल कर हमसे आगे ले जाती है और जब हम उससे डर कर उलटे भागते हैं तब हमारे भागने से हमारे पीछे की हवा की लहरें उसे खींच २ कर हमारे ओर लाती हैं इसी को निर्बोध लोग भूत और छलावा कहते हैं; डर कर पीड़ित होजाते हैं परंतु यह भूत कदाचित् नहीं। बहुत से धोखा देने वाले लोग झाड़ फूंक का बहाना कर अच्छी कमाई कर लेते हैं ऐसे मनुष्य कम हैं जो यथार्थ भूत विद्या जानते हों॥

गंगा—विद्या वती! तेरी यह बात तो मेरे मन में पहुंच गई मैं भाई से जाकर कहूंगी॥

जब विद्या वती रसोई कर चुकी तब उसका बड़ा भाई राम लाल जो कालेज में पढ़ता था घर आया और कहा विद्या वती! आज कल-

कत्ते से तार में समाचार आया कि वहां के चीफ़ जस्टिस अर्थात् प्रधान विचार कर्त्ता को कल एक मुसल्मान ने मार डाला। विद्यावती बोली भाई यह तार में किस प्रकार समाचार आता है क्या कोई चिट्ठी लिख कर उसमें बांध देते हैं? यह तो बड़े अचंभे की बात है कि एक सहस्र कोस की बात एक दो घंटे में सुनलो राम लाल ने कहा विद्यावती जब तुम और पुस्तक पढ़ोगी तब अच्छे प्रकार समझोगी परंतु मैं बड़ी २ बातें एक प्रकार से तुम्हें समझाता हूं बिजुली संबंधी एक प्रकार की आकर्षण शक्ति होती है कई एक वस्तुओं और धातोंके संयोग से मनुष्य हाथ से वह आकर्षण शक्ति उत्पादन कर सक्ता है एक प्रकार की ऐसी कल बनी हुई होती है कि जो कोई उस कल में संयुक्त दो तारों के सिरे अपने दोनों हाथों से पकड़े और एक दूसरा मनुष्य उस कल को फेरे तो उस कल की आकर्षण शक्ति से उस पकड़ने वाले मनुष्य के शरीर में एक ऐसा सन्नाटा होता है और उस का हाथ हिलने लगता है कि चाहे कितनाही बल करे रुक नहीं सक्ता है इस कल को अंग्रेजी में गैल बेनिक बेटरी कहते हैं इसी भांतिकी एक और कल होती है उसमें घड़ी जैसे कांटे लगे हुए होते हैं और ऐसी एक अथवा कईकलें हरेक स्टेशन् अर्थात् पड़ाव में रक्खी हुई होती हैं इसे

इलेक्ट्रिक मेटरी कहते हैं और हर एक कल पर एक २ मनुष्य नियुक्त होता है एक अथवा कई तार इनकलों से बराबर संयुक्त रहते हैं॥

जब कुछ समाचार देना होता है तो जहां से समाचार देना हो वहां वाला मनुष्य अपने वाली कल को चलाता है कलके चलाने से उस का कांटा हिलता है तब वह संयुक्त तारों के अंदर होकर वह आकर्षण शक्ति जिस जगह समाचार भेजा जाता है वहां के कल के कांटे को भी उसी प्रकार से हिलाती है तब वहांवाला मनुष्य चित्त लगाकर कांटे के हिलने की ओर देखता रहता है और उस के हिलने से जो जो संकेत होते जाते हैं एक काग़ज़ पर लिखता जाता है फिर अपने वाली कल हिलाकर उत्तर देता जाता है एक २ अक्षर का एक २ संकेत नियुक्त होता है यह संकेत सब लोग जानते हैं यथा कांटा एक बार दाहिने ओर हिलने से अमुक अक्षर और दोबार हिलने से अमुक अक्षर एक बार बाईं ओर हिलने से अमुक अक्षर इसी प्रकार से सब अक्षरों का एक २ संकेत नियुक्त है जब सब अक्षर लिख चुकते हैं तब एक समाचार बन जाता है और कोई चिट्ठी उसके भीतर नहीं बांध देते हैं॥

विद्यावती-भाई यह बात तो मने समझी पर एक बात और बताओ कि यह रेलकी कलजो

चलती है तो बारूद के बल से चलती है कि पारे के बलसे ?

रामलाल-नहीं विद्यावती ! तो बारूद के बल से चलती है न पारे के बल से केवल भाफ़ के बल से चलती है उस्में जो पानी डालते हैं और आग जलाते हैं तो भाफ़के बनाने के लियेही करते हैं कुछ रेल को प्यास नहीं लगती जो उसे पानी पिलाते हैं इस भाफ़ में ऐसी शक्ति होती है कि जो रुकाव उसके पथ में होता है उसे बड़े बल से धकेलती है इसी कारण कलों और चक्रों के संयोग से इंजन सब बोझ को गाड़ियों समेत धकेल ले जाता है ॥

अब रात होगई तो नन्दलाल लेट गया और विद्यावती उसके पास जा बैठी नन्दलाल ने कहा जी जी आज तो एक कहानी सुनादे—विद्यावती बोली भाई पहेली तो मैं सुनादूं जो अर्थ देवे नन्दलाल बोला अच्छा सुना विद्यावती बोली अच्छा बता ! पहेली ॥

[१] चार घड़े अमृत के भरे बिन चप्पन वे औंधे धरे ? गाय के थन ॥

[२] आषाढ़मास वह बज्जत चलै जेठमास वह घोड़ी अमीर खुसरोयों कहे तू बूझ पहेली मोरी ? मोरी ॥

[३] चार खड़े, चार पड़े, चारों के मुहमें देा २ पड़े ? चारपाई ॥

[४] एक नार पूरब से आई शिरपर राखे पांउ। ऐसी नार कुनारको खुसरो मैंना देखन जाउं ?। मैंना॥

[५] एक लुहारी ऐसी पावे जिसराह जावे उस राहआवे मुंह बिना वह दांत चलावे। भष लगै तब काठ चबावै ? आरी॥

[६] चलते चलते छतरी पाई धूप रुकीपर वरषा नाहीं ? बादल॥

[७] पूरबसे एक पुरुषा आवे रविजानै वह कौनकहावे। जिसदिन आवे उसदिनजावे राती ठहरन कभी न पावे ? सूरज॥

[८] एक बाप के दोनों बेटे मिलन सार अरु सबसे मीठे। देश विदेशी दोनोंभाई।दोदेशमें बस्ती पाई। मिसरी एकअरु दूजा चीनी। सारी बात बताही दीनी। इनको सखियो बाप बतावो नाम धाम सब मुझे सुनावो ? गन्ना॥

[९] एक नारिको मैलो रंग लगी रहे वह पीके संग। उजियारे में संग बिराजे अंधयारेमें छोड़ के भाजै ? पछीहीं॥

[१०] जलकर उपजे जलमें रहे। आंखों देखा खुसरो कहै ? काजल॥

[११] श्याम वरण पीतांबर बांधे, सुरलीधर नहिंहोय। बिन सुरलीवह नाद करतहै बिरला बूझै कोय ? भ्रमर॥

[१२] करबोलै करहीसुनै श्रवण सुनत नहिं

ताहि। कहे पहेली बीर बर, सुनिये अकबर आहि? नाड़ी॥

[१३] शीश केश बिन चुटियां तीन। औगुण लेत पराये छीन। जोई जाय उनके दरबार ताके मूंड न राखै बार? चिवेणी॥

[१४] रात पड़ी तब पड़ने लागी दिन को सुई रैन को जागी। उसका मोती नाम बताया बुझिये तुम मैं कूक सुनाया? श्रोत॥

[१५] शिरपर सोहै गंगजल मुण्डमाल गल मांह। बाहन वाको वृषभ है शिव कहिये कै नांह? रहट॥

[१६] रंग बरंग एक पंछी बना। छोटी चोंच अरु काटैघना। तीस२मिल बिलमेंबसे जीव नहीं और उड़के डसे? तीर॥

[१७] फाट्यो पेट दरिद्री नाम उत्तम घरमें वाको ठाम। यीको अनुज बिष्णु को सारो पण्डित होयसो अर्थ बिचारो? शंख॥

[१८] लक्ष्मी पतिके कर बसै पांच अक्षर के माहिं पहिले अक्षर छांड़ि के सो दीजो तुम मोहिं? (सु)दर्शन॥

[१९] आदि कटेते सबको प्यारे मध्यकटे ते सबको मारे। अंतकटे से सबको मीठा। सो खुसरो मैं आंखों दीठा? काजल॥

[२०] हाथमें लीजैअरु देखा कीजै? दर्पण॥

दूसरे दिन प्रभात होतेही नन्दलाल ने देखा

कि एक थालीमें जिसमें रातको पानी रहगया था पाला जमापड़ाहै भाग कर उठालिया और विद्यावती को दिखाया और कहा कि जीजी यह पानी किस प्रकार जम जाता है ॥

विद्यावती-भाई ! मैं पहिलेही कह चुकीहूं कि पृथ्वीकी हरएक वस्तु में कुछ न कुछ उष्णता होतीहै और इस उष्णता के कई गुण हैं एक तो विस्तीर्ण करना अर्थात् फैलाना जैसा लोहागा आग पर धरने से फैल जाता है और उस की खील बनजातीहै दूसरा द्रवीभूत अर्थात् गलाना और तरल करदेना जैसे मोम अग्नि पर रखनेसे गल जाता है ३ तीसरे भाफ बनाना जैसे पानी उष्ण करने से उसकी भाफ़ बन जाती है ४ चौथे जलाना जैसे दिआ सलाई को किसी बस्तु पर घिसने से उसकी उष्णता प्रकाश मानहोकर वह जल उठती है सो पानी जो तरल रहता है तो इस कारण रहता है कि उस में कुछ उष्णता होतीहै जब बाहर की शीतलता से उस की उष्णता भाफ होकर निकल जातीहै तो जलकण सब जम जाते हैं परंतु जमे हुये पानीमें भी कुछ उष्णता रहती है यह इस प्रकार से अनुमान किया जाता है कि एक पाले की डली को हाथ में लेकर देखो और दूसरे पाले की डली पर लोन लगा कर हाथ में लो तो लोन लगी हुई डली बहुत शीतल लगैगी ॥

अंगरेजों नेएक यंत्र बनाया है उसे थर्मामीटर कहते हैं वह इस प्रकार का होता है कि एक लकड़ी की पट्टी में एक कांच की नली जड़ी हुई होती है उस में पारा भरा होता है और उस लकड़ी की दीर्घता कई अंशों में विभक्त होती है और पांच २ अंशों पर एक २ अंक लिखा हुवा होता है ज्यों २ पारा नली में ऊपर की ओर चढ़ता चला जाता है त्यों २ उष्णता का प्रमाण बढ़ता जाता है और ज्यों २ पारा नीचे उतरता आता है त्यों २ उष्णता घटती जाती है जब पारा ३२ के अंक पर पहुंचता है तो पानी जम जाता है। अब अंगरेजों ने एक कल बनाई है। उसमें पानी रख कर कलसे उसकी उष्णता निकाल लेने के कारण चारपल में पानी जम जाता है जब जी चाहे इसकल में पानी डालकर पाला जमाकर खालो। ऐसी कल कोई अढ़ाई सौ रुपये २५०) को आती है॥

——

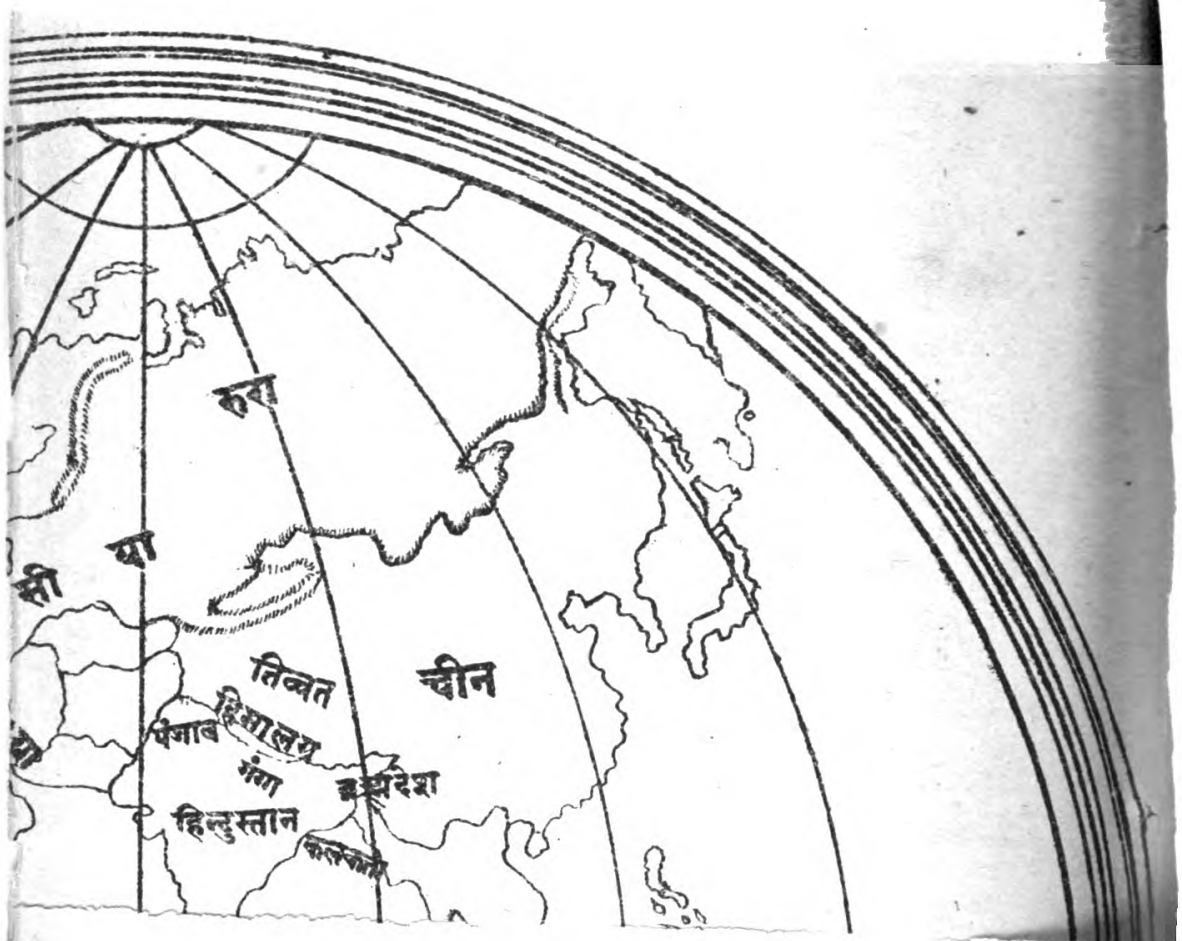
रूस
तिब्बत
चीन
पंजाब
हिमालय
गंगा
हिन्दुस्तान

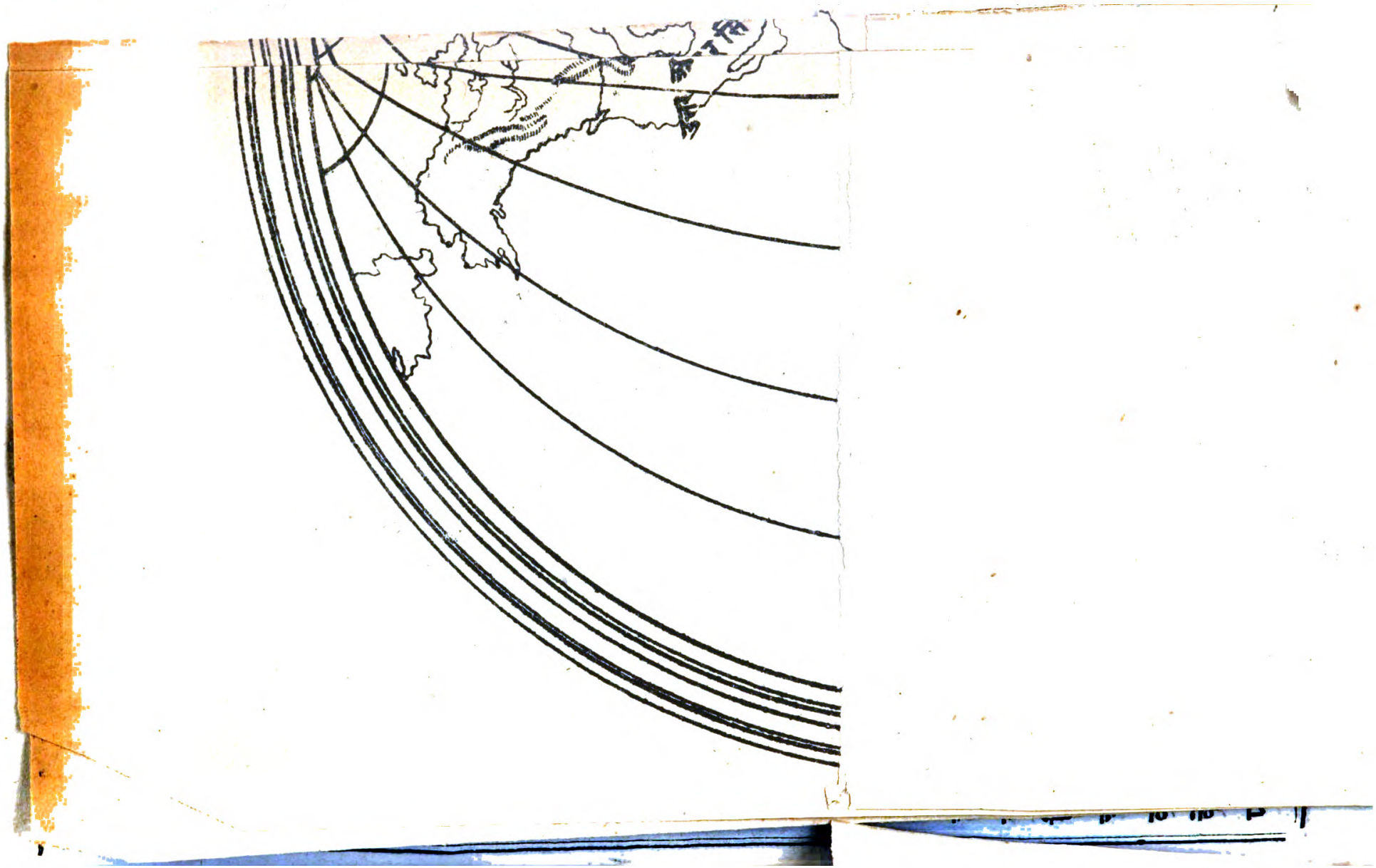

पञ्चम अध्याय ॥

भूगोल ॥

पद्मावती और सदानन्द का वृत्तान्त ॥

एक दिन पद्मावती बैठी हुई एक पुस्तक पढ़रही थी, इतनेमें उसका भाई सदानन्द आया उसने पूछा जीजी तू क्या पढ़ती है ?

पद्मावती—भाई यहभूगोल है इसमें सब देशों का वृत्तान्त लिखा है ॥

सदानंद—जीजी इसमें जोजो बातें लिखी हुई हैं उन्हे थोड़ा २ मुझे भी सुनादे ॥

पद्मावती—भाई इसमें पढ़कर जो सुनाऊं तो बड़ा विलम्ब लगेगा, परंतु जो जो बात मुझे कंठ है वह तुझे सुनाय देती हूं। यह जो धरती है जिस पर हम तुम खड़े हैं यह बहुत बड़ी है और इस हमारी नगरी जैसे इस में बहुत से अन गिनत नगर और गांव हैं। सारी भूमि चार बड़े भागों पर बिभक्तहै। एक का नाम एशिया, दूसरे का नाम यूरुप, तीसरे का नाम अफ्रीका, चौथा अमेरीका जिसे नई पृथ्वी भी कहते हैं और जो हमारे पांव के नीचे पृथ्वी के दूसरी ओर वर्त्तमान है। उसको शास्त्र में। पाताल लोक कहते हैं ॥

एशिया ॥

एशियाकी उत्तर सीमामें महा सागरऔर दक्षिण सीमाभारत महा सागर; पूर्व सीमा प्रशान्त महा सागर; औरपश्चिम सीमा भूमध्यस्थ महा सागर, लोहित सागर, कृष्णसागर, और यूरल पर्वत है। इसमें बहुत देश हैं उनमें हिंदुस्तान जिसमें हम रहते हैं बहुत अच्छा देश है। हिन्दुस्तान की उत्तर सीमा हिमालय पर्वत है यह पर्वत बहुत ऊंचा है और उसकी चोटियों पर सदा पाला जमा रहता है और इसी में बद्रीनारायणजी का मंदिर है जो बड़ा तीर्थका स्थान है। पश्चिम सीमा सिंधुनदी; दक्षिणसीमा भारत महा सागर पूर्व सीमा ब्रह्मपुत्र है। हिंदुस्तान में कई देश हैं उनमें पंजाब, पश्चिमदेश बंगाल, कश्मीर, नैपाल, भूटान, राजपूताना, दक्षिणदेशप्रधान हैं। हिंदुस्तान तीनप्रेसीडंसीमे बिभक्त है--बंगाल, बम्बई, और मदरास। हिन्दुस्तानकीमहारानीविक्टोरियाकाएकप्रतिनिधि कलकत्ते में रहते हैं उनको नवाब गवर्नर जनरल हिंद कहते हैं उनको सारे भारत वर्ष पर अधिकार है। प्रेसीडंसी बंगालमें उनके आधीन तीन लाटसाहब, रहते हैं, एक बंगाल में एक पश्चिम देशमें, और एक पंजाब में। एक गवर्नर साहब प्रेसीडंसी बंबई में और एक गवर्नर साहब प्रेसीडंसी मदरास में रहते हैं। प्रेसी-

उन्सीबंगालमेंबंगालबिहार, उड़ीसा, पश्चिमदेश और पंजाब यह प्रदेश हैं। इनमें से पंजाब देशका विवरण पहिले कहतीहूं। हिमालय पर्वत से एक नदी निकल कर भारत महासागर में जा गिरती है इसका नाम सिंध नदी है इसकी पांच शाखा सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब, जेहलम पंजाब में बहती हैं। इसकारण इसको पंजाब अथवा पांच नदियों का देश कहते हैं। पंजाब में बहुत से नगर हैं उनमेंसे लाहौर प्रधान है यहां पंजाबके लाटसाहब रहते हैं और यह नगर रावी के तीर परहै। मुलतान जहां नृसिंह अवतार हुआ था चिनाब नदी पर है। अमृतसर जहां सिक्खोंका बहुत बड़ा गुरुद्वारा है। दिल्ली जो यमुना पर है और जहां जामअ-मसजिद और कुतबकी लाट देखनेके योग्य वस्तु है इसके सिवा और बहुत से नगर और गांव हैं। दिल्ली के पूर्व बिहार के पश्चिम तक जो प्रदेशहैं उसको पश्चिम देश कहते हैं। हिमालय पर्वत से हरिद्वार में गौमुखीगंगा निकलतीहै और कुछ दक्षिणकी ओर बहकर फिर सारे पश्चिमदेश में पूर्व की ओर बहकर बंगालदेश में दक्षिण दिसा को बहकर समुद्र में जा मिलती है। यमुना, घाघरा, गोमती, सोन, कोसी आदि नदी उत्तर दिससे बहकर पूर्वकी ओर बहकर गंगाजी में मिलकर दक्षिण ओर बह समुद्रमेंजामिलतीहैं॥

बंगाल देशमें गंगा की एकशाखा है जिसका नाम हुगली है कलकत्ता जो हिन्दुस्तान की राजधानीहैउसपरवर्त्तमानहैवहांकुयलक्षमनुष्यों की बस्ती है। इस नगरमें एक बहुत बड़ा गढ़है उसे फोर्टविलियम कहते हैं। और इस गढ़ में बहुत सी तोप और गोरों की सेना रहती है। कलकत्ते में एक बड़ी टकसाल है जिसमें रुपये पैसे बनते हैं। और इसनगर में नाना प्रकारकी कलें और अनेक रूपकी वस्तु अंग्रेजोंकी बिलायतसे आई हुई हैं अंग्रेज लोग जब अपने देशसे समुद्र में होकर आते हैं तो इस जगह प्रथम उतरते हैं। यह नगर हिन्दुस्तान के सब नगरोंसे बड़ा है और सुन्दर भांति का है इस नगर के समुद्रके निकट होने के कारण बहुत से जहाज यहां रहते हैं। ढाका जहांके रूमाल और धोती आदि महा सुन्दर बनतीहैं, मुंगेर, पाटलीपुत्र (जिसे अब पटना कहते हैं) और जहां चंद्रगुप्त राजा और चानक्यपंडित हुएहैं, और बर्द्धवान आदि जहां अब राजाहैं, और जो पहिले बंगाल की राजधानी थी, बंगाल देश के गंगा तीर पर हैं और २ बहुत से नगर छोटे बड़े इस पर वर्त्तमान हैं। अवधमें घाघरा नदीपर जिसको पहिले सरयू कहते थे, अयोध्या नगरी वर्त्तमान है यह महाराजा रामचंद्र जीकी राजधानीथी। मथुरा भी बड़ी तीर्थकी जगेहहै और वहांबहुतसे श्री

कृष्णजी के मन्दिर हैं। वृन्द्राबन, आगरा, कालपी, इटावा यमुना पर; और कान्हपुर, फर्रुखाबाद गंगापर; प्रयाग; जिसे अब मुसलमानोंने इलाहाबाद कर दिया है यमुना गंगा के संगम स्थान पर बर्त्तमान है और इस संगम को त्रिवेणी कहते हैं और यह बड़ा भारीतीर्थ है यहां भारद्वाज मुनि का आश्रमभी है इससे कुछ दूर पूर्व की ओर गंगा जी पर काशीजी, जिसे बारानशी भी कहते हैं, बर्त्तमान है यह बड़े तीर्थका स्थान है और यहां बड़े २ मंदिर और शिवालय बहुत से बने हैं और यहां बड़े २ पंडित रहते हैं और एक संस्कृत प्रधान विद्यालय जिसे संस्कृत कालेज कहते हैं यहां बर्त्तमान है बंगाल से पश्चिम दक्षिण दिसा में उड़ीसा है और इसमें एक बड़ा तीर्थ जगन्नाथ जी का है॥

पंजाब के उत्तर में काश्मीर देशमें तिब्बत की बकरियों की ऊन के बहुत अच्छे २ दुशाले बनाये जाते हैं। राजपूताना जो उसके दक्षिण है उसमें बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, अजमेर बड़े २ नगर हैं। जयपुर में साम्हर नामी एक झील है उसमें से साम्हर लोन आता है। बीकानेर में उज्जल मिसरी बहुत सुन्दर बनती है। राजपूताना के दक्षिण पश्चिम में गुजरात प्रदेश बर्त्तमान है और जहां समुद्रके किनारे

द्वारिकानगर है। यह बड़ा तीर्थ है और श्रीकृष्ण जीकी राजधानी थी। पश्चिम प्रदेश सहारनपुर केजिलेमें हरिद्वार है और यहां गंगाजी का बड़ा मेला होता है। प्रेसीडन्सी बम्बई में बम्बई प्रधान है और मदरासमें मदरास। इसके दक्षिण किनारे समुद्र के निकट रामेश्वर महादेवजी का मंदिर है और बड़ा तीर्थ स्थान है। हिन्दुस्तानके दक्षिण में समुद्र के पार सिंहल द्वीप है जिसे पहिले लंका कहते थे वहां अंग्रेजों का एकप्रतिनिधि रहता है उसे गवर्नर कहते हैं। दक्षिण देश के लोग बड़े धनी होते हैं और वहांवणिज व्यौपार बहुत होता है॥

कलकत्ते से दक्षिण समुद्र में बहुत दूर कई द्वीप हैं और इनको एण्डमानस कहते हैं और इसी स्थान को कालापानी कहते हैं यहांबहुतसे अपराधी लोग यावज्जीवन अवस्था अथवा कुछ काल के लियेबन्दी रहतेहैं। हिन्दुस्तानके पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान है उसकी राजधानी काबुल है जहां से मेवे और हींग और बहुत से ऊनी बस्त्र आतेहैं। इससेपरे पारस्यदेशहै और तेहरान उसकी राजधानी है। और शीराज में गलीचा और मदिरा बहुत अच्छी होतीहै। हिन्दुस्तान से पश्चिम और पारस्यदेश से दक्षिण ओर अरब देशहै इसमें मक्का और मदीना दो बड़े नगरहैं और यह मुसल्मानों की उत्पत्ति का स्थान है

इस देश में ऊंट बहुत होते हैं और यहां के घोड़े बहुत श्रेष्ठ होते हैं यहां के लोग खेती बहुत कम करतेहैं केवल वे भेड़ बराकर उसके दूध आदि पर जीविका करतेहैं यहां मरुभूमि बहुत है और सूर्य का उत्ताप बड़ा प्रबल है और लू बहुत चलती है और जगह २ कोसों तक पानी नहीं मिलता है और न कोई वृक्ष दिखाई देता है। पारस्य के पश्चिम और अरब देश के उत्तर एक प्रदेश है उसका नाम एशिया कोचक है। इस प्रदेश में एक झील है उसका पानी उबलता रहता है उसमें कोई जीव जीता नहीं रहता पारस्य के उत्तर तुरुक देश है। खेवा यहांका बड़ानगर और समरकन्द यहां की राजधानी है॥ हिन्दुस्तान केपूर्व में ब्रह्म देशहै आवा यहां की राजधानीहै और रंगून बड़ा नगर है। वहां के लोग बौद्ध धर्म रखते हैं। ब्रह्मदेशकी दक्षिणकी ओर श्याम देश है इसका बांकोक राजधानी है इसके दक्षिण बहुत से अनगिनत द्वीप हैं उनमें इलायची, जायफल, जावची, अजवाइन, काली मिरच, दारचीनी, जीरा इत्यादि बहुत से मसाले उत्पन्न होते हैं। हिमालय पर्वत के उत्तर को तिब्बत देश है यहां के लोग लामा को मानतेहैं लासा उसकी राजधानीहै यहांबड़ी२ सुन्दर बकरियां होती हैं इस देश के एक प्र-

कारके मृगकी नाभीसे कस्तूरी निकलती है। इसदेश के पूर्वमें चीन देशहै पेकिन् उसका राजधानी है यहांके लोग बड़े ज्ञानी और बुद्धिमान होतेहैं और चित्र आदिके काम में बड़े निपुण होते हैं इस देश में एक वृक्ष होता है उसकी लकड़ी काटकर पानी में उबालने से एकप्रकार का तेल तिर आता है। हवा लगकर वह जम जाता है और बड़ा सुगन्धित होता है उसको कर्पूर कहते हैं। इस देश से चीनी के बासन और कछुवे की खोपड़ी के खिलौने भारत वर्ष में बिकने को आते हैं। इसके उत्तर चीनी तातार है चीनी तातार और चीन के बीच में कई सौ कोशों तक एक बड़ी ऊंची और चौड़ी भीत बनी हुई है। और चीन देश में एक नहर मनुष्य की खोदी हुई कई मील तक बनी है और ऐसी चौड़ी और गहरी है कि उसमें बड़े २ जहाज अच्छे प्रकार आ जाते है चीन तातार में बहुत से प्रदेश और नगरहैं। इस के उत्तर रूष देश है उसमें एलटाइ नामकपर्वत से सोना चांदी लोहा पारा आदि बहुत से धातु निकलती हैं। उस देश के मनुष्य बहुत से असभ्य और जंगली हैं टोबालस्क उस की राजधानी है उस देश से उत्तर कमेस्कटका नामी एक उपद्वीप है उसमें कई पर्वत ऐसे हैं जिसमें से अग्नि और गली हुई धातें निकलती

है ऐसे पर्वतों को आग्नेय पर्वत कहते हैं। चीन के पूर्वमें जापान् एक द्वीप है और उसके दक्षिण में अनाम देशहै जिसकी राजधानी हिउ है॥

यूरुप् महादेश का वृत्तान्त॥

यूरुप् देशके उत्तर में उत्तर महा सागर। दक्षिण में भूमध्यस्थ सागर कृष्ण सागर और काकेशस पर्वत है। पूर्व में यूराल पर्वत है और काश्यप सागर पश्चिमदिशामें एटलांटिक समुद्र है इस महादेश में १९ उन्नीस देश हैंजिनके राजा अलग २ हैं उन्में सबसे बड़ा देश रूसहै और वह यूरुप महादेशके सारे पूर्व और उत्तर सीमाको घेरेहुयेहै।उसकी राजधानी सेंटपीटर्ज़बर्ग है इस देशमें चरबी और ऊन और २ कई वस्तु अच्छी से अच्छी हैं और उन देशों में यह वस्तु यहां से वाणीक लोग लेजातेहैं। इस देशके पश्चिम दिशा में सुइडन और नारवे दोदेश हैं सुइडन की राजधानी स्टाकहोलम् और नारवे की क्रिश्चिनिया नामक राजधानी है। लापलेंड नामक एक देश रूसके उत्तर में है यहां आस पास के समुद्र और नदियां आदि सदा जमी रहती हैं और यहां छयमहीने की रात और छयमहीने का दिनहोता है। यहांके लोग खेती नहीं करते और नकुछ अन्न उपजाते है वह केवल मांस मछली और दूधआदिसे जीवन धारण करते हैं। यहां एक प्रकार का

रेंग अथवा बारासिंगा होता है वह बहुत बड़ा होता है। यहांके लोग इसको एक प्रकार की बिन पहिये की गाड़ी में जोड़कर तुषारपर चलाते हैं और उसका दूध और मांस यह लोग आहार करते हैं और जब वह मरजाता है तो उसके चर्म का वस्त्र बनाते हैं और उसके आंतोंकी तांत और उसकी हड्डियों के तीर और चमचे और सींगों की खूंटी बनालेते हैं। उसदेश के पश्चिम में एक उप-द्वीप डेनमार्क नामक है उसकी राजधानी कोपिन हेगन् है डेनमार्क देशके दक्षिण प्रशिया देश है यहां की राजधानी बर्लिन् है जिसमें कांचका कारखाना बड़ा सुन्दर है और बहुत सुन्दर कांच की वस्तु यहां बनती है। प्रशिया के पश्चिम हालेण्ड और बिलजम् दो छोटे २ देश हैं। हालेण्ड देशके किनारे ठीकसमुद्रके समान थे और पहिलेसदैव समुद्रके चढ़आने से इसदेशमें पानी चढजाताथा और देशवासियों को महा दुःखदायि होताथा और बहुत सी हानि होजाती थी परंतु अब यहां के लोगोंने बड़ा परिश्रम करके एक ऐसा बड़ा बंद बांधा है कि आजतक समुद्रका पानी उसमें नहीं जाने पाता और नकुछ हानिहोती है। इसकी राजधानी और बड़ा नगर अमस्टर डमहै। बैलजिम देशकी राजधानी ब्रसल्स है इसदेश में पत्थरकेकोयलेकी खानहै और लोहे

का कारखाना बहुत बड़ा है। रूस और प्रशिया देशके दक्षिण में अस्ट्रिया नामक एक देश है जिस में वायना प्रधान नगर है जहां आज कल संस्कृत पढ़े हुये बड़े २ पण्डित हैं। अस्ट्रिया के दक्षिण और पूर्व में टरकी नाम देश है उसकी राजधानी कानिसटेनटीनोपल है अस्ट्रिया देश के पश्चिम में सुइटजरलेण्ड नामी एक देश है राजधानी उसकी वर्न है और यह पहाड़ी देश है सुइटजरलेंडऔरअस्ट्रिया के दक्षिणमें इटली नामी एक प्रदेश है वहांकी राजधानी रीम है इस देश के लोग महा सुन्दर और रूपवन्त होते हैं। घड़ी काकारखाना, नील, मेवा, और रेशमी वस्तु यहां मिलतीहै। यहां वेजुवीयस नामी एक आग्नेय पर्वत है। उसमेंसे पत्थर, राख, और गलीहुई धातु आदि निकल कर कभी२ निकट वाले देश और नगर दबजातेहैं। सुइटजरलेंड अस्ट्रिया और इटली के पश्चिममें फ्रांस नामक एकबहुत बड़ा देश है यहांकी राजधानी पेरिस है जोकि महा सुन्दरस्थानहै और यहां घड़ी घंटोंके कारखाने अतिश्रेष्ट हैं कागज चीनीके बरतन रेशममलमल ऊनीवस्त्र बनात आदि यहां बनतेहैं। फ्रांसके दक्षिणमें स्पेन देश है। मेडरिड उसकी राजधानी है फ्रांस के उत्तर में दो बड़े २ द्वीप हैं। एक का नाम ग्रेटब्रिटन और एकका नाम आयरलेंड है। ग्रेटब्रिटन में तीन देश और बहुत से प्रदेश हैं

१ इंलैंड २ स्काटलेंड और उवेल्स। इंलैंड की लंडन राजधानी है यह नगर बहुत बिस्तीर्ण है और आधा टेमस नदी के दक्षिण और आध उत्तर पार बस्ता है यहां एक बड़ा चमत्कार सुरंग है टेमस नदी के नीचेसे रस्ता बनाहुआ है ऊपर से नदी चलती है नीचेसे आदमी चलतेहैं इसके सिवाय और बहुत से आश्चर्य लंडन नगर में हैं। राज राजेश्वरी महाराणी श्रीमती विक्टोरिया जो हिन्दुस्तान की महाराणी हैं वहां रहतीं हैं और वहां भारत वर्ष के राज कार्य्यानुष्टान के लिये कई सभायें हैं। यूरुप के दक्षिणमें भूमध्यस्थ सागर में यूनान नामी एक उपद्वीपहै एथेंस उसकी राज धानी है पूर्वकाल में यहां बड़े २ बुद्धिमान और ज्ञानी पण्डित हुये हैं और यही बहुत सी विद्याओं की उत्पत्ति का स्थान है इसके निकट कई द्वीपहैं उनको अयोनियन द्वीप कहतेहैं इसकारण इस देशको किसी किसी भाषा में यूनान कहतेहैं और यह अनुमान होता है कि यहींके लोगों को जो पहिले भारत वर्षमें आयेथे शास्त्रमें यवन लिखा होगा और पीछेसे सब भारत वर्ष के बाहर के लोगों को यवन कहने लगे होंगे॥

आफ्रिका॥

इस महादेशमें बहुतसे देश और प्रदेशहैं बीच में एकबड़ी भारी कई योजनों में बिस्तीर्ण मरु

भूमिहैं उसको सहारा मरु भूमि कहते है यहां के लोगों को हबशी कहतेहैं और वेकाले रंगबड़े भूडो आकृति के होते हैं और बहुतसे इन में से असभ्यहैं वे जंगलोंमें रहतेहैं और जंगलके जीव जंतू फूल फल आदि खातेहैं और कभी मनष्यों कोभी मारकर खाजाते हैं। इस देशमें समुद्र के किनारे उत्तर मिसर नामी एक देश है। केरो उसकी राजधानी है इस देशमें बर्षा कदाचित होती है केवल नील नदी से खेती होती है इस देश में पहिले के बड़े २ ऊंचे स्तंभ बनेहुये हैं ॥

आम्बीका महादेशका वृतान्त ॥

आम्बीका महा देश जिसे नईपृथ्वी कहतेहैं दो प्रधान अंशों में विभक्त है एकको उत्तर आम्बीका और दूसरे को दक्षिण आम्बीका कहते हैं यहां बड़े २ बुद्धिमान लोग बसतेहैं इसके उत्तर समुद्र के किनारे एक असभ्य जाति रहती है उसको इस्कुईमो कहते हैं यह लोग मछली का आखेट करके खातेहैं और उस की चर्बी घी की जगह काममें लाते हैं और वहां लकड़ी नहीं होती इसी मछलीकी चर्बी से दिया जलाकर उस की आंच में मांस रींध कर खाते हैं और सुसोंकी नाक काटकर उसकी माला बना कर पहिनतेहैं और रीछोंके दांत और नखों कीभी माला बनालेतेहैं और रीछ और बड़ी २ मछलि-

योंकी खाल ओढ़ते और पहिनतेहैं और अपना सारा अङ्ग गोदलेते हैं उनके मुहपर चर्बी मिली हुई कुछ मसाले का मोटा लेप चढ़ा हुआ होता है। वे लोग चोरी करना नहीं जानते जो आ-खेट मारते हैं सब बांटकरखाते हैं उन्की बोल चाल बड़ी समझतेहैं। आम्बीका में बहुत से देश और नगर और नदियां और पर्वतहैं और यहां तमाकू हूई और बहुत सी औषधी और बहुत सी और २ उपकारी वस्तु उत्पन्न होती हैं॥

इसके बिना पृथ्वी में और बहुत से द्वीप हैं उनमें से आस्ट्रेलिया और बोर्निओ प्रधान हैं सदानंद ने कहा जीजी इसमें तो बहुत अच्छी२ बातें लिखी हुई हैं जब मैं बड़ा हूंगा तो मैं इसपुस्तक को सारी पढ़ूंगा॥

षष्टम अध्याय ॥

पम्बावली ॥

रेंडियर ॥



यह एक प्रकार का बारासिंग है। परंतु आकार में बारा सींगे से कुछ बड़ा और उस से शक्ति में अधिक होता है। यह जंतु दल बांध कर बहुत से इकट्ठे होकर चरते फिरते हैं और यूरुप महा देशके उत्तरअंश लैपलैंड देश में जहां सदा तुषार जमी रहती है वहां की रेतली धरती पर एक प्रकार की काई उत्पन्न होती है यह जन्तु उसीको खाते हैं क्योंकि उस देश में घास बहुत थोड़ी होती है लैपलैंड और फिन लैंड देशके लोग केवल इसी जन्तुसे अपनी जीविका निर्वाह करते हैं॥ उसपर बोझ लादकर लाते हैं उसका दूध पीते हैं मांस खाते हैं और चमड़ा पहिनते हैं और

एक २ मनुष्य तिन २ चार २ सौ रेंडियरोंका खेड़ पालते हैं यह जीव एक प्रकार की बिन चक्करकी गाड़ी में जोता जाता है और अकेला तिनमन बोझ समेत उस गाड़ी को तुषार पर खींचे लिये चलाजाता है और एक घंटे में दश मील चल शक्ता है और कभी२ उन्नीश घंटे में एकसौ पचास १५० मील चला जाता है स्वीडनकी राजधानी स्टाकहोलम् में रेंडियर का एक चिच रक्खा हुआ है वह किसी समय में अड़तालीस घंटे में आठ सौ मील एक सांस चला था परंतु जब स्थान पर पहुंचा तो झट गिर कर मरगया। जाडे में जब सब झीलों का पानी जम जाता है और धरती पर तुषार जमकर सब राह पग डंडी दबजाती है तब यह जंतु अपनी आघ्राण शक्ति से मार्ग पहिचान कर गाड़ी खींच ले जाता है॥

२ पाठ

गेंडे की प्रतिमूर्त्ति

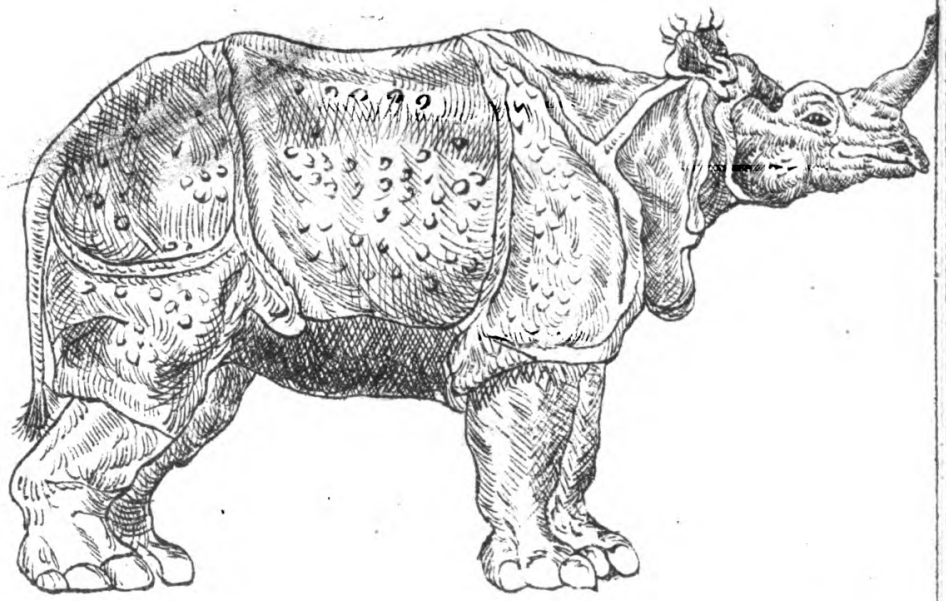

गैंडेका वृत्तांत ॥

यह जंतु बड़ा प्रकांड होता है और उसके शरीर का चर्म्म ऐसा मोटा और कठिन होताहै कि बंदूक की गोली और बरछी से भेद नहीं होता। इसके शिर पर एक तीक्ष्ण सींग सा होता है उसको गैंडेका खड्ग कहते हैं। जब कोई जन्तु उसपर आक्रमण करता है तो यह उस खड्गसे उसको चीरडालता है। इसके मोटे चमड़े की ढाल बनतीहै, वह तरवार अथवा औरकिसी शस्त्रसे शीघ्र भेद नहीं होती। आफ्रीका के दक्षिण और ब्रह्मदेश के घन जंगलों में यह जीव मिलता है और फल फूल और घास आदि खाता है ॥

३ पाठ
बनमानुष की प्रतिमूर्त्ति



बनमानष का वृत्तांत ॥

आफ्रिका देशमें एक प्रकार का बड़ा बन्दर अथवा बनमानुष होता है। उसको गरेला कहते हैं यह मनुष्य जितना ऊंचा होता है और उसमें बड़ीशक्ति होतीहै इसके शरीर परबड़े २ काले २ रोम होतेहैं। कभी २ यह जन्तु मनुष्यकी न्याईं सीधा खड़ा होकर लाठी हाथ में लेकर स्वजातीयों से लड़ता है और उसके दांत ऐसे कठिन होते हैं कि बन्दूक की नालीको चबा कर चपटा कर देता है और ऐसे बल से अपने शत्रु पर आक्रमण करता है कि एक हुहत्थड़ मार कर उसकी हड्डियां चूर्ण कर डालता है। यह जंतु जंगल में आग जला रखते हैं और लकड़ी

लाकर डालते जाते हैं और उसे बुझने नहीं देते। जाड़े में बच्चों को गोद में लेकर इस आग के पास बैठे तापते रहते हैं और वृक्षके फल फूल मूल आदि खातेहैं ॥

४ पाठ

ह्वेलमछली की प्रतिमूर्त्ति

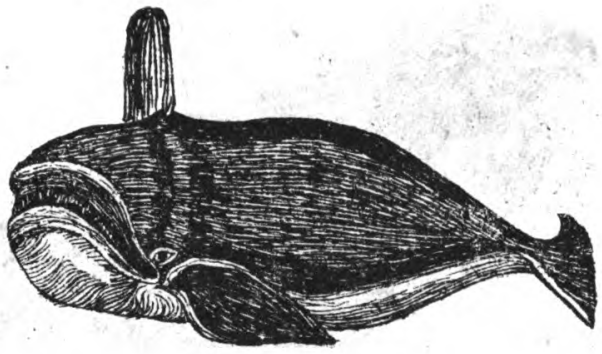

ह्वेल अथवा तिमीमछलीका वृत्तांत ॥

समुद्र में एक प्रकार का वृहदकाय जन्तु होता है। समुद्र में रहने के कारण उसे मछली कहते हैं परंतु यह अंडे नहीं देती बच्चे जनती है और उनको अपना दूध पिलाती है यहजन्तु साठ हाथ दीर्घ होता है और उसकी मोटाई भी ५७-५८ हाथ होतीहै यह मछली बीचमें ३-४ हजारमन की होतीहै और उसका मुंहऐसा चौड़ा होता है कि छोटी नाव मनुष्यों समेत उस के भीतर समा जा सक्ती है जो कहींउसकी पूंछ की फेंट

जहाजसे लगजातीहै तोउसके टुकड़े२ उड़जाते हैं यह जन्तु उत्तर और दक्षिण महा सागर में बहुत होताहै और उसकी बसासे मोमकी बत्तियां बनती हैं ॥

५ पाठ

गरुड़पक्षी की प्रतिमूर्त्ति



गरुड़ पक्षीका वृत्तान्त ॥

यह बड़ा प्रकाण्ड पक्षी होताहै यूरुप देशके बहुत अंशोंमें मिलता है और हिरन और भेड़ के बच्चे और शशक आदि जंतुओं को और कभी २ छोटे २ लड़कोंको पंजों में उठा कर ले जाता है और चीर फाड़ कर खालेता है ॥

६ पाठ
सर्प की प्रतिमूर्त्ति



सर्पका वृत्तान्त।

सर्प कई प्रकारके होते हैं। उनमें से कइयोंमें विष होता है और किसी २ में बिष नहीं होता सब सर्प छातीके बल चलते हैं और उनमें ऐसा बल होता है कि इनका जो कुछ अंश किसी बिलके अन्दर होता है उसकी पूंछ पकड़ कर कई मनुष्य खींचने से भी नहीं निकलता है। जो बिषधर सर्प होते हैं उनके ऊपरके मसूडे में एक बिषका आधार होता है उसकी जड़में दो बड़े २ सूक्ष्म कांटे जैसे दांत होते हैं यह दांत सदा उसके तालूसे लगेहुये भीतरकी ओर पसरे हुए रहते हैं परंतु सांप जब किसीको काटता है तो वे दोनों दांत खड़े होजाते हैं और तब उसकी जड़में बिष की थैलीसे मिला हुआ जो छेक होता है नीचे के जबड़ेके दावसे थैलीमें से बिष निकल कर उस

छेकमेंसे घावके भीतर चला जाताहै और लहू के साथ मिलकर सारे शरीर में फैल जाता है फिर जैसे दूध में खटाई डालने से दूध फट कर पानी हो जाता है उसी प्रकार से शरीर का रुधिर फट जाता है और डसा हुआ जन्तु मर जाता है। इस कारण जब सांप काटे तो यह करना चाहिये कि काटे हुये स्थान के ऊपर एक बहुत कठिन बंद लगा दें कि रुधिरके साथ विष ऊपर चढ़ न सके और फिर उस स्थान को थोड़ासा चीर दें कि रक्त बिष समेत नि-कल जाय फिर उसको गरम पानी से धोकर लोहा गरम कर के उसके मुह पर लगा दें कि चमड़ा जलकर उसके छेद बन्द होजांय और रक्त का आना जाना रुक जाय इसी प्रकार से बहुत से लोग बच जाते हैं। बहुत से सर्प बड़े २ प्रकांड शरीर के होते हैं उनमें बिष नहीं होता परंतु वे भैंस जैसे जीवोंको समूचा निगल जाते हैं और थोड़े से बिलम्ब में पचा लेते हैं। यह पहिले भैंस अथवा गायके ओर पास ऐसे बलसे लिपट जाता है कि उसे धरती पर गिरा लेता है और फिर समूचा निगल जाता है फिर किसी बड़े वृक्ष पर अति बलसे लिपटता है तब उसके पेटके भीतर वाले जंतुकी हड्डियां कटाकट टूट जातीहैं। ऊष्ण देशमें सांप बहुतहोते हैं। प्रशान्त महासागर में कई द्वीप हैं वहां एक भी सांप

नहीं होता। बहुत देशोंकेलोग सांपके मांसको खाते हैं और इससे कई प्रकार की औषध बनती हैं। सांपके बिषमें किसी भांति का स्वाद नहीं होता परंतु घी की न्याईं चिकना २ होता है और उसके थोड़ा २ खाने से मनुष्य नहीं मरता है परंतु जब वह बिष लहूमें मिलजाता है तब बिष चढ़कर मर जाता है। सांप अंडे देते हैं और एक समय इसके ३०—४० अथवा इससे भी अधिक अंडे होते हैं उनमें से सांप बहुतसे बच्चोंको आप खाजाते हैं॥

७ पाठ

रेशमके कीट की प्रतिमूर्त्ति

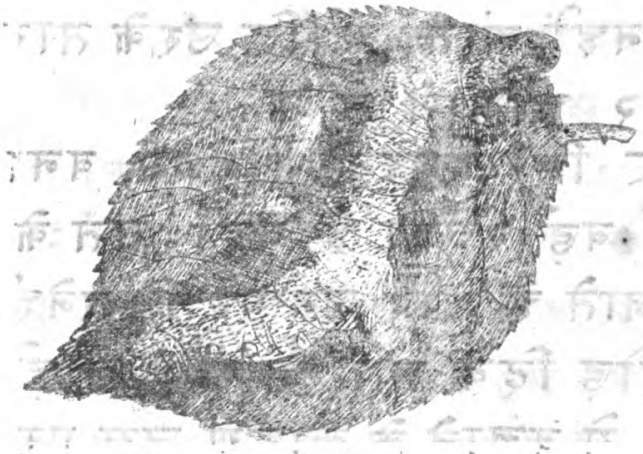

रेशम के कीटका वृत्तांत॥

यह कीट तूत अथवा बेरके पत्ते खाकर उसी पत्तेकी जड़में बच्चा रखकर अपनीराल निकालकर पत्तेके ऊपरसे बच्चे के ऊपरलपेटता चला जाता है जब वह गट्ठी कुछ बड़ी होजाती

है बच्चा उसके भीतर बन्द रहता है तो उस बड़े कीड़े को अलग करके पेड़ परसे उस गट्ठी को उतार लाते हैं और फिर उसे पानी में उबालते हैं। भीतरका बच्चा भीतरही मरजाता है। फिर उस गट्ठीका तार खोलकर अलग कर लेते हैं और फिर धोकर नाना प्रकार के रंगके कपड़े बनातेहैं जब इस गट्ठीको पेड़परसे उतारने में कुछ विलम्ब होजाता है तो परमेश्वर की आश्चर्य्य सृष्टिसे यह भीतर का कीड़ा तीतरी का आकार बन कर अपने घर को काट कर उसमें से निकल आता है फिर कुछ दिनों में उसके पंख झड़ जाते हैं और फिर अपनी मां जैसा लंबासा कीड़ा बन जाता है वहघर फिर किसी काम नहीं आता क्योंकि उसके तार कट कर टुकड़े २ होजाते हैं ॥

चीन और हिन्दुस्तान में रेशम बनाने के बज़त जगह बड़े २ खेत हैं वहां तूत के वृक्ष बज़त बोये जाते हैं और उन पर कितनेही पले ज़ये कीड़े छोड़ दिये जाते हैं और कीड़ों को पक्षी आदि से बचाने के कारण उस पर एक सूक्ष्म जाल लगा देते हैं और फिर ऊपर की लिखी रीतिसे रेशम इकट्ठा करते हैं ॥

---

८ पाठ

मूंगेकी प्रति मूर्ति



मूंगेका वृत्तान्त

भूमध्यस्थ सागर में एक प्रकारका कीट होता है वह पानी में अपने शरीर से एक प्रकार का रस निकालकर अपना घर बनाता है वह पानी में ऐसा कठिन होजाता है कि गलता नहीं यह घर बहुतसे होते हैं और एक २ घर में कई २ लाख कीट रहते हैं इन घरों से कहीं २ समुद्र में बड़े २ द्वीप बन जाते हैं। यह ऊपर से देखने में कुछ श्वेत वर्ण कासा होता है भीतर से लाल २ डण्डी निकलती हैं इसी को मूंगा कहते हैं और उस को काट छील कर मसा के बना लेते हैं यह मूंगे भूमध्यस्थ सागर के सिवाय और कई सागरों में भी उत्पन्न होते हैं॥

९ पाठ
मोती की प्रतिमूर्त्ति ॥



मोती का वृत्तांत ॥

लंका द्वीपके जो चारों ओर समुद्र है उसमें नाना प्रकारके बहुमूल्य मोती मिलते हैं मोती सीप में उत्पन्न होता है उसके उत्पन्न होने की यह बिध है कि कोई समुद्री कीट जब सीप के पेट में छेदकर देताहै तब उस घाव में एक प्रकार का रस उत्पन्न होताहै जो भीतर की ओर दबता जाताहै और ज्यों ज्यों वहघाव भीतर से भरता जाता है त्यों त्यों वह रस गोली बंध कर बहु मूल्य मोतीका आकार बनजाता है और फिर थोड़े दिनोंके पीछे वह पककर मोती बनजाता है जो तुम को आश्चर्य्य हो कि इतने घाव सीप में क्योंकर उत्पन्न होजाते हैं सो यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि नाना प्रकार के अनगिनत जीव समुद्र में होते हैं जोकि घुन की न्याईं उसकी हड्डी में लग जाते हैं यह सबविशेष करके चैत्र और वैशाख भादों और आश्विन में

कि उस कालमें बर्षा बहुत होती है बहुधा उत्पन्न होते हैं। इनको समुद्र में से इसप्रकार से निकालते हैं कि बैशाख चैत भादों औ असौज में बहुतसी बेड़ियां उस स्थान पर प्रस्तुत रहती हैं और प्रत्येक बेड़ी पर कई २ सौ डुबारी रहते हैं जब वे समुद्र में सीपनिकालने जाते हैं तो अपने पांव पर एक पत्थर एक हाथ लम्बा और आध हाथचौड़ा इसलिये बांध लेते हैं कि पानीके प्रवाह से ऊपर न आ सकें और बहने भी न पायें और शीघ्र समुद्र में पहुंच कर निश्चिन्त हो अपना कामकरें फिर चमड़े के दस्ताने* हाथों में पहन कर समुद्र में चुभी मारते हैं। यह बिद्या बहुत कठिन है इसमें श्वास अधिक रोकना पड़ता है अच्छा डुबारी सवा घन्टे तक श्वास रोक सक्ता है और सीखने वाले पुरुष आध घड़ी से अधिक नहीं ठहर सक्ते। जब डुबारी को किसी बस्तुकी आवश्यकता होतीहै तो वह उस रस्सी को जो उसके गले में बांधी हुई होती है और ऊपर तक बेड़ियों में धड़ों से बांधीहुई होती है हिला देता है। फिर बेड़ी वाले मनुष्य उसको ऊपर खींच लेते हैं जब डुबारे लोग समुद्र में धरती पर जहां पत्थर होते हैं और जिन पर यह सीप जमे हुए होती हैं पहुंचते हैं तो मछली अथवा कोई और जीव उनको खाने

* हाथों के आवरण को दस्ताने कहते हैं ॥

को आते हैं तो वह एक लोहे की कलको जो अपने साथ नीचे लेजाते हैं हिला देते हैं जिससे जलमें केवल कीचड़ही कीचड़ होजाती है और मछली आदि जीव डर कर भाग जाते हैं ॥

किसी समय कोई २ डुबारे पांच पांच सौ सीप निकाल कर लाते हैं फिर उस रस्सी को जो उन्के गलेसे बेड़ी तक बांधी हुई हैं हिला देते हैं और बेड़ी वाले मनुष्य उन्हें बाहर निकाल लेतेहैं और वे लोग सीपियोंमें से तत्काल मोती निकाल कर बारीक २ बरमों से जो उन्के पास होते हैं छेद करलेते हैं परंतु छेद करना बड़ा कठिन है छेद करने के समय बहुत से मोती टूट जाते हैं और वह किसी काम में नहीं आते इस कारण लोग कहाकरते हैं कि "बींध गया सो मोती, और रहगया सो पत्थर" ॥

जरीफे की प्रति मूर्त्ति

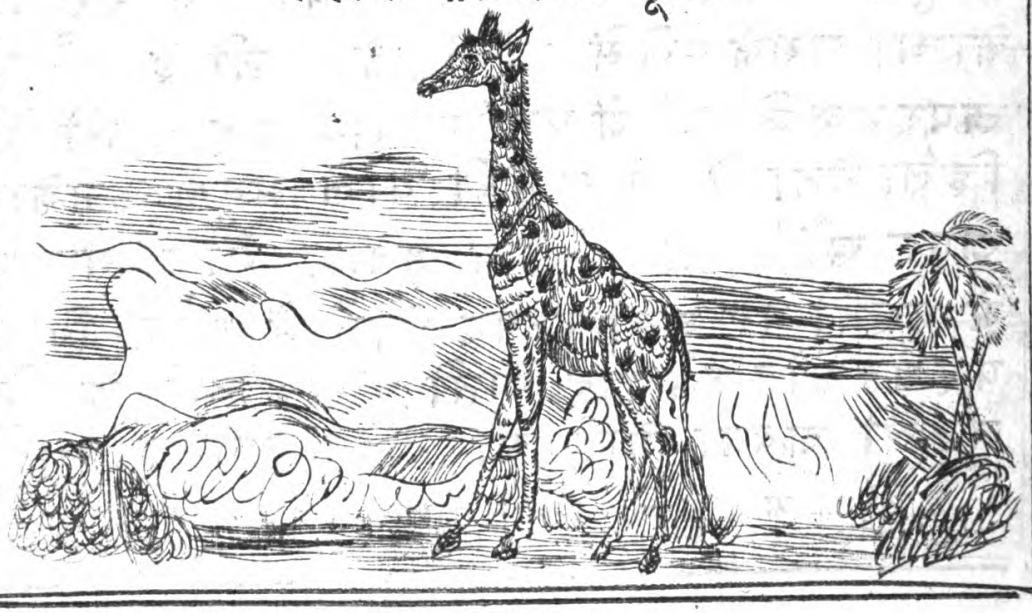

जिरेफेका वृत्तान्त

यह एक प्रकारका आश्चर्य चतुष्पद बिन सींगके हिरन की न्याईं जीव आफ्रिका और आमेरिका देश में मिलता है यह पृथ्वी के सब जंतुओं से ऊंचा होता है इसके अगले पांव पिछले पांव से बहुत लंबे होते हैं और इसका गला बहुत लम्बा होता है। यह बड़े २ वृक्षों के ऊपर की पत्ती खा लेता है और धरती पर और जंतुओं की न्याईं शिर झुका कर नहीं खाता इसके शिरसे और अगले पांवके खुरतक साढ़े सात गज़ दीर्घ होता है आफ्रिका और आमेरिका देशके लोग इसे मारकर खालेते हैं यह जंतु किसी और काम नहीं आता॥

चित्र



सप्तम अध्याय

विद्याधरऔर ज्ञानचंद का सम्वाद।

विद्याधर—"हेज्ञानचंद आज तुम्हारा क्यों-कर आना हुआ?

ज्ञानचंद-महाराज आपकी परमदया और सुशीलता मुझे भी खींच लाई है कि आप बड़ी प्रीति के साथ बालकों को परम सुन्दर वार्त्ता सुनाया करते हैं?

विद्याधर-हेज्ञानचंद तुम्हारीयह बातसुनकर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ बहुत अच्छा तुम यहां आया करो और जो कुछ कहना सुनना हो उसमें कुछ संकोच मत कियाकरो बेधड़क पूछलिया करो

ज्ञानचंद—महाराज मेरी भी यही अभिला-षा है सो आपने कृपा करके आज्ञा दे दी इस लिये आपकी आज्ञानुसार मैं पूंछता हूं कि महाराज आपके हाथमें यह कैसा पत्रहै?

विद्याधर—ज्ञानचंद यह समाचार पत्र है इसमें देशों और नगरों का समाचार लिखा होता है?

ज्ञानचंद—महाराज इसमें कुछ हमारे लाहौर नगर का भी समाचार लिखा है ?

विद्याधर—हां एक यह समाचार तो लिखा है कि वहां इस महीने की १८ तारीख़ को भूचाल आया और थोड़ी देर तक रहा ?

ज्ञानचन्द—महाराज यहतो बड़े आश्चर्य्य की बातहै और मैं जानूं मिथ्या होगी क्योंकि पृथ्वी तो एकहीहै जोवह हिलती तो सब देशों और नगरोंमें भूचाल आता ऐसा क्योंकर हो सक्ताहै कि केवल एक देश अथवा नगरमें भूचाल आवे और दूसरे देशों में जानाभी न जाय ?

विद्याधर-हे ज्ञानचन्द यह बात झूठी नहीं है तुम भूचाल की उत्पत्ति का कारण नहीं जानते इसलिये इसे मिथ्या समझते हो ?

ज्ञानचन्द—महाराज इसकी उत्पत्तिका क्या कारण है ?

विद्याधर—हे ज्ञानचन्द ! पृथ्वी पर जलांश में उष्णता के कारण भाफ़ उत्पन्न होती रहती है विशेष भाग उसका वायु में उड़ २ कर आकाश का चढ़ता रहता है कि जो मेह बादल ओले और तुषार आदिके आकार में प्रघट होता है और कुछेकभाग उसका पृथ्वीमें उसके सूक्ष्म छिद्रोंसे प्रवेश करता रहता है और पृथ्वी के भीतर जहां स्थान पाता है उन सूक्ष्म छिद्रों से जा२ कर इकट्ठा होता रहता है और फिर उन

स्थानों में भूमि के गुण अनुसार वह भाफ जल अथवा अग्निरूप में प्रघट होती है और पृथ्वीमें से निकलने को बल करती है तब जो वहांकी भूमि पोली होती है तो सहज में निकल आती है और जो वहां की भूमि कठिन होती है और निकलने को कोई छिद्र नहीं पाती इसलिये बड़ा बल करके निकलना चाहती है और उसके बल करने से वहांकी कुछ आस पास की भूमि डग मगाकर कांपती है और जबतक वहांकी धरती फट कर वह उष्णता बाहर नहीं निकल जातीहै तबतक वहांकी भूमिकांपती रहतीहै जो पृथ्वी बहुत बड़ी है इसी कारण उसके एकस्थान के हिलने से पृथ्वी के सारे अंश नहीं हिलते॥ देखो जब कोई रथ अथवा कोई और भारी वस्तु अति वेग से पृथ्वी के ऊपर तुम्हारे निकट होकर चले तो तुम्हारे पांवके नीचे की धरती कांपती हुई ज्ञान होतीहै परंतु तुम्हारे से कुछ अन्तर की धरती नहीं कांपेगी हे ज्ञानचन्द भूचाल इसी प्रकारसे होता है॥

ज्ञानचन्द-महाराज! ठीक है यह तो मेरी समझ में आगया परंतु पृथ्वी का स्वरूप मुझे बतलाइये कि कैसा है?

विद्याधर-गोल है॥

ज्ञानचन्द-क्या चक्की के पाट के समान गोल है?

विद्याधर—नहीं नारंगी के समान गोल है ॥

ज्ञानचन्द—महाराज देखनेमें तो यह पृथ्वी समान अर्थात् चपटी दीखती है क्योंकि जब हम किसी खेतके बीचमें खड़े होकर बड़ी दूर तक पृथ्वीको देखतेहैं तो चपटीही दिखाई देतीहै गोलेके समान उभरीहुई नहीं दीखती?

विद्याधर—इसका यह कारणहै कि पृथ्वीका गोला बहुत बड़ा है कि उसकी परिधि अर्थात् घेरा २५१०० कोसका है और लोगोंकी दृष्टिमें उसका बहुतही छोटा भाग अथवा खण्ड आसक्ताहै इस कारण इस थोड़ीसी दूर में उसकी गोलाईका कुछ आकार भान नहीं होता ॥

ज्ञानचन्द—महाराज यह क्योंकर अनुमान हो कि पृथ्वी नारंगीके समान गोल है ?

विद्याधर—बुद्धिमान लोगोंने इस पर अनेक प्रकार के प्रमाण लिखे हैं परंतु मैं तुमको एक सुगम युक्तिसे समझाताहूं अपने मनमें बिचार करोगे तो निश्चय होजायगा देखो धरती पर जब कोई दूरकी बस्तु दिखाई देती है तो पहले ही पहल उस बस्तु के ऊपर का भाग दिखाई देताहै फिर चलते २ ज्यों ज्यों उसके निकट होते जाते हैं त्यों २ उसके और भागभी दृष्टिमें आते जाते हैं यहां तक कि जब उसके निकट पहुंच जाते हैं तो वह बस्तु तले से ऊपर तक सम्पूर्ण दिखाई देने लगती है जबकि पन्थमें चलते हुये

भूमिपर किसी पर्वत को अथवा ऊंचे वृक्ष को देखते हैं तो उसके ऊपर का भाग पहिले दिखाई देता है फिर जैसे उसकी ओर चले जाते हैं वैसेही क्रम क्रम उसके नीचेका भाग भी दिखाई देता जाताहै। इसी प्रकार समुद्रमें जब कोई जहाज दूरसे आता देखते हैं तो उसकेभी ऊपरकाभाग अर्थात् मस्तूलही पहिले दिखाई देता है फिर वह जैसा निकट आता जाता है उसके नीचेके भाग भी दिखाई देते जातेहैं इस कारण जाना जाता है कि यह धरती नारंगी के समान गोल है और जो यह चक्की के पाट के समान चपटी होती तो उसके समान स्थान पर जो वस्तु होती वह दूर से देखनेके समय भी एकही बार सम्पूर्ण दिखाई देती॥

ज्ञानचन्द—महाराज दूरकी वस्तुजो सम्पूर्ण दिखाई नहीं देती उसका तो यह कारण है कि उस वस्तु का हमसे अन्तर बहुत होता है इस अन्तरकी अधिकताई से सम्पूर्ण भाग उसके हमारी दृष्टिमें नहीं आसके फिरजब वह वस्तु निकट आजातो है तो उसकी अल्पता नहीं रहती इस कारण सम्पूर्ण भाग और अंग हमें दिखाई देने लगते हैं?

विद्याधर—मेरे वर्णनका यह अभिप्राय नहीं कि दूरकी वस्तु सम्पूर्ण अंगों सहित अच्छी प्रकारसे दिखाई नहीं देती॥

मेरे वर्णनका तो यह तात्पर्य्य है कि दूरकी वस्तु जो देखते हैं तो उसके ऊपरकाही भाग प्रथम दिखाई देता है फिर ज्यूं ज्यूं उसके निकट होते जाते हैं तिउं तिउं उसके नीचे के भाग क्रम क्रम दीखते जाते हैं। जो केवल उस वस्तुके अंतर होनेके कारणही वह वस्तु दिखाई नहीं देती तो उसका ऊपरका भाग भी नहीं दिखाई देता यह केवल पृथ्वीके गोल होने का कारण है। जो कदाचित् धरती सपाट होती तो जो वस्तु उसपर होती सब जगह से ऊपर और नीचेके सम्पूर्ण भागों सहित एकही बार देखी जासक्ती क्योंकि वह सम्पूर्ण वस्तु दृष्टिके सन्मुख होतीहै परंतु ऐसा नहीं दिखाई देता जितनी दूर कोई वस्तु होतीहै उतनेही ऊपरके भाग उसके दीखतेहैं और नीचेके नहीं दीखते इससे धरती की गोलाई गोलेके समान जानी जातीहै। जब धरती को गोले के समान मानें तो जो वस्तु जितनी दूर होती जायगी उतनीही दृष्टिके सन्मुखसे नीचे हट कर पृथ्वी की गोलाई की ओटमें आती जायगी और जितनी निकट आती जायगी उतनीही दृष्टिके सन्मुख होती जायगी इसलिये दूरहोनेके समय केवल ऊपर का भाग दिखताहै और निकट होने के समय नीचेके भाग भी दिखने लगतेहैं॥



जैसे इस चित्रमें देखो कि जब कोई मनुष्य (क) के स्थान पर खड़ा होता है तो उसको (ख) वृक्ष का (ग) रेखा के ऊपरका भाग दिखाई देगा क्योंकि (ग) रेखा के नीचे का भाग धरती की ओट में रहेगा इसलिये वह अदृश्य होगा फिर वह मनुष्य चलकर जब (च) के स्थान पर पहुंचके देखेगा तो (छ) रेखाके ऊपरका भाग भी दिखाई देने लगेगा कि वह अब पृथ्वीकी ओटमें न रहा और फिर जब वह मनुष्य चलते२ (च) के स्थान पर पहुंच कर उस वृक्षको देखेगा तोवह वृक्ष सारा दिखाई देगा॥

ज्ञानचन्द—महाराज आपकी कृपासे यहतो मेरी समझमें आगया कि दूरकी वस्तुका केवल ऊपरका भाग प्रथम दिखाई देता है इसलिये धरतीकी गोलाई गोलेके समान होनीचाहिये परंतु मुझे यह सन्देह है कि धरती के सारे ओर फिर कर इस बातकी परीक्षा किसनेकी है हम लोग तो धरती पर थोड़ीसीही दूर में देशांतरोंमें आते जाते हैं किसी की यह शक्ति नहीं देखते कि पृथ्वी के सारे ऊपर फिर कर इस बात की परीक्षा करे और जब लो पृथ्वीके

सारे ऊपरकी परीक्षा नहींहोती तबतक सारी पृथ्वी की गोलेके समान गोल होना दृढ नहीं होता क्योंकि यह भी हो सक्ता है कि केवल इतनीही भूमि जिस पर हम बसते हैं अथवा फिरते हैं बतासा अथवा बुलबुले की नाईं फूली हुई है ?

विद्याधर— इंगरेज लोग धरती पर सारे देश देशांतरों में फिरते हैं और महा सागर समुद्रों में जहां जहां जाते हैं वहां जहाज लेजाते हैं इस पृथ्वीके गोले पर हमसे परली ओर जो अमरीका नामी एक नया लोक है यह वहां भी आते जाते हैं और किसी जगह से सीधे एक ओर को चलते २ संपूर्ण पृथ्वीके गोलेके ऊपरहोकर सारी पृथ्वी को प्रदक्षिण करके फिर वेहीं आजाते हैं कि जहां से चले थे इसलिये सारी पृथ्वी पर इस बातकी परीक्षाहो चुकीहै कि दूर की वस्तु का ऊंचा भागही प्रथम दिखाई देताहै इस कारण यह पृथ्वी गोले के समान गोल दृढ़ की गई है—दूसरे एक जगहसे सीधे चलते चलते उसी जगह पहुंच जाने से पृथ्वी की गोलाई गोले के समान जानी जाती है क्योंकि जो पृथ्वी चपटी होतीतो अपने सन्मुख सीधे चलते २ उस स्थान पर फिर कभी नहीं पहुंचते जैसे इसचित्र में देखो कि (ज)के स्थानसे कोई मनष्य इधर



अथवा उधर सीधा चला चले तो वह सीधे सन्मुख चलते २ फिर (ज) के स्थान पर कभी नहीं पहुंचेगा जब उलटा न फिरे। वरंच जितना चलेगा उतनाही दूर होताजायगा परन्तु पृथ्वी गोलेकी नाईं गोल हो तो सीधा सन्मुख चलते २ उलटा मुड़े बिनाहीं पृथ्वीकेगोलेका पूरा चक्र काटकर वहीं पहुंच जाता है कि जहांसे चला था जैसे इसचित्रमें देखो कि (क) के स्थान से कोई मनुष्य सन्मुख सीधा चले तो (ख) और (ग) और (घ) के स्थान पर होता हुवा फिर (क) के स्थान पर आ पहुंचेगा और पंथ में कहीं उसको मुड़ना भी न पड़ेगा ॥

चित्र १



ज्ञानचन्द—महाराज आपकी कृपा से अब पृथ्वीकी गोलाई अच्छे प्रकारसे मेरी समझ में आगई; परन्तु इस बातके श्रवण करनेकी इच्छा है कि पहिले पहिल कौन सा मनुष्य इस पृथ्वी पर घूमकर वहां पहुंचगया किजहां से चलाथा॥

विद्याधर—पहिले पहिल सन् १५२० ई॰ में स्पेनके महाराज चार्लिस पांचवेंने पांच जहाज मेगीलनकेसंगपश्चिमदिशाको भेजेथे-मेगीलनतो पंथ में शत्रुओं के हाथ मारा गया परन्तु उसके साथी घूमते हुये सारी पृथ्वी की प्रदक्षिण कर के अंतको फिर उसी स्पेन देश के तीर पर आ पहुंचे कि जहांसे चले थे॥

ज्ञानचन्द—महाराज आपने जो कहा किइस पृथ्वीके गोले पर हमसे परले और नया लोक है यह बात आश्चर्य की है कि क्या इस भूलोक पर कै लोकहैं ?

विद्याधर—यह भूलोकजो गोलेके समान गोल है इसके दो भागहैं—पहिला गोलार्द्ध अर्थात् आधा गोल जो पूरबकी ओर है उसे तो पुराना लोक कहतेहैं कि उसमें हम सदैव कालसे आते जाते रहतेहैं और दूसरा गोलार्द्ध जो पश्चिम ओर है उसमें जो देश हैं उसे हम नया लोक कहते हैं कि उसे हमने थोड़े दिनों से जाना है। ३५० बर्षके निकट हुयेहोंगे कि जब कलम्बस हमारे इसपुराने लोकसे उसनये लोकमें पहिले

पहिले गया था उससे पहिले वह अज्ञात था ॥

ज्ञानचन्द—महाराज क्या उस नयेलोक में भी यही सूर्य और चन्द्रमा हैं जो हमारे पुराने लोकमें हैं अथवा वहां कोई और हैं और वहां भी ऐसेही दिनरात होती हैं जैसे हमारे यहां अथवा किसी और प्रकार की ?

विद्याधर—वहां भी यही सूर्य्य और चन्द्रमा प्रकाश्यहैं और ऐसही दिनरात वहां भी होते हैं परन्तु इतना भेद अवश्यहै कि जब यहां दिन होता है तो उस नयेलोकमें रात होतीहै और जब रात होतीहै तो उसलोकमें दिन होताहै॥

ज्ञानचन्द—महाराज यह बड़े आश्चर्य्य की बातहै कि एकही पृथ्वी पर एकही समय कहीं तो दिन और कहीं रात। तो इसका क्या कारण है कृपा करके मुझे बतलाइये।

विद्याधर—पृथ्वीका गोला अपनेही ऊपर लट्टू अथवा फिरकी की न्याईं सदा घूमता रहताहै और घूमनेके समय जो भाग अथवा खंड इसका सूर्य के साम्हने आ जाता है वहां दिन और जो परे चलाजाता है वहां रात होती है और २४ घंटेमें यह पृथ्वी अपनेपर पूरा एकचक्कर खा जातीहै इसलिये २४ घंटेमें एक दिन और एक रात इस पृथ्वीके सारे देशांतरोंमें होजाता है-पृथ्वीके घूमने से जबवह पुराना लोक सूर्य्य के सामने आजाताहैतब नयालोकसूर्य्य के सन्मुखसे

परे चला जाता है इसलिये उस समय नये लोक में दिन और पुराने लोक में रात होती है। और जब यह पुराना लोक सूर्य्यके सन्मुख से परे चलाजाताहै और नया लोकसूर्य्य के सन्मुख आजाता है तो पुराने लोक में रात और नये लोकमें दिन होताहै। जैसे दीपकके सामने गोली घूमने से उसके प्रत्येक भाग पर बारी२ से चांदना और अंधियारा होता जाताहै इसी प्रकार से सूर्य्य के सामने पृथ्वीके घूमने से उसके प्रत्येक देश में बारी २ से चांदना और अंधियारा होता जाता है। यहही भूमिपर दिन और रात होने का कारण है और जोकि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व को घूमतीहै इसलिये सूर्य्य पूर्व से उदय होकर पश्चिमको अस्त होता हुआ दिखलाई देता है। पृथ्वीके घूमने से सूर्य्य उसके गिर्द फिरता हुआ प्रतीत होता है, सच पूछो तो यह उसके गिर्द नहीं फिरता॥

ज्ञानचन्द—महाराज यह तो बड़े आश्चयकी बात है कि सूर्य्य पृथ्वीके गिर्द नहीं फिरता पृथ्वी अपनेऊपरही घूमतीहै-प्रत्यक्ष हम उसके विरुध देखते हैं पृथ्वी का भ्रमण तो कदाचित भान नहीं होता॥

विद्याधर—यह बात तो ठीक है कि अलोक वासियों को पृथ्वी भ्रमतीहुई भान नहीं होती सूर्य्य उसके गिर्द फिरता हुआ दिखाई देता है

परन्तु फिरंगस्तानी चतुर लोगोंने इसबातको अच्छीप्रकारसे निर्णय कियाहै कियद्यपि प्रत्यक्ष में सूर्य्य फिरतेहुआ दिखाई देता है पृथ्वी घूमती हुई भान नहीं होती तथापि अनमान से यह बातप्रमाणिक है कि पृथ्वीही अपने ऊपर घूमती है सूर्य्य उसके गिर्द नहीं फिरता जैसे क्रीड़ा के समय घूमते हुए बालक को चारों ओर की बस्तु अपने गिर्द फिरती हुई दिखाई देती हैं परंतु यथार्थ में बस्तु नहीं फिरती बालकही अपने आप घूमता है ऐसेही जब जहाज अथवा नाव समुद्र में शीघ्रता से चलती है तो उसमें बैठने वालों को जहाज चलता तो भान नहीं होता परंतु जो समुद्रके तीर पर घर और वृक्ष आदि बर्तमान होते हैं वह उलटे अपनी ओर आते दिखाई देतेहैं ऐसेही और बहुतेरे दृष्टांत हैं कि सत्यसे बिरोध असत्य परतीत होती हैं इसी प्रकार पृथ्वी का भ्रमण जाना नहीं जाता सूर्य्यही उसके गिर्द फिरता दिखाई देताहै ॥

ज्ञानचन्द—आपने जो कहा मेरी समझमें आ गया निःसंदेह ऐसाभी होसक्ता है कि प्रत्यक्ष के बिरोध पृथ्वीही घूमती हो औ सूर्य उसके गिर्द फिरता न हो परंतुमैं पूछता हूं कियत्यक्षके अनुसार पृथ्वीको स्थिर और सूर्य्यको उसके गिर्दफिरता हुआ क्यों नहीं मानते, इसमें क्या हानिहै?

बिद्याधर—हे ! ज्ञानचंद इसमें कई दोष हैं

परंतु उनका समझना कठिन है तुम नहीं समझ सक्ते जब तुम कुछ विद्या पढ़ लोगे और आकर्षण शक्ति के धर्मोंको जान लोगे तब तुम अच्छे प्रकार से उनको समझ जाओगे परंतु अब मैं तुमसे इतना कहता हूं कि सब वस्तुओं में आकर्षण शक्ति होती है कि जिसके कारण बड़ी वस्तु छोटी को अपने ओर खींचती है इसी आकर्षण शक्ति के धर्म के अनुसार सहज प्रकार से तारा गण की चाल समझ में आती है परंतु सूर्य्य को पृथ्वी के गिर्द फिरता हुआ माने तो यह आकर्षण शक्ति के धर्म से विपरीत हो क्योंकि यह बात युक्तियों और प्रमाणों से दृढ़ कीगई है कि सूर्य्य पृथ्वी से बहुत बड़ा है सूर्य को जो घड़ी के समान मानोगे तो पृथ्वी मटर के दाने के तुल्य ठहरेगी और बड़ी वस्तु का छोटी वस्तु की चारों ओर चक्राकार पथ में फिरते रहना आकर्षण शक्ति के धर्म के विपरीत है और कोई कारण नहीं दीखता कि जिससे इस विपरीत चाल को मान लें॥

ज्ञानचन्द-महाराज जो सूर्य्य इतना बड़ा है तो ऐसा छोटा क्यों दिखाई देता है कि थाली के समान भी अनुमान नहीं होता॥

विद्याधर—यह बात प्रत्यक्ष है कि वस्तुका जितना अंतर विशेष होता है उतनीही छोटी दिखलाई देती है और फ्रिंगस्तान के चतुरों ने यह

बात बड़े परिश्रमसे निर्णयकी है कि पृथ्वी और सूर्य्य में पौने पांच करोड़ कोस का अन्तर है इसलिये पृथ्वी पर से सूर्य्य छोटा सा दिखलाई देता है कि इनका अंतर अत्यन्त अधिक है॥

ज्ञानचन्द–महाराज जो आपने कहा कि पृथ्वी अपने ऊपर घूमतीहै। सदा अपना चक्कर एक२४ चौबीस घंटे में पूरा करतीहै और उसके घूमने के समय जो गोलार्द्ध सूर्य्यके सन्मुख आता जाता है उस पर दिन और दूसरेगोलार्द्ध पर जोपरे होता जाताहै राचि होतीरहतीहै जो ऐसाहो तो दिन और रातसदा समानही होनीचाहिये परंतु ऐसा नहीं कभी तो दिन बड़े होजाते हैं और राचि छोटी और कभी उसके बिरोध राचिबड़ी होजातीहै और दिनछोटे और कभी दोनों समान होजाते हैं?

बिद्याधर–ज्ञानचन्द! पृथ्वी दोप्रकार से भ्रमती है एकतो अपनेही ऊपर घूमती है जिसका एक चक्कर चौबीस घंटेमें सम्पूर्ण होता है जैसा पहिले बर्णन हुआ दूसरे सूर्य्यके गिर्द चक्राकार पथ में फिरती है जिसका एक चक्कर एक बर्ष में पूरा होता है; और पृथ्वी गोलकआकाश में सीधा खड़ा हुआ नहीं है। उसका उत्तर ध्रुव कुछेक झुका हुआ है और उसके झुकने से सूर्य्य के गिर्द फिरने के समय कभी तो पृथ्वीका

उत्तरीय गोलार्द्ध सूर्य्यके सन्मुख आता जाता है और दक्षिण गोलार्द्ध परे होता जाता है तब उत्तरीय गोलार्द्ध में तो दिन बड़े और रात्रि छोटी होती है और दक्षिण गोलार्द्ध में रात्रि बड़ी और दिन छोटे होतेहैं और कभी इसके विरोध दक्षिण गोलार्द्ध सूर्य्य के सन्मुख आता जाता है और उत्तरीय गोलार्द्ध परे होताजाता है तब दक्षिण गोलार्द्ध में दिन बड़े और रात्रि छोटी होती हैं और उत्तरीय गोलार्द्ध में रात्रि बड़ी और दिन छोटे होते हैं और कभी पृथ्वी गोलक पर जो बीचों बीच स्थान है वह सीधा सूर्य्य के सन्मुख होजाता है तब उत्तरीय और दक्षिण गोलार्द्ध सूर्य्यके इधर उधर होताहै और पृथ्वीके देशांतरों में दिन और रात समान होजाते है यहही दिन और रात के घटने बढ़ने और ग्रीष्म और शीत के ऋतों के पलटने का कारण है॥

ज्ञानचन्द—महाराज इसकारणसे यह ऋतु किस प्रकारसे पलटतेहैं अनुग्रह करके विस्तार से वर्णन कीजिये॥

विद्याधर—ज्ञानचन्द! पृथ्वी गोलक के झुके होने से जब उसका एक गोलार्द्ध सूर्य्यके सन्मुख आजाता है और दूसरा परे चलाजाताहै तब इसके पहिले गोलार्द्ध में तो दिनबड़े और रात्रि

छोटी होजातीहै और दूसरेमें रात्रि बड़ी और दिन छोटेहोजातेहैं और जहां दिन बड़े रात्रि छोटी होती है वहां पृथ्वी दिनको सूर्य्यके तापसे अधिक समय तक तपती रहतीहै परंतु रात को शीतल थोड़ीही समयतक होने पाती है और दूसरे वहां सूर्य्य के सन्मुख होने से उस की किरणें भी सीधी पड़ेंगी। और सीधी किरणों में उष्णता विशेष होती है इस लिये वहां इन दिनों ग्रीष्म ऋतु रहती है और जहां इसके विरोध दिन छोटे और रात बड़ी होतीहै वहां पृथ्वी दिन को तपती तो थोड़ी ही समय है परन्तु रात को शीतल बहुत समय तक होती रहती है और दूसरे वहां सूर्य्य के परे होने से उसकी किरणें भी तिरछी जाकर पड़ती हैं और तिरछी किरणोंमें उष्णता थोड़ी होती है इस लिये वहां जाड़े की ऋतु रहती है यही ग्रीष्म और जाड़े के होने का कारण है॥

ज्ञानचन्द्र-महाराज सीधी किरणों में तिरछी किरणों की अपेक्षा उष्णता क्यों विशेष होती है॥

विद्याधर-हे! ज्ञानचन्द इसका यह कारणहै कि जितनी सीधी किरणें एक स्थानपर पड़ती हैं उतनीही तिरछी किरणें उससे अधिक स्थान को व्याप्त करती हैं॥

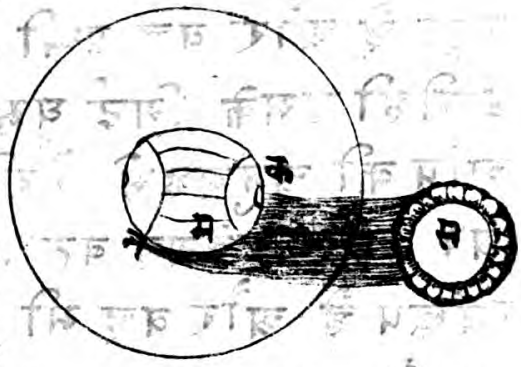

जैसे इस चित्र में स सूर्य्य से जितनी किरणें सीधी क से ख तक की भूमि पर पड़ती हैं उतनीही तिरछी किरणें ख से ग तक की भूमि पर पड़तीहैं देखो यहां सूर्य्य की किरणों के दोनों समूह बराबर बराबर हैं और उनके सीधे और तिरछे हो जाने से सीधे तो थोड़ी ही दूर में पड़ती हैं और तिरछी बड़ी दूर तक फैल जाती हैं और दूसरी सीधी किरणें तिरछी किरणों की अपेक्षा बायु के थोड़ेही भाग में होकर पहुंचती हैं जैसे ऊपर के लिखित चित्रमें पृथ्वीकेगिर्दकुण्डल बनाहुआहै उसे पृथ्वी के गिर्द बायुका चक्कर आकार मानें तो प्रगट होजाय कि सीधी किरणों का जो क से ख तक की भूमिपर पड़तीहै तिरछीकिरणकी अपेक्षा जो ख से ग तककी भूमि पर पड़ती है बायु के थोड़े भागमें चलना पड़ता है और वायु मेंसे निकलकर पहुंचने से तेज और उसकी उष्णता घटजातीहै इसलिये इनदोनों कारण से सीधी किरणोंमें तिरछी किरणों की अपेक्षा उष्णता विशेष होती है ॥

ज्ञानचन्द—महाराज सूर्य्य पृथ्वी से अत्यन्त बड़ा है और वह पृथ्वी के गिर्द नहीं फिरता पृथ्वीही उसके गिर्द घूमती रहतीहै यह बातें आप की अनुग्रहसे मेरी समझमें आगई परंतु अब दयाकरकेयह बतलाइयेकि चन्द्रमाका क्या स्वरूप है और वह भी सूर्य की न्यांई पृथ्वी से बड़ाहै अथवा छोटा औ उसके गिर्द भी पृथ्वी फिरती है अथवा नहीं॥

विद्याधर—चन्द्रमा भी गोलिके समान गोलहै परन्तु वह पृथ्वी से छोटाहै और उसका अंतर भी पृथ्वी से कुछ ऐसा बहुत नहीं कि और सब तारोंकी अपेक्षा समीपहै और उसके गिर्दपृथ्वी नहींफिरती वहआपही पृथ्वीके गिर्द फिरताहै॥

ज्ञानचन्द—महाराज चन्द्रमा जो घटता बढ़ता रहता है इसका क्या कारण है॥

विद्याधर—ज्ञानचन्द चन्द्रमा अपनेआप प्रकाशितनहीं परन्तु एक गोलार्द्ध अर्थात् आधा गोला उसका जो सूर्य के सन्मुख होता है वह सदा प्रकाशित अथवा उज्वल रहता है और चन्द्रमा के भ्रमण से जब उसका गोलार्द्ध पृथ्वी की ओर आता जाताहै तबतो चन्द्रमा बढ़ता हुआ अनुमान होता है और जब वह गोलार्द्ध उसका पृथ्वी की ओर से परे होता जाता है तब वह घटता हुआ भान होता है यह उसके बढ़ने घटने का कारण है और जोकि चन्द्रमा

चित्रसंख्या २३ पृष्ठ २२१

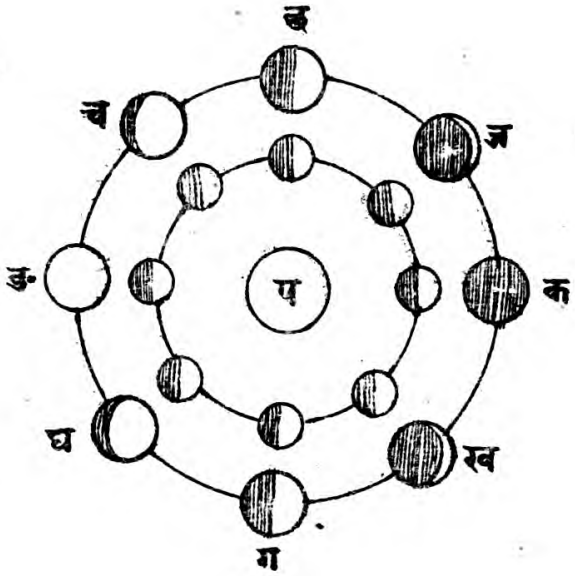



२९ दिन और कुछ घण्टों में पृथ्वीके गिर्द एक बेर पूरा चक्कर कर जाताहै इसलिये इतनेकाल व्यतीत होने के पीछे फिर पहिलेही के अनुसार क्रम २ बढ़ने और घटने लगता है॥

ज्ञानचन्द—महाराज जब चन्द्रमा गोलहै और केवल अर्द्ध भाग उसका अर्थात् आधा गोल उज्ज्वल है तो पूर्णमासी की रात को परिपूर्ण गोल उज्ज्वल चन्द्रमा किस लिये दिखलाई देता है॥

विद्याधर—अब ज्ञानचन्द जब आधे गोले को अग्नि अथवा और किसी वस्तुसे उज्ज्वल करके दूरखड़े होकर उस गोलेको उज्ज्वल ओरसे देखो तो वह पूरा उज्ज्वल गोला दिखाई देगा क्योंकि जिस ओरसे वह गोला दीखताहै वह सब उज्ज्वल है और जिस ओरसे वह उज्ज्वल नहीं वह अदृश्य है देखोइस चित्रमें स सूर्य्य और प पृथ्वी और क, ख, ग, घ, आदिक चन्द्रमा के पृथक २ स्थान उसके चक्राकार पथ में हैं। और यथार्थ में चन्द्रमा का आधा गोला सदाही प्रकाशित रहता है; जैसा अन्दर के कुंडल पर चन्द्रमा की एकसी आकृति बनाई गई हैं परन्तु अलोक बासियों को चन्द्रमा के चक्राकार पथ में प्रत्येक स्थानों पर घटता बढ़ता हुआ चन्द्रमाका भिन्न२ स्वरूप दिखाई देताहै जैसा कि बाहर के कुंडल

पर भिन्न२ स्वरूपकी आकृतिबनाई गई हैं अबदेखो कि जब चन्द्रमा क के स्थानपर होता है तबउसका अंधियारा गोलार्द्धही पृथ्वी के सन्मुख होता है इस लिये उस समय भूलोक बासियों को किंचित् मात्र भी चन्द्रमा दिखाई नहीं देता परंतु अब जितना यहां से ख की ओर चन्द्रमा चलता जाता है उतनाही उसका अंधियारा गोलार्द्ध तो पृथ्वी के सन्मुख से परे होता जाता है और उज्ज्वल गोलार्द्ध पृथ्वी के सन्मुख आता जाता है इस लिये जब वह ख के स्थान पर पहुंच जाता है तो चौथाई चन्द्रमा देखने लगता है इसी प्रकार से जब वह ग के स्थान पर पहुंचता है तो आधा और जब घ के स्थान पर पहुंचता है तो पौन और जब यहां से भी आगे बढ़ कर ङ के स्थान पर पहुंचता है तो यहां पूर्ण चन्द्रमा गोल दिखाई देता है क्योंकि यहां जिस ओरसे चन्द्रमा भूलोक बासियों को दीखता है वह सब सूर्य के सन्मुख होनेसे उज्ज्वल होता है और अंधेरा ओर परे रहता है। यहांसे चन्द्रमा जितना च छ आदिके स्थान को आता जायगा उतनाही उसका अंधियारा गोलार्द्ध पृथ्वी के सन्मुख और उज्ज्वल गोलार्द्ध उसके सन्मुख से परे होता जायगा कि च के स्थान पर पौन और छ के स्थान पर आधा और ज के स्थान पर चौथाई अनुमान होता है और जब चलता २ क के स्थान पर पहुंच जायगा

तो सारा गुप्त हो जायगा, किंचित् मात्र भी दृष्टिमें नहीं आयगा ॥

ज्ञानचन्द—महाराज चन्द्रमाके बढ़ने घटनेका जो कारण आपने बतलाया ठीक है मेरी समझमें आगया परंतु अब कृपा करके यह वर्णन कीजिये कि ग्रहण में चन्द्रमा और सूर्य्य किस कारण घटते हुये दीखते हैं ॥

विद्याधर—ज्ञानचन्द! जोकि पृथ्वी सूर्य्य के गिर्द चक्राकार पथ में घूमती रहती है इस लिये चन्द्रमा पृथ्वीके गिर्द घूमता हुआ पृथ्वी के साथ सूर्य्यके गिर्द भी घूमता रहता है और जब कभी पृथ्वी और चन्द्रमा अपने २ चक्राकार पथों में घूमते हुये ठीक सूर्य्य की सीध में आ-जाते हैं तब जो पृथ्वी चन्द्रमा और सूर्य्य के बीच में आजाती है तो चन्द्र ग्रहण होता है क्योंकि पृथ्वी की ओट बीच में होजाने से सूर्य्य का प्रकाश तो चन्द्रमा तक पहुंचता नहीं और चन्द्रमा अपने आप उज्ज्वल नहीं इस लिये उस समय चन्द्रमा उज्ज्वल न होने के कारण अदृश्य होकर घटता हुआ भान होता है जैसे नीचे के चित्र में देखो कि स सूर्य्य है और प पृथ्वी और च चन्द्रमा और इन तीनोंके ठीक सीध में हो जाने से चन्द्रमा पृथ्वी के ओट में होकर उसकी परछाईं में छिप गया है इस लिये भूलोक

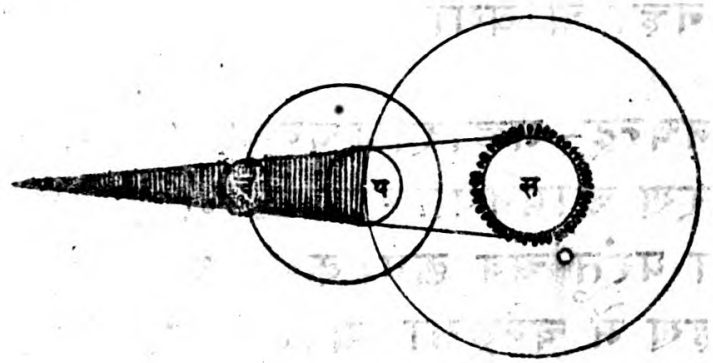

बासियों को उसके दर्शन नहीं होते जब तक वह उसकी परछाईं से बाहर न आये—और जो चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य्य के बीचमें आजाता है तो सूर्य्यग्रहण होजाता है क्योंकि चन्द्रमा सूर्य्य के आगे ओट होकर उसे भलोक बासियोंको देखने नहीं देता इस लिये उस समय सूर्य्य घटता हुआ दिखाई देता है जैसे इस चित्रमें देखो कि

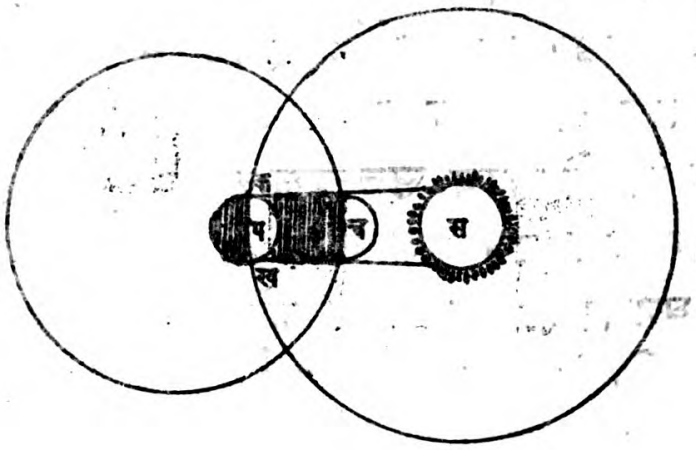

स सूर्य्य है और च चन्द्रमा और प पृथ्वी और इन तीनोंके ठीक सीध में होजाने से चन्द्रमा के

बीचमें ओटहोकर क से ख तक की भूमि उसकी परछाईं में आगई है इस लिये भूलोक बासियों को वहां से सूर्य्य के दर्शन नहीं होते जब तक कि वह भूमि उसकी परछाईं से न निकले ॥

ज्ञानचन्द—महाराज पिछले महीने की पूर्णमासीको चन्द्रग्रहण हुआथा तब मैंने घरमें लुगाइयों से यह बार्त्ता सुनी थी कि सूर्य्य और चन्द्रमा ने किसी कालमें दैत्यों से कुछ नाज उधार लिया था वह उनको देना रह गया इस लिये जब कभी दैत्यों का बश लग जाता है तो वह इन को घेर कर पकड़ लेते हैं और नाना प्रकारकी पीड़ा देते हैं इसलिये यह घटने लगते हैं परन्तु पृथ्वी पर जब लोग उनके छुटनेके अर्थ नीच जात अर्थात् भंगियोंको सतनजे का दान देते हैं तो वहां उनका छुटकारा होता है इसी प्रकार कई और लोगोंसे भी सुना था परन्तु अब आप के समझाने से जाना गया कि पृथ्वी अथवा चन्द्रमा की परछाईं के पड़ने से यह ग्रहण लगताहै यद्यपि आपकी बार्त्ता मेरे जीमें जच गई तथापि कृपादृष्टि से आपभी कुछ कहिये कि वह इतिहास कैसे प्रसिद्ध होरहा है ॥

बिद्याधर—ज्ञानचन्द ! प्रमाणिक और प्रसिद्ध पुस्तकों में वह इतिहास बर्णन नहीं और जो कुछ चर्चा ऐसी बार्त्ताका उनमें मिलता भी है तो अति संक्षेप और उपमा की न्याईं पाया

जाता है अल्प बुद्धि पण्डितों ने उसके अभिप्राय को तो जाना नहीं बिना बिचारे केवल स्थल अर्थों पर उसे सच्चा वृत्तान्त मान कर अपनी समझ के अनुसार से इतिहास गढ़ लिया है ऐसी बातों पर मूर्खही बिश्वास लाते हैं और मैंने जो बातें तुमसे कही हैं वह फरंगिस्तान के प्रसिद्ध चतुरोंके बड़े परिश्रम से निर्णय की हुईहैं और अनुमानों और प्रमाणोंसे दृढ़ किये गये हैं यद्यपि वह अनुमान और प्रमाण अभी तुम यथार्थ नहीं समझ सक्ते परन्तु जब तुम इस्टानामी अर्थात् फरंगियोंकी ज्योतिषविद्या पढ़ोगे तब तुम अच्छे प्रकार से उनको जान लोगे॥ और पण्डितों को ज्योतिष शास्त्र में भी परछाईं सेही ग्रहण का होना लिखा है हां इतना भेद तो अवश्य है कि वह पृथ्वी और चन्द्रमा की परछाईंसे मानतेहैं, और यह राहु और केतुकी परछाईं कहते हैं और राहु और केतु आकाशमें काले वर्णकी दो मूर्तें हैं जो दोनों के आपस में कटने से प्रघट हुये हैं॥

ज्ञानचन्द—महाराज सूर्य्य और चन्द्रमा के सिवाय और तारागण जो इस नीले २ आकाश में चमकते हुये दिखाई देते हैं इनकी कुछ संख्या भी है अथवा नहीं?

विद्याधर—हे! ज्ञानचन्द इन तारों की संख्या कुछ समझमें नहीं आती इन असंख्यात तारोंको देखकर निश्चय होता है कि परमेश्वर की माया

अपरम्पार है उसका कुछ आदि और अन्त नहीं पाता—और जो तुमने आकाशको नीला कहा सो यथार्थमें आकाश नीला नहीं क्योंकि आकाश तो पोल अथवा शून्यता का नाम है उसका कुछ रंग नहीं होसक्ता परंतु यह नीला रंग वायु का है और वायु आकाश में पृथ्वी गोलक को बड़ी दूर तक घेर हुये है इस लिये यह नीलाहट आकाशमें दिखलाई देती है—

ज्ञानचन्द—हे महाराज! वायु तो अति सूक्ष्म इसका तो कुछ रंग और रूप नहीं जो नीलारंग इसका होता तो यह वायु तो घर २ और कोठों मेंभी होती है वहांभी नीली दीखती परन्तु ऐसा नहीं देखते॥

विद्याधर—हे! ज्ञानचन्द जगत् में यह रीति प्रसिद्ध है कि जो बस्तु बहुत हलकी रंगकी होती है वह बस्तु जो थोड़ी हो तो उसका रंग कुछ नहीं दीखता परंतु वही बस्तु जो एक जगेह बहुत सी इकट्ठी होजाती है तो उसका रंग दीखने लगता है। जैसे शीशेके किसी पतली नलीमें कि जिसका छेद सूक्ष्म हो जो कोई हलके रंग का पानी अथवा मदिरा भरे तो उसका रंग दृष्टिमें नहीं आता, परंतु उसी को जो एक प्यालीमें भर कर देखें तो उसका रंग दीखने लगता है। और जिस कागज़ का बहुत हलका रंग होता है जो उसके एक आध पत्रको देखें तो उसका रंग दृष्टिमें नहीं

आता परंतु उसी कागज़ की दिस्ते अथवा बहुत से ऐसे पत्रोंको इकट्ठा करके देखें तो यथार्थ उसका रंग दीखने लगता है इसी प्रकार कोठे घर आदिक में जो हमारे चारों ओर जो थोड़ीसी वायु होतीहै वहां उसका रंग दृष्टिमें नहीं आता परंतु जब पृथ्वी पर आकाश में पचास मील ऊंचे तक वायुको देखते हैं तो उसका रंग जो नीलाहै, दीखने लगता है—

ज्ञानचन्द—महाराज! क्या वायु पृथ्वीपर पचास मील ऊंचे तक है?

विद्याधर—हां! ज्ञानचन्द, पृथ्वी गोलक सब ओर वायुसे घिरा हुआ है और इस पर यह वायु पचास मीलके निकट ऊंचे तक पाई जातीहै परंतु इतना अवश्य है कि नीचेकी वायु अर्थात् पृथ्वीके समीप जो है, वह भारी है और ऊपरकी वायु क्रम २ हलकी होती गई है॥

ज्ञानचन्द—हे महाराज! क्या वायु भी हलकी और भारी होती है?

विद्याधर—हां! ज्ञानचन्द! वायु भी हलकी और भारी होती है और बुद्धिमान लोगों ने परीक्षा करके इसके बोझ का प्रमाण भी लिखा है कि एक इंच लम्बी और एक इंच चौड़ी जगह पर वायु का बोझ साढ़े सात सेर के निकट होता है और इस अनुमान से सारी पृथ्वी पर हर एक जगह वायु का बोझ रहता है इसी रीति से

एक मनुष्यके देह पर पौने चारसौ मनके अनुमान वायुका बोझ रहता है—

ज्ञानचन्द—हे महाराज! यह क्या कहते हो! जो ऐसा हो तो हमारी देह बोझ से सारी चर न होजाय और तिसपर बड़ा आश्चर्य यहहै कि हम को तो वहबोझ अणुमात्रभी भाननहींहोता—

विद्याधर—हे ज्ञानचन्द! जो बोझ किसी वस्तु के सारे अंशों पर समान बटा हुआ होता है तो वह बोझ चाहे जितना हो उसपर भारी नहीं होता जैसे किसी शीशे अथवा चीनीके बर्तन पर कोई बोझ ऐसा रक्खा जाय जो उसके अंशों पर समान फैला हुआ हो तो वह पात्र उस बोझ को अच्छी भांतिसे सहार लेताहै परंतु वह बोझ उस पात्रके कुछ अंशसे उठा लिया जाय तो वह पात्र उसी समय टूट कर टुकड़े होजाय इसी रीति से जो लोग खड़े पानीमें डुबकी मारते हैं तो उनके शरीर पर बहुतसाही पानी होता है परन्तु उसका बोझ भान नहीं होता और दूसरे शरीरके अंगोंके अन्दर भी वायु भरी हुई रहती है वही बाहरके वायुका बोझ सहारे रहती है यह बात्तो अभी अच्छे प्रकार तुम नहीं समझते परन्तु जबतुम वायुविद्या पढ़ोगे तब उसको यथार्थ जानलोगे॥

ज्ञानचन्द-महाराज! वायुचलनेका क्याकारणहै

विद्याधर—हे ज्ञानचन्द! पृथ्वी पर प्रथक् २ स्थानोंमें पृथक् २ कारणों से पवन चलती रहती

है परन्तु मैं तुमसे एक साधारण कारण वर्णन करता हूं कि जिस स्थान में सूर्य्य की किरणें अथवा भमिकी तपित अथवा किसी और कारण से वायु उष्णा होकर हलकी होजाती है तोवह वायुहलकी होने के कारण वहां से ऊपर चढ़ कर इधर उधर को फैलने लगती है और वहां उसकी जगह पर इधर उधरकी वायु जो भारी होतीहै आने लगती है जैसे किसी बर्तनमें तेल और पानीको मिलाकर कुछ देर तक न छेड़ें तो तेल हलकेपन से ऊपर चढ़ कर फैल जाता है और पानी भारीपन से उसकी जगह तले आजाता है इसी प्रकार उष्णता और शीतलताके कारण वायुके हलके और भारी होने से पवन चलती रहती है और जो कभी उष्णता अथवा शीतलता के कारण कुछ वायु एक स्थानसे दूसरे स्थानमें अचानक बहुत बलके साथ बड़े वेगसे आती है तो आँधी होजाती है और जो कदाचित् इसी प्रकार कई विरुद्ध दिशाओं से वायु बल के साथ आतीहै तो बवूला बन जाता है—

ज्ञानचन्द—महाराज! हलकी वायु आपसेआप ऊपर क्यों चढ़ जातीहै—

विद्याधर—हे ज्ञानचन्द! पृथ्वीकी आकर्षणशक्ति का यह धर्म्म है कि जो वस्तु जितनी भारी होती है उसको उतनेही बलसे अपनी ओर खींचती है इस लिये जो वस्तु बहुत भारी होती है उसको बड़े बलसे और जोथोड़ी भारी अर्थात् हलकी होती

है उसको थोड़े बलसे अपनी ओर खींचती है इस-लिये वायु भारी होने के समय पृथ्वी जितने बलसे उसे अपनी ओर खींचे रहती है उस वायुके हल-के होजाने से उसे उतने बलसे नहीं खींचती इससे पृथ्वी की आकर्षण शक्ति घट जाने से वायु ऊपर चली जाती है और उससे भारी वायु जो इधर उधर होतीहै वह उसकी जगह वहां आजाती है॥

ज्ञानचन्द-हेमहाराज! आकर्षणशक्ति किसेकहतेहैं?

विद्याधर—हे ज्ञानचन्द आकर्षण शक्ति वस्तु में वह होती है कि जिससे वह वस्तु किसी और वस्तुको अपनी ओर खींचतीहै और यह आकर्षण शक्ति दोप्रकारकी होतीहै एकसाधारण औदूसरी असाधारण; साधारण वह है कि जो सब वस्तुओंमें आपसमें एक दूसरेकी खींचने की शक्ति होती है। यह आकर्षण शक्ति बिचार दृष्टि से सब वस्तुओं में पाई जाती है; परन्तु भूलोक में पृथ्वी बड़ी गम्भीर है और पृथ्वी पर की सारी वस्तु पर वायुसे लेकर पर्वत आदि तक पृथ्वीके गोलक के आगे बहुतही छोटी है इस लिये पृथ्वीके आकर्षण शक्तिके आगे और वस्तुओंकी आकर्षण शक्ति बहुधा प्रगट नहीं होती। और पृथ्वीके इसी आकर्षण शक्ति से पृथ्वी गोलक पर सारी ओर सब वस्तु अपनी २ जगह ठहरी रहती है और यही आकर्षण शक्ति तारागण को सूर्य्य के गिर्द चक्राकार पथा में फिराती रहती है। और असाधारण वह है कि जो विशेष

वस्तुमेंकिसीविशेषवस्तुकेही खींचनेकीशक्तिहो जैसे चुम्बुक पत्थर में लोहे के खींचनेकी शक्ति होती है—

ज्ञानचन्द—महाराज! चुम्बुक क्या होता है?

बिद्याधर—हे ज्ञानचन्द! चुम्बक एक जाति का पत्थर होता है कि जिसके निकट लोहा रखते हैं तो वह पत्थर लोहे को अपनी ओर खींच लेता है और उसको अपनेसे ऐसा चिपटा लेताहै कि बड़े बल से वह दोनों छुड़ाये जाते हैं—चुम्बुक के इस आकर्षण गुण को तो लोग बहुत दिनों से जानते हैं परन्तु इसका एक और गुण थोड़े दिनों से जाना गया है कि लोहेकी एक शलाका जिसके शिरपर चुम्बुक लगा हुआ हो किसी वस्तु पर इस प्रकार ठहरावें कि वह शलाका चारों ओर घम सके तो वह शलाका घुमाने से घमकर ठहरती है तो वह शिर: जिस पर चुम्बुक लगा हुआ है सदा उत्तर दिशाको और दूसरा दक्षिण दिशाको ठहरता है—इसी गुणके कारण चुम्बुक से ध्रुवदर्शक अथवा ध्रुव मनसा एक यंत्र बनाया जाता है जो सबलोगों को विशेष करके जहाज चलाने वालों को बड़ा हितकारी है इसी यंत्र के होने से अब महासागर समुद्रके बीचोंबीच जहां चाहते हैं जहाज लेजाते हैं और दिशा नहीं भूलते इस यंत्रके बनने से पहिले जहाज चलानेवाले जहाजको समुद्रके तीर परही रक्खा करते थे जहाज को बीचमें लेजानेकी सामर्थ्य नहीं होती थी॥ इति

अष्टम अध्याय ॥

गणित विद्या ॥

गणित ज्योतिष शास्त्रकी एक शाखा है और उसमें अंकोंसे गणित होतीहै उन अंकोंके दश रूप नियुक्त हैं वे दश रूप नाम सहित नीचे लिखे हैं ॥

एक दो तीन चार पांच छै सात आठ नौ शून्य

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

शून्य कुछ मोल नहीं रखता है परन्तु और अंकों से दाहिने ओर मिल कर उनका मोल दश गुणा बढ़ा देता है जैसे १ जब इस पर बिन्दी लगाई तो दश होगये अर्थात् एक को दश करदिया ॥

अंकों का मोल एकतो उन्ही पर नियुक्त है अर्थात् संख्या पर नियुक्त है और दूसरा स्थानों पर जो कोई अंक अकेला हो अर्थात् उसके पहले और कोई अंक न हो तो उसका मोल सांख्यिक होगा ॥

उदाहरण ॥

जैसे ८, यहां आठ से आठ संख्या समझी जायगी अथवा ८ रुपया अथवा यह किसी और वस्तुका प्रमाण है; और जो उसके पहले कोई और अंक हो तो उसका मोल एकसे दश गुणा अधिक हो जावेगा जैसे ८५ इस स्थानमें आठ ८ दूसरे स्थानमें आया है तो वह आठ के जगह अस्सी का स्थान होकर अस्सी पढ़ा जायगा और आठ पांच संयुक्त

लिखे जाने से पचासी (८५) पढ़ा जायगा और जो उसके पहले दो अंक और होंगे तो उसका मोल सौ गुना अधिक होजायगा और इसी प्रकार जो तीन होवेंगे तो हज़ार और जो चार होंगे तो दश हज़ार अधिक होगा—प्रयोजन यह है कि अंकका मोलअपने पहलेके स्थानसे दशगुना बढ़ता जावेगा॥

एक से लेकर सौतक गिनती लिखी जाती है॥

संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम
१	एक	१३	तेरह	२५	पच्चीस	३७	सैंतीस
२	दो	१४	चौदह	२६	छब्बिस	३८	अड़तीस
३	तीन	१५	पंद्रह	२७	सत्ताईस	३९	उन्तालीस
४	चार	१६	सोलह	२८	अट्ठाईस	४०	चालीस
५	पांच	१७	सत्रह	२९	उनतीस	४१	इकतालीस
६	छै	१८	अठारह	३०	तीस	४२	बयालीस
७	सात	१९	उन्नीस	३१	इकतीस	४३	तेतालीस
८	आठ	२०	बीस	३२	बत्तीस	४	चवालीस
९	नौ	२१	इक्कीस	३३	तेंतीस	४५	पैंतालीस
१०	दश	२२	बाईस	३५	चौंतीस	४६	छियालीस
११	ग्यारह	२३	तेईस	३५	पैंतीस	४७	सैंतालीस
१२	बारह	२४	चौबीस	३६	छत्तीस	४८	अड़तालीस

संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम
४९	उनचास	६२	बासठ	७५	पछत्तर	८८	अट्ठासी
५०	पचास	६३	चेसठ	७६	छत्तर	८९	नवासी
५१	इक्कावन	६४	चौंसठ	७७	सतत्तर	९०	नब्बे
५२	बावन	६५	पैंसठ	७८	अठतर	९१	इक्कानवे
५३	चेपन	६६	छ्यासठ	७९	उन्नासी	९२	बानवे
५४	चव्वन	६७	सड़सठ	८०	अस्सी	९३	तिरानवे
५५	पचपन	६८	अड़सठ	८१	इक्यासी	९४	चौरानवे
५६	छप्पन	६९	उनहत्तर	८२	बयासी	९५	पचानवे
५७	सत्तावन	७०	सत्तर	८३	तिरासी	९६	छयानवे
५८	अठावन	७१	इकहत्तर	८४	चौरासी	९७	सत्तानवे
५९	उनसठ	७२	बहत्तर	८५	पचासी	९८	अठानवे
६०	साठ	७३	तिहत्तर	८६	छ्यासी	९९	निन्नानवे
६१	इकसठ	७४	चौहत्तर	८७	सत्तासी	१००	सौ

गणकों ने गणित में संख्याओं के नाम उन्नीस स्थान तक नियुक्त कर रक्खे हैं और प्रत्येक स्थान अपने पहले स्थानकी अपेक्षा से दश गुण होता है और स्थानों की गणित दाहिनी ओर से प्रारम्भ होती है और जब गणित से स्थानों के नाम नियुक्त होजाते हैं तो बाईं ओर से प्रारम्भ करके कोई संख्या लिखी जाती है॥

जैसे ५२८ इस को दाहिनी ओर से गिणा तो ८ को इकाई और २ को दहाई, और पांच को सैकड़ा कहा जब यह स्थान अर्थात् इकाई दहाई सैकड़ा होगये तो अंकका लिखना बाईं ओर से प्रारम्भ किया गया अर्थात् पहिले ५ फिर २ और फिर ८ लिखा ॥

स्थानों के नाम और स्वरूप ॥

१	एकाई	१																
२	दहाई	१	०															
३	सैकड़ा	१	०	०														
४	हजार	१	०	०	०													
५	दशहजार	१	०	०	०	०												
६	लाख	१	०	०	०	०	०											
७	दशलाख	१	०	०	०	०	०	०										
८	करोड़	१	०	०	०	०	०	०	०									
९	दशकरोड़	१	०	०	०	०	०	०	०	०								
१०	अरब	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
११	दशअरब	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०						
१२	खरब	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
१३	दश खरब	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०				
१४	नील	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			
१५	दश नील	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
१६	पदम	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१७	दशपदम	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१८	संख	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
																		दश संख

एक दहाई में दश इकाई होती हैं ॥

एक सैकड़े में दश दहाई वा सौ इकाई होती हैं ॥

एक हज़ार में दश सैकड़े वा सौ दहाई वा हज़ार इकाई होती हैं ॥

दश हज़ार में दश हज़ार वा सौ सैकड़े वा हज़ार दहाई वा दशहज़ार इकाई होती हैं ॥

एक लाखमें दश हज़ार दश वा हज़ार सौ या सैकड़े हज़ार या दहाई दशहज़ार या इकाई लाख होती हैं ॥

निम्न लिखित संख्याओं को अंकों में लिखो ॥

दो—पांच—आठ—दश—बारह—पंद्रह—पच्चीस बीस—अट्ठाईस—उन्तालीस—चौहत्तर—नवासी उनचास—चालीस—सत्तानवे—उन्नासी—अड़सठ चौंतीस—उनसठ—चौव्वन—उनहत्तर—पचासी—

निम्नलिखित अंकोंको अक्षरोंमें लिखो ॥

१४—१९—२१—२५—८—१६—३४—४१—८१—५६—६५—७१—९४—९९—१०००—३२—७८—३९-४२—७७—११ ॥

अंकों के लिखने का प्रकार ॥

जिस संख्या को लिखना हो उसको इस

प्रकार लिखो जो सबसे बड़ी संख्या हो वहां तक इकाई दहाई करके बिन्दी लगाओ और फिर जो २ अंक बोला जाय उसको उसके स्थान पर लिखते जाओ और ध्यान रक्खो कि जो अंक जिस स्थान पर लिखा जायगा वह अंक उस स्थान के नामसे पढ़ा जावेगा। जैसे इकाई के स्थान पर ३ का अंक हो तो तीन पढ़े जायेंगे और जो ३ को दहाई के स्थान पर लिखें तो तीन दहाई अर्थात् तीस ३० पढ़े जांयगे जो फिर ३ को सैकड़े के स्थान पर लिखें तो तीनसौ समझने चाहिये इसीप्रकार हजार, लाख, आदि इसी प्रकार चार पांच आदि जिस स्थान पर होंगे इकाई के स्थान पर चार और पांच और दहाई के स्थान पर चालीस और पचास सैकड़े के स्थान पर चारसौ और पांचसौ हजारके स्थान पर चार हजार वा पांच हजार आदि पढ़े जांयगे॥

जो पच्चीस हजार लिखना होय तो पहले इकाई दहाई करके दशहजारतक बिंदी लगालो तो यह आकृति हुई ००००० । समझना चाहिये कि पच्चीस में दो दश हजार और पांच हजार हैं; दोको दशहजारके स्थानपर और पांचको हजार के स्थान पर लिखा और इकाई और दहाई और सैकड़ेके स्थानपर अंक नहीं बोला वज्रशून्य रहा उनकी जगह बिंदी लगादी तो २५००० हुवे॥

प्रश्न ॥

सात करोड़ चौबीस लाख पंद्रह हज़ार तीन सौ छप्पन लिखो। इसमें पहले सोचना चाहिये कि सबसे बड़ा स्थान करोड़ है; करोड़ के स्थान तक इकाई, दहाई, आदि करके बिंदी लगाकर (.....)सात जो करोड़ हैं उनको करोड़ के स्थान पर लिखा और चौबीस लाखमें दो दशलाख और चार लाखहैं इसलिये दो को दश लाख की जगह पर और चार को लाख की जगह पर लिखा और पन्द्रह हज़ार में एक दशहज़ार और पांच हज़ार हैं इसलिये इस एक को दशहज़ार के स्थान और पांचको हज़ार के स्थान पर लिखा और तीन को जो सैकड़े हैं सैकड़े की जगह और ५६ में पांच दहाई और छः इकाई हैं इस कारण पांचको दहाई की जगह और छः को इकाई की जगह लिखा तो यह आकृति हुई १२४१५३५६॥

जो किसी स्थान का अंक न बताया जावे जैसे इकाई—दहाई—सैकड़ा आदि तो उसकी जगह बिंदी लगानी चाहिये

प्रश्न नव्वेकरोड़, छः लाख, आठहज़ार, पांच लिखो ऊपर के लिखित अनुसार नव्वे करोड़ के स्थान तक बिन्दी लगाई ९०.....॥

नब्बे करोड़ को देखा कि इसमें दश करोड़ के हैं तो जाना गया कि नौ दहाई करोड़ की हैं इसकारण नौ को दश करोड़ कीजगह पर और करोड़ के स्थानका अंक कोई नहीं उसकीजगह बिंदी लगा दो—छः लाखमें दहाई लाख कीकोई नहीं उसकी जगह बिन्दी लगाकर छः को लाखके स्थान पर लिखा इसी प्रकार आठ हज़ारमें दश हज़ार की जगह बिंदी लगाकर आठको हज़ार के स्थानपर लिखा जो प्रश्नमें सैकड़ा और दहाई नहींहै उनकी जगह बिन्दी लगाकर पांच कोजो इकाई है इकाई के स्थान पर लिखा तो यह आकृति हुई ९००६०८००५ ॥

दूसरा प्रकार ॥

जिस बड़े अंकको लिखना हो उसके सबसे बड़े स्थान की संख्या को अंको में लिखो और ध्यान रक्खो कि उसके नीचे यथा स्थान छोटे स्थान को लिखो इनमें सैकड़े के भिन्न प्रत्येक स्थान में दो अंक होंगे—किसी स्थान में इकाई दहाई आदि नहीं तो उसकी जगह बिन्दी रक्खो जैसा कि पहले कह आये हैं ॥

प्रश्न—चारसौ अठत्तर—नौसौ पंचानवे—तीन हज़ार इकसठ—सातलाख पांचहजार, नौ-अस्सी लाख सोलह हजार छः सौ तीन—तीन करोड़ दो

लाख पांचसौ बारह—सैंतालीस करोड़ बासठ हज़ार एकसौ; एकसौ बत्तीस—चालीस हज़ार सत्ताईस—चौरासी—सातसौ नब्बे—इनको अंकों में लिखो ॥

दस करोड़	करोड़	दस लाख	लाख	दस हज़ार	हज़ार	सैकड़ा	दहाई	इकाई	
						४	८	८	चारसौ अठत्तर
						९	९	५	नौसौ पंचानबे
					३	०	६	१	तीन हज़ार इकसठ
			७	०	५	०	०	९	सात लाख पांच हज़ार नौ
		८	०	१	६	६	०	३	अस्सी लाख सोलह हज़ार छःसौ तीन
	३	०	२	०	०	५	१	२	तीन करोड़ दोलाख पांचसौ बारह
४	७	०	०	६	२	१	०	०	सैंतालीस करोड़ बासठ हज़ार एकसौ
						१	३	२	एकसौ बत्तीस
				४	०	०	२	७	चालीस हज़ार सत्ताईस
							८	४	चौरासी
						७	९	०	सातसौ नब्बे

प्रश्न ॥

पांच लाख चौदह हज़ार चौदह सौ चौदह लिखौ? ... ... उत्तर—५१५४१४॥

जो चौदहसौ में एकहज़ार और चार सैकड़े हैं इस कारण एक हज़ार को चौदह हजार में मिलाकर पंद्रह हजार लिखा तो उत्तर पांचलाख पंद्रह हजार चारसौ चौदह हुआ॥

अंको के पढ़ने की रीति ॥

जिस संख्याको पढ़नाहो उसके दाहिने ओर से इकाई, दहाई, आदि स्थानों को यथा क्रम पढ़ कर बायें अंकसे पढ़ना आरंभ करो जब तक अंतके अंक तक न पहुंचो। जो अंकों के स्थान सम अर्थात् दो वा चार वा छः वा आठ, वा दश, वा बारह आदि अंकके हों तो संख्या के मतसे बायें अंकको स्थान समेत पढ़ो; फिर दो २ अंकों को मिला कर स्थान सहित पढ़ो जबतक सैकड़े के स्थानमें पहुंचो फिर सैकड़े के स्थान को अकेला पढ़ कर शेष अंकों को मिला कर पढ़ो॥ परन्तु जो अंकों के स्थान संख्या में तीन वा पांच वा सात वा नौ वा ग्यारह आदि अर्थात् बेजोड़ हों तो बाईं ओर से दो २ अंकों को मिला कर स्थान समेत पढ़ो और जब सैकड़े के स्थान पर पहुंचो तो पहले प्रकार उसे अकेला पढ़कर अवशिष्ट दो अंकोंको पढ़ो॥

नीचे लिखे अंकोंको पढ़ो ॥

५—१४—३७—८०—७६४—३०४१३—९०५०१२
२००३०००४०—७००१५०१००६—१६७९५२३४
१८२४३२०——४८३०१९७०५——९५४०५३८——
३४८१९०३७५—

पांच	५	४	७	०	४	३	२	०	३	४	४	२
चौदह		९	३	५	३	९	९	४	०	०	२	०
सैंतीस												
अस्सी												
सात सौ चौंसठ					७	४	०	०	०		२	०
तीस हज़ार चारसौ तेरह						४	०	५	५		५	०
नौ लाख़ पांच हज़ार बारह							३	०	७		७	०
बीस करोड़ तीन लाख़ चालीस								०	३	०	०	३
सात अरब पंद्रह लाख़ एक हज़ार छ									५	०	५	०
एक करोड़ सड़सठ लाख़ पंचानवे हज़ार दो सौ चौबीस											७	०
सात करोड़ तीन लाख़ दो												

नम्बर १

दोसे दश तक के पहाड़े ॥

१	२	दो एकं दो	३	तीन एकं तीन	४	चार एकम् चार	५	६	७	८	९	१०
२	४	दो दूना चार	६	तीन दूना छै	८	चार दूना आठ	१०	१२	१४	१६	१८	२०
३	६	तीन दूना छै	९	तीन तियां नौ	१२	चार तियां बारह	१५	१८	२१	२४	२७	३०
४	८	चार दूना आठ	१२	चार तियां बारह	१६	चार चौके सोलह	२०	२४	२८	३२	३६	४०
५	१०	पांच दूना दश	१५	पांच तियां पंद्रह	२०	चार पंजे बीस	२५	३०	३५	४०	४५	५०
६	१२	छै दूना बारह	१८	छै तियां अठारह	२४	चार छक्के चौबीस	३०	३६	४२	४८	५४	६०
७	१४	सात दूना चौदह	२१	सात तियां इक्कीस	२८	चार सत्ते अट्ठाईस	३५	४२	४९	५६	६३	७०
८	१६	दो अठे सोलह	२४	आठ तियां चौबीस	३२	चार आठे बत्तीस	४०	४८	५६	६४	७२	८०
९	१८	नौ दुना अठारह	२७	नौ तियां सत्ताईस	३६	चार नाम छत्तीस	४५	५४	६३	७२	८१	९०
१०	२०	दश दूना बीस	३०	दश तियां तीस	४०	चार दाहें चालीस	५०	६०	७०	८०	९०	१००

नम्बर २

ग्यारह से बीस तक के पहाड़े ॥

११	ग्यारहएकम ग्यारह	१२	बारह एकम् बारह	१३	तेरह एकम् तेरह	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२२	ग्यारहदूना बाईस	२४	बारह दूना चौबीस	२६	तेरह दूना छब्बीस	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
३३	ग्यारहतीया तेतीस	३६	बारह तीया छतीस	३९	तेरह तीयउनतालीस	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०
४४	ग्यारह चौक चवालीस	४८	बारहचौक अठतालीस	५२	तेरह चौक बावन	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०
५५	ग्यारहपंचे पचपन	६०	बारह पंजे साठ	६५	तेरह पंजे पैसठ	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००
६६	ग्यारह छीक छयासठ	७२	बारह छीव बहत्तर	७८	तेरह छीक अठत्तर	८४	९०	९६	१०२	१०८	११४	१२०
७७	ग्यारह सात सतत्तर	८४	बारह सत्ते चौरासी	९१	तेरह सत्ते इक्यानवे	९८	१०५	११२	११९	१२६	१३३	१४०
८८	ग्यारह अट्ठे अट्ठासी	९६	बारह अट्ठे छानवें	१०४	तेरह अट्ठे एकसौचार	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०
९९	ग्यारहनाम निन्याणवें	१०८	बारह नामएकसौआठ	११६	तेरह नामएकसौसत्तर	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०
११०	ग्यारहदाहे एकसौदश	१२०	बारादहामएकसौबीस	१३०	तेरह दहमएकसौतीस	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००

जोकिसीसंख्याका पौना निकालना हो तोसारीसंख्यामेसे उसका चौथाअंश निकालदो जैसे ३९ पौनानिकालतेहैं तोउसकाआधठत्तीसहैऔरउन्नीसकाआधाहै॥यहअठतीसकाचौथाभागहुवाइसको३९मेंसेघटायातोसाठेअट्ठाईसरहे

नम्बर ३

पौना

।॥	१	॥।	एक पौना पौना	११	८।	ग्यारह पौना सवा आठ
॥।	२	१॥	दो पौना डेढ़	१२	९	बारह पौना नौ
॥।	३	२।	तीन पौना सवा दो	१३	९॥।	तेरह पौना पौने दश
॥।	४	३	चार पौना तीन	१४	१०॥	चौदह पौना साढे दश
॥।	५	३॥।	पांच पौना पौने चार	१५	११।	पंद्रह पौने सवा ग्यारह
॥।	६	४॥	छे पौना साढ़े चार	१६	१२	सोलह पौने बारा
॥।	७	५।	सात पौना सवा पांच	१७	१२॥	सतरह पौने पौने तेरह
॥।	८	६	आठ पौना छे	१८	१३॥	अठारह पौना साठे तेरह
॥।	९	६॥।	नौ पौना पौने सात	१९	१४।	उन्नीस पौना सवा चौदह
॥।	१०	७॥	दश पौना साढे सात	२०	१५	बीस पौना पंद्रह

जो किसी बड़ी संख्या का सवाया निकालना हो तो उसका चौथा अंश लेकर उसमें जोड़ दें जैसे तीस ३० का चौथाई ७॥ उस में जोड़ा तो ३७॥ हुवा ॥

नम्बर ४

सवाया

१	१।	१।	एक सवाया सवा	११	१३॥।	ग्यारह सवाया पौने चौदा
२	१।	२॥	दो सवाया ढाई	१२	१५	बारह सवाया पंद्रह
३	१।	३॥।	तीन सवाया पौने चार	१३	१६।	तेरह सवाया सवा सोलह
४	१।	५	चार सवाया पांच	१४	१७॥	चौदह सवाया साढे सतरह
५	१।	६।	पांच सवाया सवा छै	१५	१८॥।	पंद्रह सवाया पौने उन्नीस
६	१।	७॥	छै सवाया साढे सात	१६	०	सोलह सवाया बीस
७	१।	८॥	सात सवाया पौने नौ	१७	२१।	सतरह सवाया सवा इकीस
८	१।	१०	आठ सवाया दश	१८	२२॥	अठारह सवाया साढे बाईस
९	१।	११।	नौ सवाया सवा ग्यारह	१९	२३॥।	उन्नीस सवाया पौने चौबीस
१०	१।	१२॥	दश सवाया साढे बारह	२०	२५	बीस सवाया पंचीस

जोकिसी संख्याका डेवढा निकालना हो तो उसका आधा उसमें जोड़देा जैसे तेंतीस३३ डेवढा करनाहो तो तो ३३ का आधा साढे सोलह१६॥ है उनतेतीसमेंजोडे तो हुवे ४९। साढेउनचास इसलिये यह्री४९॥उत्तरहुआ

नम्बर ५

डैवढ़ा

१	१॥	१॥	एक डेवढ़ाडेवढ़ा	११	१॥	१६॥	ग्यारह डेवढा साढे सोलह
२	१॥	३	दा डेवढ़ा तीन	१२	१॥	१८	बारह डेवढा अठारह
३	१॥	४॥	तीन डेवढा साढ़े चार	१३	१॥	१९॥	तेरह डेवढा साढे उन्नीस
४	१॥	६	चार डेवढ़ा छै	१४	१॥	२१	चौदह डेवढा इक्कीस
५	१॥	७॥	पांच डेवढा साढ़े सात	१५	१॥	२२॥	पंद्रह डेवढा साढे बाइस
६	१॥	९	छै डेवढा नौ	१६	१॥	२४	सोलह डेवढा चौबीस
७	१॥	१०॥	सात डेवढा साढे दस	१७	१॥	२५॥	सतरह डेवढा साढेपच्चीस
८	१॥	१२	आठ डेवढा बारा	१८	१॥	२७	अठार डेवढा सत्ताइस
९	१॥	१३॥	नौ डेवढा साढे तेरह	१९	१॥	२८॥	उन्नीस डेवढा साढे अठाइस
१०	१॥	१५	दस डेवढा पंद्रह	२०	१॥	३०	बीस डेवढा तीस

जो किसी संख्या का ढावां निकालना हो तो उसे दूना करके उसमें आधा और जोड़ दो ॥

नम्बर ६

ढाम

१	२॥	२॥	एक ढावां ढावां	११	२७॥	ग्यारह ढावां साढ सत्ताईस
२	२॥	५	दो ढावां पांच	१२	३०	बारह ढाम तीस
३	२॥	७॥	तीन ढावां साढे सात	१३	३२॥	तेरह ढावां साढे बत्तीस
४	२॥	१०	चार ढावां दश	१४	३५	चौदह ढावां पैंतीस
५	२॥	१२॥	पांच ढावां साढे बारह	१५	३७॥	पंद्रह ढावां साढे सैंतीस
६	२॥	१५	छ ढावां पंद्रह	१६	४०	सोलह ढावां चालीस
७	२॥	१७॥	सात ढावां साढे सतरह	१७	४२॥	सत्तरह ढावां साढे बयालीस
८	२॥	२०	आठ ढावां बीस	१८	४५	अठारह ढाम पैंतालीस
९	२॥	२२॥	नौ ढाम साढे बाईस	१९	४७॥	उन्नीस ढाम साढे सैंतालीस
१०	२॥	२५	दश ढाव पच्चीस	२०	५०	बीस ढाम पंचास

जो किसीसंख्याका उनठाकरना हो तो उसको तीनसे गुणाकरके आधा उसमें जोड़दो जैसे तीसका हुनठा निकालना हो तो तीसतीया ९० उसका तिगुना हुवा और १५ उसका आधा उनदोनों को जोड़ाते। १०५ हुवे यही तीसका उनठा हुवा

नम्बर २

उनठा

१	३॥	३॥	एक उनठा ऊनठा	११	३॥	३८॥	ग्यारह उनठा साढे अठतीस
२	३॥	७	दो उनठा सात	१२	३॥	४२	बारह उनठा बयालीस
३	३॥	१०॥	तीन उनठा साढे दश	१३	३॥	४५॥	तेरह उनठा साढे पनतालीस
४	३॥	१४	चार उनठा चौदह	१४	३॥	४९	चौदह उनठा उनंचास
५	३॥	१७॥	पांच उनठा साढे सतरह	१५	३॥	५२॥	पंद्रह उनठा साढे बावन
६	३॥	२१	छै उनठा इक्कीस	१६	३॥	५६	सोलह उनठा छप्पन
७	३॥	२४॥	सात उनठा साढे चौबीस	१७	३॥	५९॥	सत्तरह उनठा साढे उनसठ
८	३॥	२८	आठ उनठा अठाईस	१८	३॥	६३	अठारह उनठा चेसठ
९	३॥	३१॥	नौ उनठा साढे इकतीस	१९	३॥	६६॥	उन्नीस उनठा साढ़े छियासठ
१०	३॥	३५	दस उनठा पैंतीस	२०	३॥	७०	बीस उनठा सत्तर

नम्बर ८

ढौंचा

१	४॥	४॥	एक ढौंचा ढौंचा
२	४॥	९	दो ढौंचा नौ
३	४॥	१३॥	तीन ढौंचा साढ़े तेरा
४	४॥	१८	चार ढौंचा अठारा
५	४॥	२२॥	पांच ढौंचा साढ़े बाईस
६	४॥	२७	छ ढौंचा सत्ताईस
७	४॥	३१॥	सात ढौंचा साढ़े इकतीस
८	४॥	३६	आठ ढौंचा छत्तीस
९	४॥	४०॥	नौ ढौंचा साढ़ेचालीस
१०	४॥	४५	दश ढौंच पैतालीस
११	४॥	४९॥	ग्यारह ढौंचा साढ़े उनचास
१२	४॥	५४	बारह ढौंचा चव्वन
१३	४॥	५८॥	तेरह ढौंचा साढ़े अट्ठावन
१४	४॥	६३	चौदह ढौंचा तरेसठ
१५	४॥	६७॥	पंद्रा ढौंचा साढ़ेसतसठ
१६	४॥	७२	सोलह ढौंचा बहत्तर
१७	४॥	७६॥	सत्तरह ढौंचा साढ़े छियत्तर
१८	४॥	८१	अठारह ढौंचा इक्कासी
१९	४॥	८५॥	उन्नीस ढौंचा साढ़ पचासी
२०	४॥	९०	बीस ढौंचा नब्बे

नम्बर ६

बिकटपहाड़े

१॥	१॥	२।	ढेवढो ढेवढा सवादो
१॥	२॥	३॥।	ढेवढा ढाया पौनेचार
१॥	३॥	४।	ढेवढा ऊनठा सवा पांच
१॥	४॥	६॥।	ढेवढा ढौंचा पौनेसात
२॥	०॥	६।	ढायें ढांई सवाछै
२॥	३॥	८॥।	ढायां उनठा पौने नौ
२॥	४॥	११।	ढायां ढौंचा सवाग्यारह
३॥	३॥	१२।	उनठो उनठा सवाबारह
३॥	४॥	१५॥।	उनठो ढौंचा पौनसोलह
४॥	४॥	२०।	ढौंचो ढौंचा सवाबीस

प्रश्न जोकि पहाड़ों से निकलते हैं

(१)एकआनेके बारह सेव आते हैं तो सात आने के कितने आवेंगे॥
उत्तर बारहसते चौरासी इसलिये चौरासी आवेंगे॥

(२)पंद्रहरुपये की एकमन खांड़ आती है तो आठमन कितने की आवेगी॥
उत्तर पंद्रहअट्ठे एकसौबीस इसलिये यही १२० उत्तर हुवा॥

(३)पौनआनेके एक दरजन बटन आतेहैं तोतेरह दरजन का क्या मोल हुवा॥

उत्तर—तेरा पौने पौने दश इसलिये पौने दश आने होंगे॥

(४) एक रुपैये की सवासेर मिसरी आती है तो ग्यारह रुपैये की कितनी आवेगी?

उत्तर—ग्यारह सवाया पौने चौदह इसलिये १३॥ सेर आवेगी॥

(५) एक थान मलमल का १९ गज़ का है जो प्रति गज़ डेढ़ आने पर बेचा जाय तो सारा थान कितने को बिकेगा?

उत्तर—उन्नीस डेवढ़ा साढ़े अट्ठाईस इसलिये २८॥आने को बिकेगा॥

(६) साढ़े तीन आने के एक सलेट पत्थर की आतीहै तो बताओ आठ सलेट का क्या मोल होगा?

उत्तर—आठ ऊंठा अट्ठाईस इसलिये २८ आने को आवेंगी॥

(७) साढ़े चार पैसे को एक सुरमेदानी आती है बताओ पांच कितने की आवेंगी?

उत्तर—पांच ढौंचा साढ़े बाईस; इसलिये २२॥ पैसे को॥

(८) एक दीवेसिलाई की डिबिया ढाई पैसे को आती है तो बारह डिबिया का क्या मोल होगा?

उत्तर—बारह ढाम तीस इसलिये ३० पैसेहुये॥

(९) डेढ़ आने की एक सेर मलाई आती है तो डेढ़ सेर का क्या मोल होगा?

उत्तर—डेवढ़ा डेवढ़ा सवा दो इसलिये २। आने ज्ञये ॥

(१०) एक रुपैये का साढ़े तीन सेर गोंद आता है तो ढाई रुपैये का कितने सेर होगा ?

उत्तर—अंठा ढाम पौने नौ; इसलिये ८॥ सेर होगा ॥

(११) साढ़े चार रुपैये को एक गज़ मखमल आती है तो डेढ़ गज़ कितने को आवेगी ?

उत्तर—डेवढ़ा ढौंचा पौने सात इसलिये ६॥ रुपैये ज्ञये॥

(१२) एक रुपैये के अढ़ाई सेर बादाम आते हैं तो साढ़े चार रुपैये के कितने आवेंगे ?

उत्तर—ढावां ढौंचा सवाग्यारह इसलिये ११। सेर बादाम ज्ञये ॥

संकलन अर्थात् जोड़ने के विषय में ॥

दो अथवा अधिक संख्याओं को इकट्ठा करने को संकलन कहतेहैं यथा एक और एक दो; और दो और दो चार। जब हम अंकों को जोड़तेहैं तो हमारे जोड़ करने को संकलन कहते हैं। जो जो संख्या जोड़कर इकट्ठी करनी हो उनको नीचे २ ऐसे प्रकार से लिखो कि इकाई के नीचे इकाई और दहाई के नीचे दहाई और सैकड़े के नीचे सैकड़ा इत्यादि सब अंक अपने अपने श्रेणि के नीचे लिखे जब सब अंक लिख चुके। तो उसके नीचे एक रेखखींचो और फिर उनको इस प्रकार जोड़ दो:—

पहिला उदाहरण ॥

५ और ३ और ४ और १ को इकट्ठा करके जोड़ दो। इसमें सब अंक इकाई के हैं इसी कारण एक दूसरे के नीचे इस प्रकार लिखो। सबसे ऊपर वाले अंक से प्रारंभ करो और उसमें नीचे वाला अंक जोड़ दो तो जब ५ के साथ ३ को जोड़ा तो ८ हुये अब उसको नीचेवाले अंक अर्थात् ४ से जोड़ा तो ८ और ४ , १२ हुये तब उसको नीचे वाले अंक १ से जोड़ा तो १९ हुये इसलिये १९ उत्तर है इसको समष्टि कहते हैं ॥

५
३
४
१
१९

दूसरा उदाहरण ॥

१९२५ पहिले इकाइयों को जोड़ा तो ५ और
२५१४ ४ नौ, और ३ बारह, और ६ अठारह,
४६३ हुये; इनमें १ दहाई और ८ इकाई हैं,
१६ आठ को इकाई के स्थानपर लिख कर
१०९१८ १ दहाई, जो हाथ लगा उसको दहाइयों के साथ जोड़ा तो १ और २ तीन और १ चार और ६ दश और १ ग्यारह हुये; ग्यारह दहाइयों में एक सैकड़ा, और एक दहाई है, एक दहाई को दहाई के स्थान पर लिखकर एक सैकड़े को जो हाथ लगा सैकड़ों के साथ मिलाया तो १ और ९ दश और ५ पन्द्रह और ४ उन्नीस हुये उन्नीस सैकड़ों में ९ सैकड़े और १ हजार है

तो सैकड़ों को सैकड़े के स्थान पर रखकर एक हज़ार जो हाथ लगा उसको हज़ारों में मिलाया तो १ और ७ आठ और २ दश हुये तो १० हज़ार के स्थान पर लिख दिया॥

जितनी संख्या रेखा के नीचे जोड़ करने से हुई अर्थात् दश हज़ार नौसौ अठारह उत्तर है॥

(१)	(२)	(३)
६०५२९	२५२०१	३००००९
१३७८	१००१५	६४००५
६०५	९०८४	८७०२
८३	१७	६५
४		
६८५९९	४४३१७	३७२७८१

(४)	(५)
१	३
१६	२४
३७२	१९७८
४००९	५३६
८०५८६	५२
२७२१	६
८७७०५	२५९९

प्रश्न॥

(१) एक मनुष्य तीनमनुष्य राम लक्ष्मण भरत का रिणी है—राम के दो हज़ार चारसौ पचासी रुपैये और लक्ष्मण के छः सौ उच्चास रुपैये और

भरत के दो सौ दश रुपैये देने हैं तो बताओ उस मनुष्य को सारे कितने रुपैये देनेहैं ... उत्तर ३३४४

(२) एक मनुष्य सम्बत् १८६२ में जन्मा तो बताओ पच्चीस २५ बर्ष का किस सम्बत् में होगा?

उत्तर सम्बत् १८८७ में

(३) एकमनुष्य का उन्नीस बर्ष की अवस्था में बिवाह हुआ और बिवाह के चार बर्ष पीछे उसको लड़का हुआ और लड़के होनेके पीछे २७ बर्ष और जिया तो बताओ कितने बर्ष का होकर मरा? ... ... उत्तर ५० बर्ष

(४) एक पाठशालामें चारश्रेणि लड़कों की हैं पहिली में अठारह-दूसरीमें बारह-और तीसरी में नौ और चौथीमें पांच, तो बताओ पाठशाला में सारे कितने लड़के पढ़ते हैं .... उत्तर ४४

(५) एक बागमें दोसौ बारह पेड़आमके और एकसौ सत्तासी सेव के और उन्नासी सहतत के और अड़तालीस संगतरे के हैं तो बताओ सारे कितने पेड़ उस बाग में हैं ... ... उत्तर ५२६

(६) एक क्षत्रान के तीन पुत्र थे वह एक समय बागमें बेर तोड़नेगये-एकने बहत्तरबेर तोड़े दूसरेने पहिलेसे छः अधिक और तीसरे ने दूसरे से पच्चीश अधिक तो सबने कितने बेर तोड़े? ... उत्तर २५३

व्यवकलन अर्थात् बाकी निकालने के बर्णन में॥

एक जाति के दो अंक मेंसे बड़ी संख्या मेंसे

छोटी सख्याके घटाने को व्यवकलन अर्थात् बाक़ी निकालना कहते हैं घटाने से जो लब्धि होता है वह बाक़ी कहलाता है ॥

प्रक्रिया ॥

छोटे अंक को बड़े अंक के नीचे इस प्रकार से लिखो कि इकाई दहाई आदि अपने २ स्थान के नीचे हों—तब उन के नीचे एक रेखा खींचो ॥

नीचले अंक के इकाई को ऊपर के अंक के इकाई में से घटा कर शेष को आड़ी लकीर के नीचे इकाई के स्थान में लिखो और जो ऊपर वाले अंक की इकाई नीचले अंक की इकाई से छोटी हो तो ऊपर की इकाइयों में एक दहाई मिला कर उस में से नीचे वाली इकाई घटाओ और शेष को इकाई के स्थान में लिख दो और तब नीचेके स्थानकी दहाई में एक दहाई अधिक करके पर्ववत् करते जाओ जहां तक प्रक्रिया पूर्ण होऐसे करने से आड़ी लकीर के नीचे जो लब्धि होगा वही अंक बाक़ी है ॥

उदाहरण ॥

पच्चीस लाख साठ हज़ार तीन सौ सात में से तेइस लाख सत्तर हज़ार छःसौ पांच घटाओ ऊपर की कथन की अनुसार उन्हें यथाक्रम लिख कर क्रिया करो यथा:—

२५९०३०७
२३७०९०५
१८९७०२ } एक लाख नवासी हज़ार सात सौ दो लब्धि ज्ञेय यह बाकी है।

क्रिया

सात में से पांच गये तो शेष रहे २ इसको आड़ी लकीर के नीचे इकाई के स्थान पर लिखा और दहाई के ऊपर और नीचे के स्थान में बिन्दी है इसलिये दहाई के स्थान में बिन्दी रख दी फिर सैकड़े के स्थान में ऊपर ३ और नीचे ९ हैं; प्रत्यक्ष है कि तीन में से छः घट नहीं सक्ते इसलिये तीन में एक हज़ार अर्थात् दश सैकड़े अधिक किये तो १३ सौ ज्ञये तेरह सौ में से छः घटाये तो शेष रहे सात—सात को सैकड़े के स्थानपर लिख दिया—ऊपर के सैकड़े के स्थान में जो एक हज़ार अर्थात् दश सैकड़े बढ़ाये गये थे इसकारण निचले अंक हज़ार में भी बढ़ाना चाहिये जिस से दोनों के व्यवकलित अंक में अंतर न पड़े इस लिये निचले अंक हज़ार के स्थान में एकहज़ार बढ़ाया तो १ ही ज्ञेय ऊपर के हज़ार के स्थान में बिन्दी है बिन्दीमें से एक नहीं घट सक्ता इसलिये दश हज़ार अर्थात् एक दहाई हज़ार को मिलाया तो दश ज्ञये १० में से १ घटाया शेष रहे ९—नौ को आड़ी लकीर के नीचे हज़ार के स्थान में लिख दिया और ऊपर वाले अंक में जो एक दहाई हज़ार की बढ़ाई

गई थी इसलिये दश हज़ारके स्थान में जो सात हैं उस में एक बढ़ाया तो ८ हुये प्रत्यक्ष है कि छः में से आठ नहीं घट सक्ते इस कारण ६ में एक दहाई दश हज़ार, अर्थात् लाख मिलाया तो १६ हुये तो सोलह में से ८ घटाये तो शेष ८ रहे। आठ को दश हज़ार के स्थान पर लिख दिया। एक लाख जो ऊपर के स्थान दश हज़ार में बढ़ाया गया था इस लिये नीचे के स्थान के लाख में जो ३ हैं एक और बढ़ाया तो ४ हुये; पांच में से ४ घटाये तो १ शेष रहा इस को लाख के स्थान पर लिख दिया। दश लाख के स्थान में ऊपर और नीचे दो दो हैं तो दो में से दो गये कुछ शेष न रहा इसी कारण सब व्यवकलित अंक १८९७०२ हुआ॥

व्यवकलन की शुद्धता की परीक्षा॥

इसकी शुद्धता की परीक्षा इस प्रकार से होती है कि निचले अंकों को लब्धि अंकोंके साथ जोड़ कर देखो यह जोड़ ऊपर वाली पंक्ति के समान है वा नहीं जो समान है तो शुद्ध है नहीं तो अशुद्ध है। जैसे इसी ऊपर के उदाहरण में तेईस लाख सत्तर हज़ार छःसौ पांच नीचली पंक्ति है। और एक लाख नवासी हज़ार सात सौ दो लब्धि है

२३७०६०८	जब इन दोनों को जोड़ा तो उत्तर
१८९७०२	पच्चीस लाख साठ हज़ार तीन सौ
२५६०३०७	सात हुआ॥

इसको ऊपर की पंक्ति से मिलाया तो ठीक हुआ इसलिये उत्तर शुद्ध है॥

व्यवकलन के उदाहरण॥

(१) २४५७२ — १९६३५ = ४९३७

(२) ३००५०४ — १३०६९० = १६९८१४

(३) १०००००० — १९३२५३६ = ८०६७४६४

(४) १००००० — ११००० = ८९०००

प्रश्न॥

(१) एक मनुष्य के पास चार हजार तीनसौ पच्चीस रुपैया हैं उसमें उसने एक हजार नौसौ सात रुपैया अपने पुत्रको देदिया तो बताओ कि उसके पास कितना रहा॥

४३२५ यहां चार हजार तीनसौ पच्चीस
१९०७ मेंसे एक हजार नौ सौ सात को
उत्तर २४१८ घटाया तो दो हजार चार सौ अठारह बचे यही उत्तर है॥

(२) एक लाख रुपैये मेंसे कितना रुपैया घटा दें जो बेसठ हजार पांचसौ चौदह शेष रहें॥

१००००० — ६३५१४ = ३६४८६ उत्तर

(३) तीन हजार चारसौ पंचानवे में कितना जोड़दें जो दश हजार होजावें॥ १००००

३४९५

६५०५ उत्तर

(४) एक साहूकार के चार पुत्र थे और उसके पास दोलाख तीन हजार एकसौ पच्चासी रुपैये की पूंजी थी उसने अपने सामने इस प्रकार बांट-दिया कि पहिले को सत्ताइस हजार तीन सौ अठासी—दूसरे को बावन हजार नौ सौ चार—तीसरे को पैतालीस हजार छब्बीस—और चौथे को चेपनहजार आठसौ इक्कहत्तर—तो बताओ कि उसके पास कितना रहा॥

पहिले को २७३८८
दूसरे को ५२९०४
तीसरे को ४५०२६
चौथे को ५३८७१
सब इतने रुपैये दिये १७९१८९
और उसके पास इतना रुपैया था २०३१८५

१७९१८९

तो बाक़ी इतना रहा— उत्तर २३९९६

(५) एक मनुष्य सन् १८४५ ई० में जन्मा था और सन् १८६३ ई० में मरगया तो बताओ कितने वर्ष जिया॥

१८६३
१८४५

१८ उत्तर

गुणाकरने के वर्णन में ॥

किसी संख्याको कईबार संक्षेप रीतिसे जोड़ने को गुणा कहतेहैं ॥ जैसे छः को पांचमें गुणा चाहते हैं इनका गुणनफल वही होगा जो छः को पांच वारजोड़ने से लब्धि होता है अर्थात् तीस ॥

यथा:—

६
६
६
६
६

३०

६ और छः को पांचमें गुणा ५ करनेसे छःपंचेतीस होंतेहैं।

जिस संख्या को कईबार जोड़ा चाहते हैं उसे गुण्य और जितनेबार जोड़ते हैं उसे गुणक कहते हैं और जो कुछ उनको परस्पर गुणनेसे लब्धि होताहै उसे गुणनफल बोलते हैं पिछले उदाहरण में छ गुण्य और ५ गुणक और ३० गुणनफल हैं ॥

गुणाकरने की प्रक्रिया ॥

गुण्य और गुणकके अंकोंको इसरीतिसे लिखो कि इकाई के नीचे इकाई और दहाई के नीचे दहाई आदि हों और गुणक के नीचे एक आड़ी लकीर खींचदो। गुणक की इकाईसे गुण्यके प्रत्येक अंकको यथाक्रम गुन्ना प्रारम्भ करो और गुणन-

फल में जितनी इकाइयां आवें उनको इकाइयों के स्थानपर लिखकर जितनी दहाइयां गुणनफल से हाथ लगीहों उनको दहाइयोंके गुणनफलमें जोड़ कर पिछली क्रियाके अनुसार करते जाओ जब गुण्यके अंततक पहुंचो तब गुणक के दहाई के अंकको गुण्यके प्रत्येक स्थानमें पिछली रीतिके अनुसार गुणा करो परन्तु दहाइयोंका गुणनफल दहाईके स्थानसे लिखते जाओ इसीप्रकार गुणकके सब अंकों को गुण्य के प्रत्येक अंकोंसे गुणाकरते जाओ फिर जब गुणक के सब अंकों से गुण्यको गुणा करचुको तब सब गुणन फलों को संकलनकी रीतिसे जोड़लो वही उत्तरहोगा ॥

उदाहरण ॥

५३४८ को २७५ से गुणाकरो—

	५३४८
	२७५
	२६७४०
गुण्य और गुणक को स्थान के क्रमसे रख कर गुणा—	३७४३६
	१०६८६
	१४७०७००

गुणाकरने की रीति ॥

पिछले उदाहरणमें ५३४८ को गुणक के पहिले अंक पांचमें गुना है। पहिले पांच ५ को ८ में गुणा

तो ४० ऊये जोकि चालीस में चार दहाई हैं इस-
लिये इकाईके स्थानपर बिंदी रखकर चार दहाई
को लगे मानकर ५ में चार ४ को गुणा तो पांच
चौका बीस दहाइयां ऊईं और चार जो हाथलगी
थीं उनको उसमें जोड़ा तो चौबीसऊये चारदहा-
इयोंको दहाई के स्थानपर रखकर दो सैकड़े हाथ
लगे मान ५ को ३ में गुणा तो पांच तिये पन्द्रह
ऊये दो को उसमें जोड़ा तो सत्रह ऊये १ सैकड़ेके
स्थानपर लिखकर १ को हाथलगा मान ५ में ५ को
गुणा तो पांचपंजे २५ ऊये उनमें १ जो हाथलगा
था जोड़ा तो २६ हजारऊये तो उनको हजारके
स्थानमें लिखा। फिर जब ५३४८ को गुणक के दूसरे
स्थानके अंकमें जो १ रहैं गुणा कर तेहैं तो यथार्थ
में उन्हें १० से गुणते हैं अर्थात् १ दहाई से जब १
को ८ में गुणा तो १ अठे ५६ ऊये अर्थात् ५६
दहाई ५ सैकड़े और ६ दहाई ऊई ६ को
इकाईका स्थान छोड़कर दहाईके स्थानपर लिख
कर पांचको हाथलगा मान १ को चारमें गुणा तो
सात चौका २८ ऊये इसमें ५ हाथलगे ऊये जोड़े
तो तेंतीस ३३ ऊये ३ तो सैकड़े के स्थानमें रख
कर ३ को हाथ लगामान १ को तीन ३ में गुणा तो
इक्कीस २१ ऊये इसमें तीन जोड़े तो २४ हजार
ऊये २४ का ४ लिखकर दोको हाथलगामान १ को
५ में गुणा तो ३५ ऊये दोहाथलगे ऊये जोड़े तो ३१
ऊये ३१ लिखदिये फिर ५३४८ को गुणकके तीसरे

अंक २ जो सैकड़े हैं गुन्ना प्रारम्भ किया २ को ८ से गुणा तो १६ सैकड़े हुये ६ को सैकड़े के स्थानपर इकाई दहाई के स्थान छोड़कर लिख-दिया और एक हज़ार को हाथलगा मान २ को चारसे गुणा तो ८ हुये इसमें १ जोड़ा नौ हुये ९ को हज़ार के स्थानमें लिखदिया हाथकुछ नहींलगा २ को तीनसे गुणा तो ६ हुये उसको दसहज़ार के स्थान पर लिख दिया फिर २ को ५ से गुणा तो १० हुये १० लिखदिये फिर इन सब गुणनफलों के नीचे आड़ी लकीर खींचकर संकलन की रीतिसे सबको जोड़ा तो चौदह लाख सत्तर हज़ार सात सौ हुये १४७०७००. यही गुणनफल है जो गुण्य वा गुणक वा दोनों की शेष में शून्य हो तो गुणने के समय शून्योंको छोड़कर गुणे और उसकेपीछे जि-तनेशून्य गुणक वा गुण्यके जोड़हों उनको जोड़कर गुणनफलके आगे उतनेही शून्य लिखदो जैसे ३८४ को २४० में और ३२० को १४०० में गुणना चा-हतेहैं। इनको यथाक्रम लिखकर पूर्व क्रियाकी रीति से गुणा॥

(१)	३८४	(२)	३२०
	२४०		१४००
	१५३६		१२८
	७६८		३२
	९२१६०		४४८०००

पहिले उदाहरण में एक शून्य गुण कमेंहै इसलिये ३८४ को २४ में गुणा करके एक शून्य गुणन फल के आगे लिखदिया और दूसरे में गुण्य औरगुणक में तीन शून्य थे उनको छोड़कर ३२ को १४ में गुणा करके गुणनफलके आगे तीन शून्य लिखदिये॥

स्मरण रक्खो कि जो एक अथवा कोई और अंक शून्यसे गुणाजावे वा शून्य किसी अंक से गुणा जावे तो शून्यही रहता है; इसलिये जो गुणक में शून्य हो तो गुणनकी रीति अनुसार गुणक को गुण्य के अंकोंमें गुणते जाओ और जब शून्य से गुणने का अवसर आवे तब शून्य से ना गुणो परञ्च गुणक में जो शून्यसे आगे अंक हो उससे गुणना प्रारम्भ करके जितने शून्य छोड़ दियेगयेहैं उनसे एक अधिक स्थान छोड़कर क्रिया करते रहो जैसे ६०४ को २०८ में गुणना चाहते हैं। यहां पहिले आठ को जो गुणक का अंक पहिला है गुण्य में पूर्ववत् गुणकर गुणनफलको लिखदिया गुणकके दूसरेस्थानमें शून्यहैउसको छोड़कर २ से जो गुणकका तीसरास्थान अर्थात् सैकड़ा गुणनाप्रारम्भ करके पहिले कहे अनुसार दो स्थान छोड़कर गुणनफल लिखतेगये फिर सबको जोड़ा तो १२५६३२ हुये और यही उत्तर है॥

	६०४
	२०८
	४८३२
	१२०८
	१२५६३२

उदाहरण ॥

(१) ३५७६९
२७
२५०३८३
७१५३८
८६५७६३ (उ०)

(२) ४९००३
५६८
३९२०२४
२९४०१८
२४५०१५
२७८३३७०४ (उ०)

(३) ३७६००
९५०००
१८८०
३३८४
३५७२००००० (उ०)

(४) १४३०८
५००९
१२८७७२
७१५४०
७१६६८७७२ (उ०)

गुणन के प्रश्न ॥

(१) एक पाठशाला में २४ लड़कियां पढ़ती हैं एक मनुष्य ने आठ २ अखरोट सब लड़कियों को बांटदिये तो बताओ कुल अखरोट कितने बांटे॥

जो एक लड़की को आठ अखरोट दिये तो आठको २४ में गुणाकिया तो १९२ भये॥ २४
८
१९२ उ०

(२) एक मनुष्य दो सौ पचास रुपैया महीने भरमें कमाता है और पचासी रुपै महीने का

व्यय रखता है तो बताओ साल भरमें उसको कितना रुपैया बचेगा ?

पहिले इस प्रश्न में जाना कि एक महीने में कितना रुपैया बचता है तो दोसौ पचास २५० में से पचासी घटाये तो एक सौ पैंसठ बचे; ८५
और साल के बारह महीने होते हैं इस १६५
लिये साल भरमें १६५ से बारह गुने बचेंगे १२
तो १६५ को १२ में गुणाते १९८० उत्तर ३३०
हुआ ॥ १६५
उत्तर १९८०

(३) जो एक रुपैये के दोसौ आम आते हों तो १३८ रुपैये के कितने आवेंगे ? २००
१३८
दोसौ को एकसौ अड़तीस से २७६०० उत्तर
गुणा तो २७६०० हुये यही उत्तर है ॥

(४) जो सोनेका भाव सत्तरह रुपये तोला हो तो अड़तालीस ४८ तोला सोना कितनेको आवेगा ?

४८
१७
३३६
४८
८१६ उत्तर

(५) जो एक थान सूसी का २९ गज लम्बा हो तो १०४ थानमें कितने गज कपड़ा होगा ?
उत्तर ३०१६ गज कपड़ा होगा ॥

१०४
२९
९३६
२०८
३०१६ उत्तर

भाग देना ॥

भाग से यह जाना जाता है कि बड़ी संख्या में से छोटी संख्या कै बार घट सक्ती है ॥

जिसमें भाग देते हैं उसे भाज्य और जिसका भाग देते हैं उसे भाजक और भाग क्रिया से जो लब्धि होता है अर्थात् जितनी बार बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घट सक्ती है वह भागमें लब्धि कहाता है और भाग देने से जो कुछ बच रहे अर्थात् भाज्य में से भाजक न घट सके तो भाज्यका जो कुछ भाग बचता है वह भाग शेष कहाता है ॥

भागकी प्रक्रिया ॥

भाज्य और भाजक को नीचे लिखे हुये प्रकार से देखो।

भाजक) भाज्य (लब्धि

जितने स्थान भाजक में हैं भाज्यके बाईं ओरसे

उतनेही स्थान लेकर देखो इसमें भाजक कै बार घट सक्ताहै जो एक बार भी न घट सके तो भाज्य का एक स्थान और मिला कर भाजकको संख्या को देखो अब वह कै बार घट सक्ताहै। और यह देखनाचाहिये कि कै बार घट सक्ताहै यह रीति है कि भाजक को एकसे लेकर नौ तक कौन से अङ्क में गुणा करने से गुणनफल भाज्य के अङ्कों के सम अथवा निकट होता है वह अङ्कलब्धि की जगेह लिखो और इसके पीछे लब्धिको भाजक से गुण कर भाज्य के उस संख्या के नीचे से जिसमेंसे भाजक कोघटाकर देखा था यथा स्थान पर लिखो फिर एक आड़ी लकीर खींच कर बाक़ी निकालो फिर भाज्य के एक दाहिनी ओर की संख्या वा अंकोंको बाकीके आगे लिख कर नया भाज्य समझो और उसमें पूर्ववत् क्रिया करो अर्थात् भाजकसे भाग दो और जो कुछ लब्धिहो शून्य वा कोई अङ्क मिले उसे लब्धिके दाहिनी ओर लिखदो। और फिर पहिली रीति के अनुसार उस लब्धि को भाजक में गुण कर नये भाज्यके नीचे यथा क्रम लिखो और तब आड़ी लकीर खींच कर बाक़ी निकालो उस के पीछे और एक अङ्क को बाक़ी के आगे उतार कर उसी प्रकार वहांतक करो जहांतक भाज्यके सब स्थान पूरे हो चुकें॥

पहिला उदाहरण ॥

अट्ठावन हजार चार सौ उन्नीस को आठ का भाग दो

८)५८४१९(७३०२

५६

२४

२४

१९

१६

३

इनको यथाक्रम नीचे लिखा

इस उदाहरणमें अट्ठावन हजार चारसौ उन्नीस भाज्य और आठ भाजक हैं। भाजक में एक स्थान है इसलिये भाज्य में एक स्थान से लेकर देखा तो ५ में से ८ नहीं घट सक्ता इस कारण ८ को जोकि ५ के दाहिनी ओर है मिलाया तो ५८ हुये; ५८ में आठ सातबार घट सक्ता है ७ को लब्धि की जगह लिखकर ७ लब्धि को ८ भाजकमें गुणा तो ५६ हुये; ५६ को ५८ भाज्य मेंसे घटाया तो दो रहे शेष दो के दाहनी ओर ४ का अङ्क उतार कर २४ नया भाज्य बनाया इसमें आठ ३ बार घट सक्ता है ३ तो लब्धि के दाहिनी ओर लिखकर भाजक में गुणा तो २४ हुये २४ में से २४ घटाये तो कुछ शेष न रहा फिर एक उतार इसको नया भाज्य समझकर ८ से भाग दिया तो ८ एकमें घट नहीं सक्ता इसलिये लब्धि की जगह शून्य लगाकर ९ को १ के दाहिनी ओर उतारा तो १९ हुये; १९ में ८ दो बार घट सक्ता है तो २ को लब्धि की जगह लिख कर

भाजकमें गुणा तो १६ हुये; १८ मेंसे १६को घटाया तो ३ शेष रहे अब भाज्य के सब स्थान उतर चुके इसलिये १३०२ लब्धिहुये औरतीन ३ शेष रहे ॥

दूसरा उदाहरण ॥

एककरोड़ बयालीसलाख छत्तीसहजार सात सौ पांच को चारसौ पैंसठ का भागदो ॥

४६५) १४२३६७०५ (३०६१६

१३९५

२८६७

२७९०

७७०

४६५

३०५५

२७९०

२६५

इन को यथा क्रम नीचे लिखा तो इस उदाहरण में भाज्य १४२३६७०५ है और भाजक ४६५ हैं भाज्य में से तीन स्थान बाईं ओर से लेकर अर्थात् १४२ को लेकर देखा कि ४६५ कैबार घट सक्ते हैं परन्तु १४२ मेंसे नहीं घटसक्ता इसकारण एक और स्थान मिलाकर अर्थात् १४२३ में ४६५ तीनबार घट सक्ताहै क्योंकि ४६५ का तीन गुना १३९५ होता है इसलिये ३ को लब्धि की जगेह लिखकर भाजक में गुणा तो १३९५ हुये इसको १४२३ भाज्यमेंसे घटाया तो २८ शेषरहे २८के दाईं ओर ६:का अङ्क भाज्य मेंसें उतारकर देखा तो ४६५ घटनहीं सक्ता इसकारण लब्धि के दूसरे स्थान पर शून्य रखकर

भाज्य मेंसे सातके अङ्कको उतारातो २८९१ ऊये। इसमें ४९५ छःबार घटसक्ता है; ६ को लब्धिके तीसरे स्थान पर लिखकर भाजक में गुणकर २७९० को घटाया तो ११ शेष रहे फिर भाज्यमेंसे शून्य को शेषके दाहिनी ओर उतारा तो११० ऊये इसमें ४९५ एक बार घटसक्ता है १ को पहिली लब्धि के दाहिनी ओर रखकर भाजकमें गुणा तो ४९५ ऊये इसको ११० मेंसे घटाया तो ३०५ शेष रहे फिर पांच को उतारा तो ३०५५ ऊये इसमें ४९५ छः बार घट सक्ता है ६ को लब्धि की जगेह रख कर भाजक में गुणन किया तो २७९० ऊये इस को ३०५५ से घटाया तो २६५ शेष रहे अब भाज्यके सब स्थान उतर चुके इसलिये ३०६१६ लब्धि ऊये और२६५ शेष रहे॥

जो भाजकके दाईं ओर शून्य हो तो भाग क्रिया इस रीति से संक्षेप होसक्ती है कि जितने शून्य अङ्क भाजकके दाहिनी ओर हों उनको दूरकरके भाज्य के दाईं ओर से उतनेही स्थान निकाल डालो फिर भाग क्रिया करो और जो अन्त में शेष रहें तो उसके आगे पहिले वह अङ्क जो भाज्य में से निकाला था लिख दो उस के लिखने से जो अङ्क हो उसे अन्त का शेष जानों॥

उदाहरण॥

पांचलाख उनसठहजार तीनसौ पैंतालीस में २६०० का भाग दो संक्षेप क्रियाके अनुसार

भाजक के दोनों शून्य और भाज्य के दो स्थान अर्थात् ४५ निकालकर नीचे लिखो और तब भाग क्रिया का प्रारम्भ करो॥

२६००) ५५९३ (२१५ अवशेष के अङ्क ३ के आगे
५२ वा दाहिनी ओर ४५ के अङ्क
३९ को जिसे भाज्य में से निकाला
२६ था लिखा तो ३४५ हुये इससे
१३३ विदित हुआ कि २६०० का
१३० अङ्क ५५९३४५ में से २१५ बार
३ घटसक्ता है और ३४५ शेषरहे॥

और जो भाज्य और भाजक दोनोंमें शून्य हो तौ भी क्रिया शुद्ध होसक्ती है॥

(१) छः लाख चौहत्तर हजार दोसौ उनंचास को सात का भागदो॥

७)६७४२४९(९६३२१
६३
४४
४२
२२
२१
१४
१४
९
७
२ ९६३२१ उ० हुआ॥

(२) छिहत्तर हज़ार तीन सौ अठारह को सोलह का भाग दो॥

१६)७६३१८ (४७६९

६४

१२३

११२

१११

९६

१५८

१४४

१४ ४७६९ उ० ज़ब्त्रा॥

(३) एक लाख उनतालीस हज़ार पैंतालीस को दोसौ अठहत्तर का भाग दो॥

२७८) १३९०४५ (५००

१३९०

४५ ५०० उ० ज़ब्त्रा॥

(४) तीन लाख पचासी हज़ार को ४०० का भाग दो॥

४००) ३८५००० (९६२

३६

२५

२४

१०

८ ९६२ उ० ज़ब्त्रा॥

२

(५) चालीस लाख तिरानवे हज़ार पांच सौ चार को छः हज़ार पांच का भाग दो ॥

६००५)४०९३५०४ (६८१
३६०३०
४९०५०
४८०४०
१०१०४
६००५
४०९९ ६८१ उ० हुआ ॥

प्रश्न ॥

(१) चौरासी हज़ार तीन सौ बारह को नो मनुष्यों पर बांट दो ?

९)८४३१२ (९३६८ उत्तर
८१
३३
२७
६१
५४
७२
७२
००

(२) एक मनुष्य सात सौ पचासी रुपैया वर्ष भर में भरता है तो बताओ कितने रुपैये महीने में भरता है ?

१२)७८५ (६५ ५ उत्तर
७२ १२
६५
६०
५

(३) एक बनाजने १७ थान अतलसके ८८४)रुपैये को मोल लिये तो बताओ कि प्रत्येक थान का क्या मोल है ?

१७)८८४ (५२ रुपै उत्तर
८५
३४
३४
००

(४) एक सराफ़ ने १८ तोला सोना ३४२रुपैये का मोल लिया तो सोने का भाव प्रत्येक तोला क्या था ? उत्तर—१९ रु०।

१८)३४२ (१९
१८
१६२
१६२
०००

(५) एक साहूकार के चार लड़कियां और तीन लड़के थे और उसके पास एकलाख चौबीस हजार पच्चीस रुपैया था उसने तेतालीस हजार अठान्नवे रुपैये अपने लिये रक्खे अब शिष्ट को अपने लड़के लड़कियों में समान बांटदिया तो बताओ कि प्रत्येक को कितना रुपैया दिया ?

१२४०२५
४३०९८
---
७)८०९२७ (११५९१ रु० उत्तर
७

१०
७

३९
३५

४२
४२

७
७

०

यहां १२४०२५ में से ४३०९८ रुपैया जो उसने अपने लिये रक्खा था घटा कर शेषको ४ लड़की और तीन लड़कों अर्थात् ७ को वह देदिया तो प्रत्येक को ११५९१ रुपैया मिला यही उत्तर है ॥

१२ पाईका——एक आना ॥	दमड़ीके तीनदाम	दो पैसेका १ टका
१६ आने का——एक रुपैया	छ दाम की छदाम	पैसे के २५ दाम
१६ रुपैकी———एक अशर्फी	धेले की १२॥ दाम	
	पौन पैसेके १८ दाम	

८ रत्तीका १ माशा ३ अंगुलीकीएकगिरह
१२ माशा ..... १ तोला ८ गिरह ..... १ हाथ
५ तोला ..... १ छटांक २ हाथ ..... १ गज़
१६ छटांक..... १ सेर १६ गिरह ..... १ गज़
४० सेर ..... १ मन

रूपान्तर ॥

जंत्र जाति की संख्याको उसकी जातिके छोटे अंशकी संख्यामें लाने को वा उसकी समष्टी को रूपान्तर कहते हैं ॥

जो बड़े अंश के अंकको उसी जाति के छोटे अंश के अंश में लाना हो तो बड़े अंश वाला छोटे अंश वाले से जितने स्थान बड़ा हो उसको उतने में गुणो और उससे उलटा जो छोटेसे बड़े अंशमें लाना हो तो जितने स्थान में बड़ा छोटे से बड़ा है उतने पर उसे भाग दो ॥

जैसे ३७९ रुपैयोंके आने बनाने हैं अर्थात् बड़े अंशसे छोटे अंशमें लाना है तो रुपैया जितने स्थान आना से बड़ा है उसमें ३७९ को गुणो गुणन फल उत्तर होगा। और पहिले बता चुके हैं कि सोलह आने का रुपैया होता है इसलिये १६ में

गुणा तो ३७९
१६
२२७४
३७९
६०६४ आने हुये।

और जो ३७९ आने होते और उनके रुपै बनाने होते तो ३७९ को १६ में गुणन के बदले १६ का भाग इस कारण देते कि यहां छोटे अंश से बड़े अंश के नाम में लाते हैं अर्थात आना से रुपैया बनाते हैं॥

(१) ६२४ रुपैये के आने बनाओ—

६२४
१६
३७४४
६२४
उत्तर ९९८४ आने हुये

(२) १२३९१ पाइयोंके रुपैये बनाओ—

१२) १२३९१ (१०३२
१२
३९
३६
३१
२४
७

यहां १२३९१को १२से भाग दिया तो १०३२ आने ऊये और सात पाई शेष रहीं अब १०३२ आनोंके रुपै, सोलह से भाग देकर, बनायें ॥

१६) १०३२ (६४
९६
७२
६४
८

इसलिये उत्तर ६४ रुपै ८ आने ७ पाई ऊईं

(३) ६८तोलाके माशे बनाओ—

६८
१२
१३६
६८
८१६ माशा ऊयेउ०

(४) २७५९० रत्तीके तोला बनाओ—

८) २७५९० (३४४५

२४

३५

३२

३९

३२

४०

४०

००

पहिले ८ का भाग देनेसे ३४४५ माशा किये फिर १२का भाग दिया तो २८७ तोला १माशा उत्तर ज़ुआ १२)३४४५(२८७

२४

१०४

९९

८५

८४

१ माशा

(५) ९७२ मनकी छटांक बनाओ—

पहिले ४०में गुणा तो सेर ज़ुये फिर सेरोंको १९ मेंगुणा तो छटांक ज़ुईं॥ ९७२

४०

२९८८०

१९

१९१२८०

२९८८०

४३००८० छ० उ०

(६) २३०७१५ छटांक के मन बनाओ—

१६)२३०७१५(१४४१९ ४०)१४४१९(३६० मन

१६ १२०

७० २४१

६४ २४०

६७ १९सेर शेष रहे

६४

३१

१६

१५५

१४४

११ छटांक शेष रहीं ॥

इसलिये३६०मन १९ सेर ११ छटांक उत्तरजुये

(७) १०३२२ गिरहों के गज़ बनाओ—

१६)१०३२२ (६४५

९६

७२

६४

८२

८०

२

६४५ गज़ २ गिरह उत्तर हुआ

(८) १२४ गज के अंगुल बनाओ—१२४

१६

७४४

१२४

१९८४ गिरह

३

उत्तर ५९५२ अंगुल

गुरु।

एक रुपैये के जितने सेर वा जितने गज आते हों एक आनेकी उतनीही छटांक वा गिरह आवेंगी जैसे १ रुपैये का ३ सेर घी आता है तो आने का तीन छटांक घी आवेगा वा एक रुपैये की पांच गज टल आतीहै तो एक आने की पांच गिरह आवेगी॥

गुरु।

आने की जै छटांक वा गिरह, रुपैये की उतने ही सेर वा गज आवेगी जैसे एक आने के दश छटांक चांवल आते हैं तो रुपैये के दस सेर आवेंगे वा एक आने का ३ गिरह डोरिया आताहै तो रुपैये का तीन गज आवेगा॥

गुरु।

जै आनेकी छटांक वा गिरह उतनेही रुपैये की सेर वा गिरह आवेगी जैसे दो आने की एक

छटांक सियाही आती है तो दोरुपैये की सेरभर आवेगी एक गिरह कमखाब तीन आने की आती है तोतीन रुपैये की गज भर आवेगी ॥

गुरु ।

जै रुपैये की मन उतनेही आने की ढाई सेर जैसे २५ रुपैये मन पिस्ता बिकता है तो २५ आने का ढाई सेर आवेगा ॥

प्रश्न ॥

(१) एक रुपैये की नौ सेर शक्कर बिकती है तो ५२॥ का क्या मोल हुआ ?

गुरु के लिखे अनुसार एक आनेकी नौ छटांक आवेगी तो चार आने की ३६ छटांक वा ५२। सेर बाकी ५॥ सेर अर्थात् आठ छटांक बचे तो जो नौ छटांक होती तो एक आनेकी होती एक छटांक का मोल १। पाई गया तो १०॥ पाई रहीं इस लिये ५२॥ सेर चार आने १०॥ पाईकी आवेगी ॥

(२) एक रुपैये का ८॥ गज कपड़ा आता है तो २॥ आनेका कितना आवेगा ?

एक आने का ८॥ गिरह तो दो आनेका १७ गिरह और आध आनेका ४। गिरह—१७ गिरह और ४। गिरह को जोड़ा तो २१। गिरह अर्थात् १ गज ५। गिरह आवेगा ॥

(३) नौ रुपैये आठआने सेर इलायची बिकती है तो ३॥ छटांक के दाम क्या हुये ?

एक छटांक के ९॥ आने ऊये तो तीन छटांक के दाम २८॥ आने ऊये—आधी छटांक के दाम ४॥॥ आने ऊये तो २८॥ आना और ४॥॥ आना को जोड़ा तो ३३। आने ऊये अर्थात् दो रुपैया सवा आना; यही उत्तर है॥

(४) दो रुपैये आठ आनेकी एक गज़ दरियाई आती है तो चार गज़ तेरह गिरह के क्या दाम ऊये?

चार ढावां दश रुपैये तो चार गज़के दाम ऊये और बारह गिरह का पौन गज दो पौना डेढ़ रुपैया और आठ पौना छः आना अर्थात् एक रुपैया चौदह आना बारह गिरह के दाम ऊये तो एक गिरह के दाम २॥ आना ऊये तो १० रुपैये और एक रुपैया चौदह आना और ढाई आना को जोड़ा तो१२ रुपैये आध आना ऊआ यही उत्तर हमारे प्रश्न का है॥

ज्योतिषके अनुसार किसी गर्भवतीके पुत्र होगा अथवा कन्या इसके जानने की रीति॥

प्रथम ५५ लिखो फिर गर्भवतीका नाम पूछो उसके नामके जितने अक्षर हों उस संख्या को और प्रश्न करनेके समय उसे गर्भवती ऊये जितने महीने ऊये हों वह अङ्क ५५ में जोड़ो और फिर उसको ७ का भाग दो जो, १—३—५—बच जावें तो जानों कि पुत्र होगा—और जो २—४—६ बच

जावें तो जानों कि कन्या होगी और जो शून्य रहे अर्थात् कुछ न बचे तो जानों कि इसका गर्भ नष्ट होजायगा॥

प्रश्न—बताओ कि यमुनावती को आज गर्भवती हुये चार महीने हुये हैं तो उसके पुत्र होगा कि कन्या?

क्रिया

पहिले लिखा ५५
यमनावतीके अक्षर५
और गर्भवतीहुये४
९४

इसको जोड़ कर ९४ हुये इनको ७ से भाग करो तो

७)९४(९
९३
१

भाग करनेसे एक बचा तो जानों कि पुत्र होगा॥

दूसरी बिधि

गर्भवती को किसी फलका नाम लेनेको कहो जिस फलका नाम लेवे उस फलके अक्षरों की संख्या और जिस नगर में गर्भवती रहती हो उस नगरके नाम के अक्षरोंकी संख्याको और गर्भवतीके नामके अक्षरोंकी संख्याको जोड़ लो फिर उसको तीनसे भाग दो—जो एकबचे तो पुत्रहोगा और जो दो बचें तो कन्या होगी॥

प्रश्न—बताओ कि मथुरा नगर बासी गंगा ना-

मी स्त्रीके जिसने बेरका नाम लिया तो पुत्र होगा अथवा कन्या ?

अब देखो कि मथुरा में तीन अक्षर हैं और गंगामें दो और बेर में दो तो इन सबको जोड़ा तो सात हुये—इसको तीन से भाग किया तो एक बचा इस लिये जानों कि पुत्र होगा ॥ परन्तु स्मरण रहे कि जो नामके लिखने में अथवा अङ्कों के जोड़ने में कुछ भूल रह जावे तो प्रश्न का उत्तर यथार्थ नहीं होगा ॥

मथुरा	३
गंगा	२
बेर	२
	३)७(२
	६
	१

समाप्तम्



